गुरु शोभा

Equestrian portrait, of Guru Gobind Singh, 18th century
Kangra School-Guler Pati
Courtesy : Dr. M. S. Randhawa, I.C.S.

सम्पादक

डा० जयभगवान गोयल

पंजाब यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन ब्यूरो, चंडीगढ़

(सेनापतिकृत)

गुरु शोभा

गुरु गोबिंदसिंह के जीवन पर आधारित प्रबन्ध-काव्य

सम्पादक

डा० जयभगवान गोयल

रीडर, हिन्दी विभाग

पंजाब यूनिवर्सिटी स्नातकोत्तर प्रादेशिक केन्द्र, रोहतक।

पंजाब यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन ब्यूरो, चंडीगढ़

डा० हरिभजनसिंह का कथन है कि इससे कवि जहां अनावश्यक विस्तार का निराकरण करके अपने चरित्र नायक का यशोगान करने में सफ़ल रहा है, वहां इस से यह दुष्परिणाम भी निकला है कि उनके युद्धों का औचित्य स्थापित नहीं हो पाता। इन कारणों के अभाव में ऐसा प्रतीत होने लगता है कि गुरु जी लूट मार करने अथवा पहाड़ी राजाओं को आतंकित करने और भयभीत करने के लिये ये युद्ध लड़ रहे थे। क्योंकि स्वयं कवि ने एक स्थान पर कहा है कि पहाड़ी राजा उनके आतंक से भयभीत होकर अपने त्राण के लिए मुगलों से सहायता मांगते हैं। इस प्रकार गुरु जी के युद्ध अनावश्यक, अनीतिपूर्ण और अनुचित प्रतीत होने लगते हैं।"

इस सम्बन्ध में हम इतना ही कहना चाहते हैं कि सेनापति ने पूर्ण रूप से 'विचित्र नाटक' का अनुकरण किया है। उस में भी युद्धों के कारण नहीं दिये गये। उन समसामयिक युद्धों के लिये जिनका वर्णन इस ग्रंथ में हुआ है, कारण देने की सम्भवतः इस लिये भी आवश्यकता नहीं समझी गई, क्योंकि वे कारण सभी को ज्ञात थे। कवि ने उन्हीं प्रसंगों का वर्णन किया है जिनसे गुरु जी की शक्ति एवं साहस का प्रदर्शन हो सके। लक्ष्य व्यंजना से ही अभिप्रेत है। युग-परिस्थितियों के परिप्रेक्ष में जब इस ग्रंथ का अध्ययन किया जाता है, तो कवि की राष्ट्रीय-भावना तथा युग-चेतना का सही रूप सामने आता है। भूषण ने भी शिवाजी के युद्धों की पृष्ठभूमि का कहीं उल्लेख नहीं किया। केवल उनकी वीरता एवं शौर्य के आतंक एवं शत्रुओं के भय और त्रास का वर्णन किया है। सेनापति ने भी इसी पद्धति का अनुकरण किया है। इस लिये उसे भूषण के समकक्ष रखा जा सकता है। सेनापति ने इस ओर संकेत अवश्य किया है कि ये युद्ध धर्मानुरागी वीरों द्वारा लड़े गये हैं। इस ग्रंथ की राष्ट्रीय-भावना को व्यक्त करने के लिये यह संकेत पर्याप्त है।

युद्ध वर्णन :

जहां तक युद्ध वर्णन का सम्बन्ध है, युद्ध के सजीव और ओजपूर्ण चित्र अंकित करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है। सेना-प्रस्थान, युद्ध-भूमि एवं

भूमिका

'गुरु-शोभा' गुरु गोबिन्दसिंह के जीवन पर आधारित प्रथम पद्य बद्ध प्रबन्ध है जिसकी रचना दशम गुरु के अनन्य भक्त, उनके दरबारी कवि सेनापति ने खालसा पंथ की स्थापना के पश्चात् संवत् १९५८ वि० में की।[1] इसमें कवि ने अत्यन्त श्रद्धा एवं निष्ठा भाव से उनके शौर्य और साहस का वर्णन किया है। यह वीर रस प्रधान रचना है, क्योंकि इस में गुरु गोबिन्दसिंह की युद्ध-कथाओं का वर्णन ही अधिक विस्तार से किया गया हैं। इसके ३० अध्यायों में से ९ युद्ध-कथा से सम्बन्धित हैं, अन्यत्र भी युद्ध का वर्णन हुआ है। इस ग्रंथ में कवि का उद्देश्य इन युद्ध-कथाओं के वर्णन द्वारा दशम गुरु के युद्धानुराग एवं शौर्य का यशोगान करना ही है। घटनाएं अधिकतर इतिहासनाकूल हैं। यद्यपि कवि ने चरित्र-नायक के अवतारत्व को स्वीकार किया है, तथापि उसमें ऐसी चमत्कारपूर्ण और अलौकिक घटनाओं का समावेश नहीं किया गया, जैसा कि परवर्ती प्रबन्धकारों ने किया है। इस रचना में खालसा रचने का विवरण एवं खालसा के गुण, केश, कृपाण आदि रहित-मर्यादा का भी वर्णन है।

सेनापति को युद्ध वर्णन की प्रेरणा 'विचित्र-नाटक' से ही मिली है, किन्तु 'विचित्र-नाटक' में जहां गुरु गोबिन्दसिंह के खालसा की स्थापना के पूर्व के युद्धों का वर्णन हुआ है, वहां इस ग्रंथ में खालसा पंथ की स्थापना के बाद के युद्धों का भी चित्रण किया गया है। सेनापति ने यद्यपि 'दशम ग्रंथ' में गुरु जी के पहाड़ी राजाओं एवं मुगलों से किये गये यूद्धों का सजीव चित्रण किया है, तथापि इनमें विशदता और सर्वांगीणता नहीं है। युद्ध-कथा के वे ही प्रसंग उभारे गये हैं जिनसे गुरु जी के साहस, शौर्य और शक्ति को प्रकट किया जा सके।

---

(१) संवत सत्रह से भये बरख अठावन बीत।६।

वीरों के साहस और उत्साह के भी यथार्थ एवं वेगपूर्ण चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। जिस समय गुरु गोबिन्दसिंह युद्ध के लिये प्रस्थान करते हैं तो उनके आतंक से सभी नगर नगरियां कांप उठीं, लोक प्रलोक भयभीत हो गये, शेष, महेश, सुरेश सभी लरज़ उठे।[1] आनन्दपुर के घोर संग्राम का भी कवि ने सजीव वर्णन किया है। दोनों दलों की भिडन्त का एक उदाहरण देखिए :

दोहरा—लड़े मोरचे तुरक के ऊपरि चढी कमान।
इत सनमुख भयै खालसा होत वीर संग्राम।

सवैया—सेत मनों बरखै घन तैं, तहां गोला चलै समरा सु असाही।
तोप छूटे गरजे घन, ज्यों लरजै हियरा मानों बिज्ज कड्डकै।
ठऊर रहे जिह के डर लागत, होत है छाती के पाट पडक्के।
या विधि सों ताहि गोला चलै टिक है नहीं सूरा ताहि के धक्के।
राजन के अवसान गए तब आनन्द कोट ते तोप छुडक्के।

'विचित्र नाटक' की भांति सेनापति ने भी योद्धाओं की भिडन्त, शस्त्र-अस्त्र प्रहार तथा उनके शौर्य का ही वर्णन अधिक किया है परन्तु 'दशमग्रंथ' में युद्ध-भूमि का जैसा विकराल, भयावह एवं वीमत्स रूप प्रस्तुत किया गया है, वैसा इस ग्रंथ में नहीं है। युद्ध की भीषणता और प्रचण्डता का वर्णन कहीं कहीं अवश्य हुआ है। युद्ध-भूमि में एकत्रित योद्धाओं की भिडन्त एवं क्षत–विक्षत होकर गिरने आदि का एक उदाहरण देखिये :

दौर दौर जोधा लरत मानहू लरत गयन्द।
चलत चलत धरनी हलत बजत सार किलकन्त। पृ० ५०

दौर दौर फौजन में परही। सिंह सबै ऐसी विधि करही।
बजै सार सो सार अपारा। झड झडाक बाजै झुनकारा।
पडपडाक धरती पर परही। जूझे सूर बहुत तह मरही।

---

१. डंकन घोर सु घोर भई, सुनिक पुरीआं सब ही लरजी।
लरजे सब भान भिआन भए किह कारन काज चढ़यो हरि जी।
लोक अलोक सभै लरजे, शिव जी कैलाश पति भै डरजी।
सुन शेस महेश सुरेश बड़े लरजे सिंह गोबिन्द के डर जी।

इक घायल ह्वै गिरे विहाला। एक्न प्रान आप तजै ततकाला।
इक भाजै फिरि निकट न आवै। इक सनमुख ह्वै जुद्ध मचावै।
लरे सिंह इह भांति अपारे। चढी खुमार भये मतवारे। पृ० ६३

युद्ध-भूमि :

रुधिर में भीगे शूरवीरों एवं लोथों से भरी हुई रक्त-रंजित युद्ध-भूमि का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है :

लग्यों वार ऐसे बह्यो स्रोत भारी।
भयो लाल बाण भिजो देह सारी।
चलत रक्त दरिआउ गिरत बूझत सूर तह,
दिवस रैनि होइ गइ पौन हुई रही मंद जह।
गिरी लोथ पै लोथ ऐसे पुकारे।
कहु ताक ते तोरिकै फूल डाके। (पृ० ९८)
गिरी है लोथ दबी भौ परी ताहि का वस्त्र
सूके धरे सर किनारे।
स्रोण के रंग में लाल हुई भुई परे मनो रंगरेज रंग रंग डारे।

ऐसे स्थलों पर कवि ने सादृश्य मुलक अलंकारों का सहारा लेकर युद्ध-भूमि के दृश्य को यथार्थता और चित्रात्मकता प्रदान कर दी है। कहीं कहीं तो युद्ध को वर्षा, फाग, रास अथवा मल्ल युद्ध के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। वर्षा के रूप में युद्ध का चित्रण देखिये किस प्रकार किया गया है :

स्याम घटा उमडै चहू ओर तो यो उमडै दलदल कै आही।
दामन जो दमकै तरवार लिये करवार फिरावत ताही।
सूर का सुआबी तो धार परै घन मै मानों तास कमान की निआई।
छटत तीर मनो रन मधि जू सावन की बरखा बरखाही।

यहां वर्षा की साज सज्जा में युद्ध के सभी उपकरण विद्यमान हैं। इस रूपक के द्वारा युद्ध का एक साकार चित्र नेत्रों के सामने आ जाता है।

वीरों का व्यक्तित्व—

सेनापति ने गुरु गोबिन्दसिंह तथा उनके सैनिकों के वैयक्तिक शौर्य और साहस का भी प्रदर्शन किया है। अजीतसिंह के पराक्रम की प्रशंसा इस प्रकार की गई है :

ता दिन गडडू रण खम्भ सिंह रणजीत धरत पर।
धरत लरज उठी धूर भान छिप गयो अपि घर।
पवन मंद हुई रही रैनि भई दिवस छिपानों।
लरजै सकल अकास तोप छूटी परमानों।
बज्यों निसान तिहु लोक मैं सुनि देवन मन भौ भयो।
चढि चढि बिवान देखत चले सु संकर समेति नाहि को दियो।

कवि ने केवल गुरु पक्ष के शूरवीरों की ही प्रशंसा नहीं की वरन् शत्रुपक्ष के वीरों को भी सूर सूरमा, जोद्धा, वीर आदि विभूषणों से विभूषित किया है और उनके शौर्य और साहस की प्रशंसा की है। परन्तु ऐसा कवि ने अपने नायक की उत्कृष्टता सिद्ध करने के लिये ही किया है। क्योंकि समान बल वाले शत्रु पर विजय प्राप्त करना ही गौरव की बात है, निर्बल शत्रु को मारना कोई वीरता नहीं होती। बीच बीच में कवि ने खालसा की प्रबलता और उत्कृष्टता का संकेत कर भी दिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सेनापति ने युद्धों का बहुत ही सजीव और ओजस्वी वर्णन किया है और उसमें वीर रस के सभी उपकरण विद्यमान हैं। युद्ध वर्णन में भीषणता और वेग लाने के लिये उसने टकारात्मक व्यंजनों, संयुक्ताक्षरों तथा ध्वनि-शब्दों का भी प्रयोग किया है। छन्द भी युद्ध गति के अनुकूल प्रयुक्त किये हैं।

जब हम इस रचना की वीर भावना पर विचार करते हैं तो पता चलता है कि इसमें रीतिकालीन पद्धति पर धन-प्राप्ति के लिये झूठी चाटुकारिता से प्रेरित होकर आश्रयदाता की वीरता की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा नहीं की गई। वरन् इस ग्रंथ की रचना धर्म-भावना एवं भक्ति-भावना से प्रेरित होकर की गई है। इसमें जिस वीर नायक का यशोगान किया गया है वह भारतीय राष्ट्रीय जागरण एवं सांस्कृतिक-चेतना का अग्रदूत है, परिणामतः उसकी वीरता का यशोगान करने वाले कवि को राष्ट्र-कवि की उपाधि से विभूषित किया जा सकता है। इस रचना में हिन्दुओं के प्रबल विरोध एवं विद्रोहात्मक आन्दोलन को व्यक्त किया गया है। इस में चरित्र-नायक का जो उज्ज्वल व्यक्तित्व उभरता है, वह युग-चेतना को जागृत करने वाले राष्ट्र-नायक एवं धर्म योद्धा का रूप है अतः यह रचना राष्ट्रीय-भावना से ओतप्रोत है। बीच बीच में सिक्ख-मत की आध्यात्मिकता उनकी रहित मर्यादा, नैतिक आदर्शों, गुरु महिमा, संत-संगति के महत्व एवं भक्ति-भावना का भी प्रकाशन हुआ है और गुरु जी को अकाल पुरुष का रूप बताया गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी इस ग्रंथ का अत्यधिक महत्व है।

रोहतक
१ जनवरी, १९६७

जयभगवान गोयल

गुरु शोभा

१ ओंकार स्री वाहिगुरू जी की फते है ।।

श्री गुर सोभा ग्रंथ लिखियते ।

प्रिथम धिआउ पंथ प्रगास ब्रननं ।।

खालसा बाच ।।

दोहरा—एक समै हित सौ हितू उचरी हित चित लाइ ।
प्रभ रचना ऐसे रची सो कहु कहो सुनाइ ।१।

सवैया—सुनके उपजी तब ही मनमै बरनौ उपमा प्रभ की कहीए ।
मति थोरी सी थोरी हूतै छिन एक सु तेरी दिआल दया चहीए ।
कहिबो बिनती करि जोरि दोऊ हरि कीजै सोऊ जु परै सहीए ।
तुमरी उपमा तुमही बरना कर आपन ते कर मो गहीए ।२।

दोहरा—मति थोरी उपमा घनी किह बिधि बरनी जाइ ।
बिनउ करै करि जोरि कबि सतिगुर होहु सहाइ ।३।

दोहरा—नमसकार करि जोरि कै करित जीव अरदासि ।
रचो ग्रंथ तुमरी कथा करहु बुध प्रगास ।४।
गुरसोभा या ग्रंथ को धरो सु नाव बिचार ।
सुनत कहत गति होत है मन अंतरि उरधारि ।५।
संमत सत्रह सै भए बरख अठावन बीत ।
भादव सुद पंद्रस भई रची कथा करि प्रीति ।६।
सतिगुर की उपमा कहो दिवस रैनि बीचारि ।
दीजै सुधि बुधि बर, करनहार करतार ।७।

चौपई—त्व प्रसादि गुरू उपदेसे । जनम जनम के मिटे अंदेसे ।
तब इह कीट पतित मनि आयो । भई क्रिपा गुर मारगि पायो ।८।

तब मन मीत मोहि इम भाखी । प्रगटि कहौ सतिगुर की साखी ।
जो प्रभ गुर को बचन सुनाए । कहौ कथा सुनो चित लाए ।६।
निरमल पंथ जोति उजिग्रारी । दीरघ प्रबल सबल ग्रति भारी ।
जब गुर कछु इक बुधि प्रगासी । दया करी पूरन ग्रबिनासी ।१०।
सतिगुर सोभा इह ते कहौ । तिह प्रताप प्रभ पद लहौ ।
पूरन पुंन परे तिह सरना । ग्रमर भए फिर जनम न मरना ।११।
ग्रब सतिगुर के नाम बखानो । परम पुरख तिह ते पहिचानो ।
प्रथमे सतिगुर नानक भए । ग्रंगद ग्रमरदास प्रगटए ।१२।
तिह ते रामदास गुरू जानो । ग्ररजन हरिगोबिंद पछानो ।
तिह ते गुरू भए हरिराइ । फेरि गुरू हरिक्रिसन कहाइ ।१३।
प्रगट भए गुर तेग बहादर । सगल स्रिसटि पै ढापी चादर ।
करम धरम की जिनि पति राखी । ग्रटल करी कलजुग मै साखी ।१४।
सगल स्रिसटि जाका जस भयो । जिह ते सरब धरम बंचयो ।
तीन लोक मै जै जै भई । सतिगुरि पैज राखि इम लई ।१५।
तिलक जनेऊ ग्ररि धरमसाला । ग्रटल करी गुर भए दिग्राला ।
धरम हेति प्रभ पुरहि सिधाए । गुरू गोबिंदसिह कहिलाए ।१६।

सवैया—गुरु तेग बहादर ते गुरु गोविंदसिंह भयो तारण तरणं ।
त्रई लोक बिखै जैकार भयो प्रगटिग्रो गुरू ग्रादि क्रिग्रा करणं ।
दुसट बिडारण संत उबारण सब जग तारण भव हरणं ।
जै जै जै देव करै सभ ही तिह ग्रान परे गुर की सरणं ।१७।

चौपई—तिह बखसीस करी करतारं । प्रभू बाक इम कहो बिचारं ।
तुम मेरा इक पंथ चलावो । सुमत देह लोगन समझावो ।१८।
जो प्रानी जम मग ते डरै । सुन उपदेस सरनि तुहि परै ।
जो प्रभ पंथ रचै रच प्रीतं । हों तिह संगि मोहि इह रीतं ।१६।
भगति हेत जे जे हम रचे । लै लै सिधि जगत मै मचे ।
ग्रपनी ग्रपनी पूज लगाने । ग्रपने ग्रापि ग्रापि उरझाने ।२०।
हम सो इह बिधि करै करारी । निस दिन उसतति करहि तिहारी ।
बचन बिसार रहे बिख माही । तिनको मोख मुकति इम नाही ।२१।

भुजंगप्रयात—बनायं बिनासं उपायं खपायं । करनहार करतार जोनी भुलायं ।
कई जंत जोधा बड़े आपि कीने । तिनै सिसटि मैं आन सरबंस दीने ।२२।
उदे असति लउ राज राजा कहाए । लगे धिआन अउरे सु आपे कहाए ।
बडे राछसं जोर जोधा बलीअं । चलीअं हलीअं धरीअं सुईअं ।२३।
नही एक जाने बडे अबकारी । तिअं मारिबे काज चंडी सुधारी ।
कीए छार संसार मै सोभ होई । कहै ताहि ऐही सु दूजा न कोई ।२४।
कीए भूप भारी बड़े छत्रधारी । सुई भरम भूले कीए जुध भारी ।
तयं मारबे काज बिसनं हकारे । धरे आन संसार अउतार सारे ।२५।
तिनै मारि के छार कै कै रिसाए । भई सोभ जग मै सु आपं कहाए ।
महा ब्रहम रूपं सु ब्रहमै कहायो । ब्रहम भेद रचं एक तिनहूं न पायो ।२६।
महादेव देवंत देवा कहायो । गयो भूल सोऊ सु लिंगं पुजायो ।
किते राज रिखं भए छत्रधारी । कीए ताहि सिम्रति भई पूज सारी ।२७।

रसावलछंद—जिते सरब भेखं । तिते सरब पखं ।
न पायो अलेखं । यहै बात देखं ।२८।
जिते मै पठाए । सु आपी कहाए ।
कही बात साचे । सु ऐसी न माचे ।२९।
तुझै जो बनाइआ । सु ऐही उपाइआ ।
करउ पंथ मेरा । धरम काज केरा ।३०।
यहै के पठायो । तबै स्रिसटि आयो ।
भए केस धारी । धरी फेरि सारी ।३१।
ढुले प्रेम पासा । अजाइब तमासा ।
कीए बाक भारे । भए जुध सारे ।३२।
भिरे सिंह सूरे । कीए काज पूरे ।
अचल नीव डारी । टरैगी न टारी ।३३।
यहै बात जानो । रिदै साच आनो ।
कीओ पंथ ऐसा । कहियो आप तैसा ।३४।
छपै न छपाइआ । घटै न घटाइया ।
दिनो दिन सबाइआ । सुडंका बजाइआ ।३५।

सुनै घोर ताकी । मिलै ताहि झाकी ।
सरंण ताहि आवै । सोई सुख पावै ।३६।

भुजंगप्रयात——कई भरम भूले भरम मै भुलाने । कई सरन आए कीए ताहि गियाने ।
कितै जीव आई कहा चाल कीनी । दइआ धार करतार यह बुधि दीनी ।३७।
दोऊ हाथ जोरे स्रनि ताहि पाई । कीउ नाम खालस खलासी बताई ।
स्रब सुख पाए दीए राजराजं । सुनो बेनती राज राजाधिराजं ।३८।
सिदक मोर साबूत मजबूत कीजो । करनहार करतार यही दान दीजो ।
करो द्रिसटि ऐसी सु तोयं निहारो । कथो बाक बानी सु ततं बिचारो ।३९।
सदा एक जोतं तिसै साच जानो । रहउ ताहि स्रनी न दूजै भ्रमानो ।
कहों सोभ तरी यहै टेव कीजै । जि मोपै कहावै तुमो दान दीजै ।४०।
कहउ दिवस रैना कहो सरब मासे । कहो जागते सोवते सासि ग्रासे ।
सु आदं जुगादं जगे जोत जाकी । अबै अंत लउ होइगी अंत ताकी ।४१।
इत स्री गुर सोभा पंथ प्रगास वचन उसतति प्रिथम धिआऊ ।। सपूरनमसत सुभमसतु ।१।

दोहरा——जो चलित्र प्रभ पुरख के ताको करत बिचार ।
जथा सकति उपमा कहत मन अंतरि उरिधारि ।१।४२।
आदि अंत तिह पुरख की नवतन कथा अपार ।
वरनि बरनि कथि कथि रहत कोऊ न पावत पार ।२।४३।

चौपई——अगम पुरख की अगम कहानी । गुर क्रिपा ते कछूक जानी ।
तिह प्रताप कथा तिह कहौ । सतिगुर परम पदारथ लहौ ।३।४४।
सति सरूप रूप गुर भारी । बरन चिहन उपमा उजिआरी ।
ता सम अवर कवन कब धरै । तुमरी सोभा तुमै प्रभ सरै ।४।४५।

कवित्त——तुही गुरू नानक है तुही गुरू अंगद है,
तुही गुरू अमरदास रामदास तुही है ।
तुही गुरू अरजन है तुही गुरू हरिगोविंद,
तुही गुरू हरिराइ हरि क्रिसन तुही है ।

नावीं पातिसाही तै कलि ही मै कला

राखी तेग ही बहादर जग चादर सभ तुही है ।

दसवां पातसाहि तुही गुरू गोविंदसिंह,

जगत के उधारिबे को आयो प्रभ तुही है ।५।४६।

सवैया——जगो सरब पाइक तुही सरब लाइक भई लोक नाइक तुही होइ आयो ।

करे बैन वाचा इही काज राचा करो पंथ साचा सुतो को सुनायो ।

कीओ सति सते तिही रंग रते दई स्रिसटि मते कुपते खपायो ।

तिही नाम लागे भरम भार भागे प्रभू प्रेम पागे इमै दभे पायो ।६।४७।

दोहरा——माखोवाल सुहावना सतिगुर को असथान ।

लीला अनिक अनेक बिधि कउतक करत बिहान ।७।४८।

चौपई——केतक बरस भांति इह भए । देस पावटे सतिगुर गए ।

जमना तीर महल बनवाए । करत अनंद प्रभू मन भाए ।८।४९।

अनिक भांति लीला तह करी । फते साह सुनिकै मनि धरी ।

बहुत कोप मन माहि बसायो । फउज बनाइ जुध कउ आयो ।९।५०।

दोहरा——बहुत परबल दल जोरि कै सैना संगि अपार ।

निकटि आनि डेरा दीए खबर भई दरबार ।१०।५१।

सवैया——भए असवार संग्राम को आप ही सिंह गोबिंद तिह ठउर आए ।

डंक की घोर जैसे भई ठउर तह बजत निशान मुहरे सुहाए ।

आन कै खेत पै देख चतरंग सब मोरचे बाटिकै मिसल लाए ।

बजी है भेर करनाइ सुरनाइ सब सुने ते सूर होइ लाल आए ।११।५२।

दोहरा——फते साह दल साजकै खरा भयो तिह थान ।

संगि राव राजा घने मन मैं कीओ गुमान ।१२।५३।

केतक दल इह फौज को कीनो साह सुमार ।

एक घरी की मारि मै हुई है सकल सथार ।१३।५४।

फते साह उत दल मंडिओ इतै साह संग्राम ।

पंच बीर जोधा बली जिन जीते संग्राम ।१४।५५।

सवैया—कोप कै सूर दुहूं ओर ते धाइकै आन संगराम मै ससत्र बाहे ।
गिर सुआर इह भांति भवचाल रण मै भयो मार ही मार कै आनि गाहे ।
नचत है भूत बैताल भैरो तहा गिध मंडलात रण मैं सुहाहे ।
आनि कै जोगिनी पत्र पूरन भरिओ अचव कै उदर तिनके अघाहे ।१५।५६।
जैमल कोप चडियो रण मै कर मै बरछी तिरछी गहि लीनी ।
फौज मै धाइ परिओ खुनसाइ कै केतन के उर अंत्र दीनी ।
मारि लीए असवार किते अरि पेल दई चतुरंग नवीनी ।
धूम परी सगरे रण मैं अब एक सवार यहै गति कीनी ।१६।५७।
रण मैं धसि कै इम लोह कीउ न कीओ तिह मोह महा मन को ।
जिम सारंग माहि पतंग परै न डरै करि लोभ कछू तन को ।
रण मैं इम धूम करी अत ही मनो खेलत कानर फागन को ।
इह भांति गुलाबु गुलालि लीए करि जाति जमात के डारन को ।१७।५८।
माहुरी चंद करवार संभारि कै टूम कै असुरण माह दीनो ।
आनि कै सुआर जो वार तापै करै पकरि कै ताहि तिह मारि लीनो ।
भांति इह सूर के तानि मारे तहा आपने जीव को भै न कीनो ।
एक को मारि कै दोइ टुकड़े करै दोइ को रूप चतुरंग चीनो ।१८।५९।
करी इम जंग सुनि गंगरामं वही तेग कर मै लई बेग धायो ।
देत असवार को सीस पै आनि के करत दूई टूकि भुइ माहि पायो ।
मारि चतुरंग चउरंग केती केती करी भूम लोटै परी भै दिखायो ।
धूम ऐसी परी भाज याही घरी काल को रूप इम सूर आयो ।१९।६०।

निराजछन्द—लालचंद आनि कै । कमान बानि तानि कै ।
कीओ सु जुध जानि कै । भली भई भली भई ।२०।६१।
सरूप रूप धारई । अनेक सत्रु टारई ।
करै सु मारि मारई । पुकारई पुकारई ।२१।६२।
क्रिसान खेत काटई । करी सु ताहि बाटई ।
न जीव चटा चाटई । सुथाटई सुथाटई ।२२।६३।
कीओ सु लोह लोहई । न जीव रख धोहई ।
सु चाल सूर सोहई । बिमोहई बिमोहई ।२३।६४।

सवैया—माहरू काहरू कोप कै जीव मै ससत्र लै हाथ मै बेग धाए ।
एक सो एक बलवंत सूरा सहस छिनक मै मारि रन मै गिराए ।
लोथ पै लोथ तह डारि केती दई स्रोन को सुंब यउ उमडि आए ।
परत है नीर गंभीर भारी कहूं मिलत है नीर इक तीर आए ।२४।६५।
मन मै अति धारि कीउ अति सारि समिओ ऐसी बार नहीं कर आवै ।
कोप कै क्रोध सौ काढि कै मिआन ते केतक के सिरि काटि ले आवै ।
भेट कीए प्रभ की तबही अरु कोप कै जुध को फेरि सिधावै ।
ऐसे प्रकाम कीए दयाराम सु द्रउन जो देखियो महा रन पावै ।२५।६६।
लै कुतका कर मे किरपान संभार कै खान हयात के मारियो ।
ऐसी दई सिर मै तिह के मनो तोरिओ पहार गदान सो डारिओ ।
मातो मतंग महा बलवान हनिओ छिन मै रन माहि पछारिओ ।
एक दई सु दई उह के फिरि दूसरी सो इक अउर सिंहारिओ ।२६।६७।
लै बरच्छी कर मैं तबही मनो देख कुरंग को सिंह जो धायो ।
मारि हकार बिदारि दीओ दल पेलत पेलत पेल चलायो ।
टूट कै ससत्र परे सबही कर लै जम धारि कितान को घायो ।
घायल सार सुमार भयो सु नंद ही चंद गोबिंद बचायो ।२७।६८।
खडग संभार ललकार खत्री चडियो जाइ रन मै परिओ अति सुहायो ।
लोथ पै लोथ तिह डारि केती दई छिनक मै अनिक बिधि लोह पायो ।
बान ऐसे बहे घाव तन मै भए सूर तन मै सहे भूमि आयो ।
अनिक रछ्या करी आप ताही धरी काल क्रिपाल ऐसे बचायो ।२८।६९।
साहिब चंद गइंदन जो मन मै कर रोस तबै उठि धायो ।
मार ही मारि कहै मुख ते कर वार संभारि कितो दल पायो ।
जो करवार सुवार संभारि कै जुध को सूर कै सामुहे आयो ।
ताहू को बारि विदार हकारि के आपने वार सौ ताहि गिरायो ।२९।७०।
साह संग्राम ने काम ऐसे कीए भीम ते जानि गुन चारि भारे ।
भले खान खुआनी हने छार कीने घने होइ कै अनमने सो सिधारे ।
गजैसिंह संग्राम मै भांत ताकी कहौ म्रिगन की मार नाहर डकारे ।
तहा कोप कै क्रोध सो आन संग्राम मै निकटि तिह आनके ससत्र धारे ।३०।७१

क्रोध सो कोप कै आन हरीचंद न पकर गुन बान ऐसे प्रहारे ।
भली भांति सौ खेत मै थानि असथिर कियो ससत्रधारी हने भूम डारे ।
ससत्र संभारि कै जीत मलं मने हने हरीचंद इह भांति मारे ।
बीर ताके बने वारि वाहे घने सुरग लोकं तबै ते सधारे ।३१।७२।

रसावल—भिरे बीर बीरं । परो भार भीरं ।
बगे बान तीरं । अधीरं विदारे ।३२।७३।
बजै सार सारं । झड़े चनिगिआरं ।
कडके कमाणं । ना बानं समारे ।३३।७४।
छुटै कोप तोपं । भई सूर सोखं ।
मिलै ताहि मोखं । सु कोखं उजारे ।३४।७५।
सोई काम आयो । तिनै सूर घायो ।
सुरगे सिधायं । कीए लोह भारे ।३५।७६।

दोहरा—जे सूरे दल मै हुते फउजन के सिरदार ।
जे जूझे सूझे सबै बाजियो साह अथार ।३६।७७।

सवैया—भाज कै साह पहाड ताही समै संगि लै बीरीआ बेग धायो ।
भाजिओ डढवालिआ संगि सीपाह लै चलत जो तीर गुन ते चलायो ।
रावचंदे लीआ छोरि संग्राम को हाथि लै ससत्र सैली सिधाओ ।
अडे पठान संग्राम भारी कीउ जीव अपना दीउ नाम पायो ।३७।७८।
कोप निजाबति खान तबै कर मै गहि वारि फिरावत आयो ।
साह खरो संग्राम तहा तिहके उर आन कै वार लगायो ।
साह संभारि हकारि तबै तिन को हनि कै रण मारि गिरायो ।
बीरन वार करे तिनके तब जूझत साह प्रभै पुर धायो ।३८।७९।

दोहरा—संगो का प्रभ ने धरिओ नाव साह संग्राम ।
तिह प्रकाम ऐसो कीओ तब पायो यह नाम ।३९।८०।

सवैया—जूझ कै साह संग्राम सुरगै गयो ससत्र संभारि प्रभ आप धायो ।
गहे गुन बान घमसान को जानकै छुट्टिओ गंभीर इक तिह गिरायो ।
बहुरि संभारि के वार ऐसा कीउ भीषनं खान के मुखं लायो ।
बचिओ पठान पै खेत बाहन रहिओ अउर इक तीर ते ताहि घायो ।४०।८१।

दोहरा—बाननि सो प्रभ जी तबै मारिश्रो भीषन खान ।
अउर वीर जाके हुते रुपे चहू दिस ग्रान ।४१।८२।

निराज छंद—हरीसु चंद ग्रान कै । कमान बान तान कै ।
निहार बान बाहिश्रो । प्रभू के घाइ न ग्राइश्रो ।४२।८३।
सु कानछुहे के गयो । न काम ताह ते भयो ।
दुतीक बान मारिश्रो । संभारि कै निहारिश्रो ।४३।८४।
चिलत माहि लगिश्रो । दिवाल पारि बरिश्रो ।
चुभी सु चिच रंचई । प्रभू पुरख बंदई ।४४।८५।
विचार वार सारई । कमान बान धारई ।
चलाइ तीर मारिश्रो । सुदूत को निहारिश्रो ।४५।८६।
अनेक बीर धावही । अपार बान लावही ।
हरी सु चंद मारिश्रो । समेत साथि टारिश्रो ।४६।८७।
सबै सु अंति भजई । प्रभू निसान बजई ।
अनंद घोर बाजई । प्रभू दुआर छाजई ।४७।८८।

सवैया—जीत संग्राम ग्रानंद मंगल भयो ग्रान गोबिंद गुण सबन गाए ।
धनि हो धनि प्रभ नाम तुमरो लीश्रो दुसट को जीत डंका बजाए ।
जीत अजीत अभीत जोधा बडे तोहि इक दिसट ते सबै धाए ।
भयो जैकार त्रई लोक चउदा भवन जीति कै सिंह गोविंद ग्राए ।४८।८६।
जीत वौ खेत प्रभ ग्रान कै पावटे कूच को साज मंगाइ लीनो ।
भार बरदार तयार कीनो सबै लाद असबाब कै कूच दीनो ।
ग्रानि कहिलूर मै ग्राप ताही समै ग्रनंदपुर बाधि बिसराम कीनो ।
सूर सीगार बेदार काइर दए रीत इह भांति कै कै पतीनो ।४६।६०।

दोहरा—केतक दिन केतक बरस तिहि पुर गए बिहाइ ।
संतन की रछा करी दूतन मारिश्रो घाइ ।५०।६१ ।

इत श्री गुर सोभा तेग प्रगास साह संग्राम जुध ब्रनन्नं धिश्राऊ दूसरा संपूरनमसतु सुभमसतु ।२।

दोहरा—राजन के हित कारने कीओ जुध इम जान ।
कथा जुध नंदवण को बनत ताहि बिआन ।१।९२।
मीआं खां की तरफ ते अलफ खान सिरदार ।
आण नादवण मै रहिओ कीनी धूम अपार ।२।९३।
भीमचंद कहलूरीआ हुतो राव इक जान ।
तह सो तिह की नहि बनी रचिओ जुध घमसान ।३।९४।
देस देस के राव सब लीने तिनह हकार ।
सतिगुर को कीना लिखा दया करो करतार ।४।९५।

सवैया—फउज सीगार कै आप ताही समै जुध के काज तिह ठउर धाए ।
एक सो एक बलवंत सूरा सहस भिरे तिह ठउर डंका बजाए ।
भयो संग्राम पर काम जोधान के भिरे इह भांति दल अनिक धाए ।
तुपक संभार कै आपि ताही समै सूर के तानि तिह ठउर धाए ।५।९६।

दोहरा—दूतन के दल अति विकट निकटि पहूचे आन ।
तब तुफंग कर ते तजी गहि लीने गुनबान ।६।९७।

सवैया—धनक संभार ललकार ताही समे काल के रूप बाणं परहारे ।
अनक जोधा हने अनक होइ अनमने अनिक तजि खेत खेतं सिधारे ।
अनिक लोटै परै अनिक भाजै घरै अनक डर बसत्र अर ससत्र डारे ।
हुती इक बार उजार कद की परी भाजि कै खान तामै पधारे ।७।९८।
ससत्र संभार ललकार धन जो करी मार ही मार कै सूर धाए ।
भजिओ जो खान इकबार ही ओटि लै बैठि तिह ठउर फिर जुध पाए ।
बान गोली चली रैनि आधी भली भाजि कै खान ताते सिधाए ।
अलफ खानान अरमान राखिओ नहीं आपने जोर के तान लाए ।८।९९।

दोहरा—जुध जीत ताही समै नव रस के तटि आन ।
पाच दोइ अरु एक दिन रहे तहा इम जान ।९।१००।
पउर पउर देखी ठउर राजन के असथान ।
बिदा भए ताही समै सतिगुर पुरख सुजान ।१०।१०१।
निकटि गाव अलसून के तबै पहूचे आन ।
ताहि समे ऐसे कहिओ लूटि लेहु इह धाम ।११।१०२।

सवैया—आन अलसून पै सूर ऐसे रुपै पकरि कै ससत्र ऐसे चलाए ।
परे जो जाइ संग्राम ऐसे कीओ छिनक मै अनक केतानि धाए ।
मारि केते लीए अउर भाजे सबै छोडि धन धाम ऐसे सिधाए ।
चलत है बान गुनजानि भारी प्रबल भजे है भांति ऐसे बताए ।१२।१०३।

दोहरा—फते कीओ अलसून को बाजिओ तबल निसान ।
गोबिंदसिंह आए तबै पुर अनंद सुभ थान ।१३।१०४।
इत स्री गुर सोभा राज हेत संग्राम तीसरा धिआइ संपूरनम सुभमसतु ।३।

दोहरा—केतक दिन केतक बरस इह बिधि गए बिदाइ ।
जे प्रभ सो चोरत कछू तिन तिन मारिओ धाइ ।१।१०५।
खान दिलावर आइ कै सुत संगि फउज बनाइ ।
तिनन कहिओ प्रभ सौ अरो निमख बिलंब नहीं लाइ ।२।१०६।

सवैया—फउज सीगार असवार हज़ार लै जुध के काज दल साज आयो ।
दिवस बीतिओ सबै रैन थोरी गई भयो असवार डंका बजायो ।
देखिकै नीर तिह तीर ठाढे भए सरक जासूस तिह ठउर आयो ।
लोग दर पै तबै देत चोकी सबै तिनन के पास ताने जनायो ।३।१०७।

दोहरा—स्रवनन सुनि आलम गयो प्रभ सो कहिओ बिचार ।
बिदा फउज कीनी तबै अपनी क्रिपा धार ।४।१०८।

सवैया—फउज ललकार संभार हथिआर पुकार कै मार ही मार धाए ।
एक सो एक बलवंत सूरा सरस भए असवार डंका बजाए ।
डंक झुनकार ललकार सूरान की सुनत ही खान खाने सिधाए ।
जान कै जीव मै भांति ऐसी भई अनक हज़ार दल उमड आए ।५।१०९।

दोहरा—भजे खान ताही समै मन मै अति डर पाइ ।
म्रिग छउना जिउ सिंह ते भाजे पंख लगाइ ।६।११०।
कछ न बसानी प्रभू सौ अति मन मै खुनसाइ ।
बखा गाव उजार कै चले अवर दिस धाइ ।७।१११।

भुजंगप्रयात—गयो खान जादा हुसैनी पठायो ।
लीए फउज को संगि वह बेग धायो ।

रहे मारगं बीचि राजे अपारि ।
करी रीति बिप्रीति तिन से अपारी ।८।११२।
लरिओ खेत को रोप कै खां हुसैनी ।
करी राज संगं उनै बात पैनी ।
लरिओ हिमतं किमतं खेत पायो ।
हरी सिंह क्रिपाल के जोर धायो ।९।११३।
लीए सात सिखं कीए लोह भारे ।
जुझे संगती सिंह दुरगै सिधारे ।
प्रभुजुध के हेत को खान आयो ।
क्रिपा काल कै राह बीचै खपायो ।१०।११४।

दोहरा--खानु हुसैनी जुध को चडिओ सकल दल साज ।
मारग मै जुझिओ वहै लोह लाज कै काज ।११।११५।

चौपई--कउतक अउर कीए प्रभ घने । प्रभ के खेल प्रभू को बने ।
जाको भेद नैक नै होइ । ताको भेद न जानै कोई ।१२।११६।

इति स्री गुर सोभा खानजादे हुसैनी जुध संपूरन सुभमसत ।४।

दोहरा--पुन आनंदपुर गुर गोबिंदसिंह अब कब करत बखान ।
गिरद पहार अपार अति सतिलुद्र तटि सुभ थान ।१।११७।
चेत मास बीतिओ सकल मेला भयो अपार ।
बैसाखी के दरस पै सतिगुर कीयो बिचार ।२।११८।
संगत दरसन करतु सब नगर नगर बिसथार ।
हुए दइआल दरसन दीओ करनहार करतार ।३।११९।
गोबिंदसिंह करी खुशी संगति करी निहाल ।
कीउ प्रगट तब खालसा चुकिओ सकल जंजाल ।४।१२०।
सब समूह संगति मिली सुभ सतिलुद्र के तीर ।
केतक सुन भए खालसा केतक भए अधीर ।५।१२१।
तज मसंद प्रभ एक जप यहि बिबेक तहा कीन ।
सतिगुर सो सेवक मिले नीर मधि जो मीन ।६।१२२।
सो सति संगति जानीए जह बिबेक बिचार ।
बिन भागन नहीं पाईए जानत है संसार ।७।१२३।

नेम धरम पूजा सकल एक नाम गोबिंद ।
एक बार मुख ते कहो होत अनेक अनंद ।८।१२४।
बचन कहत गुरदेव के सुनि मन मीत बिचार ।
मन बच करम कर भावनी सरन ताहि सुख सार।६।१२५।
जिह मसतक संजोग है सरनि गही तिह आनि ।
इक ऐडे ऐडे फिरत मन मै करत गुमान ।१०।१२६।
मोहि माल संगति सकल कही सिंह गोबिंद ।
मानै हुकम बिबेक सुनि ताको करउ अनंद ।११।१२७।
मान बचन सनमुख भए जिन अंतरि परतीत ।
एको नाम निधान जपि लीओ जनम जिन जीति ।१२।१२८।
गुर गोबिंद गोबिंद गुर करनहार करतार ।
जगत उधारन आइओ जानहू सब संसार ।१३।१२६।

कबित्त—कल मै करनहार निरंकार कला धार,
जगत के उधारबे गोबिंदसिंह आयो है ।
असुर सिंहारबे को दुरजन के मारबे को,
संकट निवारबे को खालसा बनायो है ।
निंदक को निंद दई सिख दई सिखन को,
ताके महातम ते रैन दिवस धिआयो है ।
खालसे के सिखन की निंदकु जो निंद करै,
जानि बूझि नरक परै ऐसो बतायो है ।१४।१३०।

दोहरा—जगत उधारन कारने सतिगुर कीओ बिचार ।
कर मसंद तव दूर सब निरमल कर संसार ।१५।१३१।

छपै—निरमल करि संसार जगत मै बचनि सुनाए ।
कीओ खालसा प्रगट सुनत दुरजन डर पाए ।
सुनि जन करत बिचार चार अचरज सुनि भाई ।
गुपत बात भई प्रगटि अंत गुरदेव बताई ।
मानहि सु संत इह मंत को जनम जीत मुकता भयो ।
कबि तासु रेनि तिह सिक्ख की जु सतिगुर की सरनी अयो ।१६।१३२।

दोहरा—सो समरथ कारन करन तिह समान नही कोइ।
ताकी सेवा सो करे जिसहि परापति होइ।१७।१३३।

चौपई—बचन ताहि बिरलो पहिचानै। जाको दया करै सोई जानै।
गुर सिखन को बचन सुनायो। जो सिखन जग मै प्रगटायो।१८।१३४।
सिर गुमन के मुख नही लागो। पाचन को सब संगि तियागो।
मरन परन तिनके कछ होवै। तहा सिख नही जाइ खलोवै।१९।१३५।

दोहरा—मरने परने तासके सिख न कोई जाइ।
करनहार को बचन है संगति दीओ बताइ।२०।१३६।

चौपई—हुका तिआगै हरिगुन गावै। इछा भोजन हरि रसु पावै।
भदर तिआग करो रे भाई। तब सिखन यह बात सुनाई।२१।१३७।
माति पिता मरे जे कोई। तउ भी कहत न भदर होई।
माता पिता गोबिंद हमारा। ऐ संसारी झूठ पसारा।२२।१३८।
ता पर भदर भूल न कीजै। यह उपदेस सति कर लीजै।
भदर भरम धरम कछु नाही। निहचै जानि संत मन माही।२३।१३९।

दोहरा—संगति भदर मति करो खुर न लावउ सीस।
मात पिता कोई मरै सतिगुर कही हदीस।२४।१४०।

चौपई—मन्नत गोलक अर दसवंध। घरि मै राखो तजो मसंद।
भेट कार सतिगुर की होइ। जाइ हजूरि चड़ावै सोइ।२५।१४१।
ऐसी रीति रहत बतराई। संतन सुनि अधिक मन भाई।
सत संगति मिलि दरसन जाईए। दरसन देखि बहुत सुख पाईयै।२६।१४२।
जनम जनम का मिटै अंधेरा। ऐसा दरसन सतिगुर केरा।
अपराधी कोऊ दरसन करै। एक दिसटि मै वहु भी तरै।२७।१४३।

कबित्त—कीओ है प्रकास लास चमकी चहु ओर तहां
जोति लजाई वंत भयो सूरज अर चंद है ।
जाको दरसन ऐसो दुरमति मल सगल खोत बिनसति
सकल पाप छूटत सभि बंद है ।
खालसे मै सुफल सेव करत है सगल देव
एसो बतायो भेव उपजत अनंद है ।
कहो सिखो वाहगुरू वाहगुरू वाहगुरू,
सतिगुरू सतगुरू सतिगुरू गोबिंद है ।२८।१४४।

दोहरा—मोहि आसरा ताहि को एसो समरथ सोइ ।
सरब धारि समरथ प्रभ ता बिन अवरु न कोइ ।२९।१४५।

कबित्त—कीए जदि बचनि सतिगुरू कारन करन
सरब संगति आदि अंति मेरा खालसा ।
मानेगा हुकमु सो तो होवैगा सिख सही
न मानैगा हुकमु सो तो होवैगा बिहालसा ।
पाच की कुसंगति तजि संगति सौ प्रीति करे
दया और धरम धार तिआगे सब लालसा ।
हुका न पीवै सीस दाडी न मुढावै
सो तो वाहगुरू वाहिगुरु गुरू जी का खालसा ।३०।१४६।

दोहरा—दै दरसन कीनै बिदा मंतर दीओ प्रभ ऐक ।
कहत खालसा खालसा ऐसो करत बबेक ।३१।१४७।

अडिल—करनहार करतार हुकमु करते कीआ ।
कर मसंद सभि दूरि खालसा करि लीआ ।
मानहि सो परवान सुफल तिन का जीआ ।
उन तोरी जम की फास नाम अंम्रित पीआ ।
जी ! जो तू करहि सु होइ कीआ सोई थीआ ।३३।१४८।

दोहरा—खांडे की पाहलि दई करनहार प्रभ सोइ।
कीओ दसो दिस खालसा ता बिन अवर न कोइ।३३।१४९।

अडिल—दे खांडे की पाहल तेज बढाइआ।
जोरावर करि सिंघ हुकम वरताइआ।
जिह मसतकि संजोग तिनी कमाइआ।
इक भूले भरम गवार न पाइआ।
जी ! उनके कछू न हाथ धुरो फुरमाइआ।३४।१५०।

दोहरा—दूतन को संगि साथि तजि दुरमति देहु जलाइ।
हुकमु तेरा सभ सत है मानहि नरक न जाइ।३५।१५१।

अडिल—सिर गुम्मन के मरने परने नहीं जाईए।
पाचन के संगि साथ नेह नहीं लाईए।
तजि परपंच बिकार दुरत जलाईए।
सत संगति परताप नरक न ज़ाईए।
जी ! हुकमु तेरा सब सचु सचु सुख दाईए।३६।१५२।

दोहरा—हुकमु तेरा सब सचु है सुआमी सिरजनहार।
केते भ्रम भ्रम पचि मुए नहि पावत बीचार।३७।१५३।

अडिल—बचन कीउ करतार खुर नहीं लाईए।
मन अंतरि करि प्रीत बचनि कमाईए।
मात पिता मरि जाइ न भदर कराईए।
केते मानहि नाहि धूम उठाईए।
जी ! हुकमु तेरा सब सचु सचु मनाईऐ।३८।१५४।

दोहरा—सतिगुर को उपदेस सुनि रिदे प्रीत करि लेहु।
भेट कार गुरदेव की अवर हाथ नही देहु।३५।१५९।

अडिल—करनिहार की भेटि किसे नह दीजीए।
सतिगुर को उपदेस सति करि लीजीए।

सति संगति मैं बैठि हरि गुन गाईए।
पूरन होवै भाग तब ही पाईए।
जी ! खालसे की अरदास नाम जपाईए।४०।१५६।

दोहरा—एक सिख सनमुख कीए एक न मानहि सोइ।
जो नर सिमरै प्रीत करि ता समान नही कोइ।४१।१५७।

अडिल—हुकमु तेरा सभ सचु सचु बनवारीआ।
इक घड़ीए इक खालसा आपे धारीआ।
इक मानहि इकि मनहि नहीं गवारीआ।
ओइ बधे जम दुआर करहि पुकारीआ।
जी ! जो तू करहि सु होइ सचु सिरजन हारीआ।४२।१५८।

दोहरा—ओइ दुनिया रंगि रचि रहे जग सो अति डर पाइ।
जो जगि कहिओ सु उन कीओ गुर के बचनि भुलाइ।४३।१५९।

अडिल—जो भूले गुरदुआर थाउ न पाइआ।
माया मोह बिकार मूड लपटाइआ।
करि बिखयन सौ प्रीत जनम गवाइआ।
है दुनिआ खिन एक बिरख की छाइआ।
जी ! मूरख मनि अगिआन नजरि न आइआ।४४।१६०।

दोहरा—जिह जन उपजत नाम धुनि तिह जन निरमल रीति।
भजि गोबिन्द भए खालसा जिन अंतरि परतीत।४५।१६१।

अडिल—पारब्रह्म परमेसर गुर गोबिंद है।
सरब घटा प्रतिपाल करत आनंद है।
सिमरत नाम पुनीत टूटत फंद है।
भए खालसा सोइ छोडि मसंद है।
जी ! प्रगट भए चहु ओर सूरजो चंद है।४६।१६२।

दोहरा—एक प्रगट खालस भए एकन की इह रीत।
अंध कूप महि पचि रहे नाहि ताहि सो प्रीत।४७।१६३।

ਅਡਿਲ—ਅੰਧ ਕੂਪ ਮੈ ਮੂੜ ਗਿਆਨ ਨ ਪਾਇਓ ।

अडिल—अंध कूप मै मूड गिग्रान न पाइग्रो ।
संत जना सो नेहु नैक नही लाइग्रो ।
माया मोह बिकार ताहि लपटाइग्रो ।
मन ग्रंतरि करि प्रीत नाम न गाइग्रो ।
जी ! जो कछु भई रजाइ तिते वलि लाइग्रो ।४८।१६४।

दोहरा—जिनके मन मै भाव नही रचे परपंच बिकार ।
संत सभा मिलते नही किग्रा जानहि बीचार ।४६।१६५।

ग्रडिल—हरि के नाम बिसारि परे मझि धारिग्रा ।
मन ग्रंतरि करि प्रीत नामु न बिचारिग्रा ।
भूले जग की काणि जनम सब हारिग्रा ।
जिन जपिग्रा करतार तिसहि उधारिग्रा ।
जी ! खालसा सरनि दुग्रार करो निसतारिग्रा ।५०।१६६।

दोहरा—जो करता सब सिसटि को ताहि सदा मनि जाप ।
दुरमत मिटै हउमै छुटै संत जना परताप ।५१।१६७।

ग्रडिल—संत जना परताप दुरत मिटावणी ।
मन बच करि गोबिंद सोभा गावणी ।
सेवा सुफल ग्रनूप जो तुंधु भावणी ।
तेरी उपमा ग्रपर ग्रपार बहुत सुहावणी ।५२।१६८।

दोहरा—मरि मरि जनमहि ग्रनक बार चउरासी बिउहार ।
बिनु गुर ठउर न पावई देखउ रिदै विचार ।५३।१६९।

ग्रडिल—जो गुर ते विमुख भए तिन ठउर न कोइ ।
मर मर जनमहि ग्रनिक बार तिन गति नही होई ।
चउरासी मै भरमते पावत दुख सोई ।
दुनिग्रा कै रंगि रचि रहै मूरख है सोई ।
जी ! उन हरि नाम न पाइग्रो खटे सो खेई ।५४।१७०।

दोहरा—अंचर गहि सतसंगि को तजि परपंच बिकार ।
दिवस रैनि बीचारीए मन ते दुबधा टार ।५५।१७१।

अडिल—बिसअर दुध दीआईए ओहु बिख नही छोरै ।
गरधब सुगंध लगाईए भुइ सुता लोहै ।
तुमा होइ न मिठडा जे खंड पगोरै ।
सुआन पूछ टेढी रहै कछु होत न होरे ।
जी ! तिउ कपटी होइ खालसा सतिसंग न लोरै ।५६।१७२।

दोहरा—ते नर उझर पाइ अहि जो मन मै गरबाहि ।
जिनके मन मै भै नही अंधे अंधु कमाहि ।५७।१७३।

अडिल—सतसंगति मूल न जाइनी गिआन होहु कमाइआ ।
ओइ सतसंगति सो ना डरहि उनमन गरबाइआ ।
जो सत संगति ना मिलहि उन जनमु गवाइआ ।
हुकमु न मानहि खसम का जिनि राहु बताइआ ।
जी ओइ कपटी होइ न खालसा केता समझाइआ ।५८।१७४।
कुने दे बिचि पाइकै दिचै अग जलाइ ।
कोरडु मोठ न सिजई केता करो उपाइ ।
तिउ कपटी संगति ना रलहि उन बोलिआ कछु न सुखाइ ।
उस सिर मिलनु न लिखिओ भंभल भूसे खाइ ।
जी ! जे सतिगुर क्रिपा करे ता किछु कही न जाइ ।६०।१७६।

दोहरा—खोजत कोटि अनेक जन सोभा अपर अपार ।
रच रचना जिन सभ कीए सो जानै करतार ।६१।१७७।

अडिल—तूं एको नाम अनेक अंत न पाईए ।
कर संतन सौ प्रीत भरम चुकाईए ।
ताको नाम बिसार अउर कित जाईए ।
बहु बिअंत करितार रैन दिन गाईए ।
जी ! खालस की अरदास चरनी लाईए ।६२।१७८।

दोहरा—मोहि आसरो ताहि को ऐसो समरथ सोइ ।
सरब धार समरथ प्रभ ता बिनु अवर न कोइ ।६३।१७६।

अडिल—करि किरपा गोबिंद नाम कीनो मया ।
ओहु बडभागी जुग माहि नाम जिनि जपि लया ।
बिनसे सगल कलेस कूड तन ते गया ।
निरमल भए सरीर जीव मै भउ भया ।
जी ! सो जन तजि अभमान संत सरनी पया ।६४।१८०।

दोहरा—करि किरपा प्रभ आपनी धुर ही लए मिलाइ ।
जो धुरि मिले सो मिलि रहे कही कहन न जाइ ।६५।१८१।

अडिल—इनकी किरपा धारि बखस मिलाइआ ।
इनकी भरम भुलाइ ऊझर पाइआ ।
एक पए असगाह कूड कमाइआ ।
इनकी दित्तो नामु हुकमु मनाइआ ।
एक रहे दरबार जा तुध भाइआ ।६६।१८२।

दोहरा—आदि अंत तिह पुरख की नउतन कथा अपार ।
नरन बरन थकि थकि रहे कोऊ न पावत पार ।६७।१८३।

पउडी—तू सचा करतार हैं तेरा अंत न पारा ।
प्रितपालक संसार को सचु सिरजनहारा ।
जिन तू सिमरिओ अंत बार तिस पार उतारा ।
रच रचना कल धारीआ बहु बिधि बिसतारा ।
जी ! लीला लखी न जाइ किछु तू करने हारा ।६८।१८४।

दोहरा—नाहुन अंत बिअंत प्रभ उपमा अपर अपार ।
रमि रहिओ सब स्रिसटि महि कहत बिचारि बिचार ।६९।१८५।

पउडी—सरब निरंतरि आपि ऐको हे धनी ।
तेरी उपमा अपर अपार सचु सोभा बनी ।

तुहि सिमरै संत अनेक गणती कियां गनी ।
परे सरनि दरबारि छोडि मन ते मनी ।
जी ! तू एको नामु अनेक त्रिसटि सिमरै घनी ।७०।१८६।

दोहरा—किउ सहीए जम त्रास जो जपीए करतार गुनि ।
मुकत भए नर सोइ जिन अंतरि भई एक धुनि ।७१।१८७।

पउडो—जहा दूतन को त्रास परत जम जारसा ।
साचा नाम पुनीत ओटि भई ढालसा ।
बिनसै सगल कलेस गयो जंजालसा ।
चूकिओ आवन जान मिटी सब लालसा ।
जी ! खालस जपि गोबिंद भयो है खालसा ।७२।१८८।

मधुभार छंद—होकै उदास । खालस प्रगास ।
अपरं अपार । संभारवार ।७३।१८९।
गुर बचन कीन । सुनि सबन लीन ।
रिद माहि धारि । कीनो बिचार ।७४।१९०।
तजीए मसंद । सब तोर फंद ।
तजि पंच संगि । रचि एक रंग ।७५।१९१।
खालस सरूप । अनूप रूप ।
गहि तेग लीन । अति जुध कीन ।७६।१९२।
केते प्रकार । ताको बिथार ।
जोधा अपार । करि जुधि सार ।७७।१९३।
बबेकं बिचार । तनखाहदार ।
बसिधा सुधार । करि जगत सार ।७८।१९४।
पासा सुढार । खेले खिलार ।
नगरं अपार । तिनके मझार ।७९।१९५।
अनंद रूप । सुंदर सरूप ।
एसे निहार । गुरू केस धार ।८०।१९६।

इत स्री गुर सोभा बचन प्रगास पंचमो धिआओ संपूरन सुभ मसतु ।५।

कवित्तु—बचन कीओ करनहार संतन कीओ बिचार,
सुपनो संसार काहे लपटाईए ।
बिखीअन सो तजि सनेह सतिगुर की सिख,
लहे बिनसे छिन माहि देहि जम पुर न जाईए ।
सीस न मुडाव मीत हुका तजि भली रीति
मन मै कर प्रेम प्रीति संगति मै जाईए ।
जीवन दिन चारि समझ देखि बूझ मन,
बिचार वाहगुरू गुरू जी का खालसा कहाईए ।१।१९७।

दोहरा—तब दिली मै आइकै सब सो कही सुनाइ ।
केतन मानी प्रीत कर केतन दई भुलाइ ।२।१९८।
बरनत आगे की कथा भई नगर मै सोइ ।
करनहार करता धनी जो कुछु करे सो होइ ।३।१९९।

चौपई—दरसन ते जब संगति आई । गुपत बात लै प्रगट सुनाई ।
कीओ बिवेक धरम तहा साला । सुनि बिवेक सिखन सभपाला ।४।२००।
करि पाहल सब संगति चाखी । पाच पाच सिख कीए साखी ।
खत्री ब्रहमण दुइ रहै निरारा । उन अपने मन माहि बिचारा ।५।२०१।
ब्रहमण होइ कै भदर न कीजै । जग मै सोभ कवन बिधि लीजै ।
इह बिधि अनक भरम भरमाने । करनहार के बचन भुलाने ।६।२०२।
केतक कहत बचन अति भारी । कुला करम छूटत बिओहारी ।
केतक कहत इनो मत कीना । सतिगुर हुकम नही कछु दीना ।७।२०३।
केतक कहत लिखा कछु आवै । तब यह बचन कमाया जावै ।
केतक सुनि कै प्रीत लगाई । तिनहु ठउर संगति मै पाई ।८।२०४।
केतक सुनिकै कुटंब तिआगे । जिनकै बचन अमोलक लागे ।
अंग संग तिनके प्रभ जानो । प्रभ संगी तेई पहिचानो ।९।२०५।

दोहरा—प्रभ तिह निकटि बखानीए जिनि अंतरि प्रतीति ।
प्रीति बिना किव पाईए जाहि कोटि जुग बीत ।१०।२०६।

चौपई—धरमसाल संगति जबि आवै । दरसन पारब्रहम को पावै ।
गुर संगति कछु भेद न होई । मुन जन कथा बखानत सोई ।११।२०७।
कर दरसन दुरमति मल छीजै । उपजै गिआन भला कछु कीजै ।
इछा मन मै जो कछु आवै । करि अरदासं तुरत ही पावै ।१२।२०८।
ए प्रताप खालसे माही । समसर तास और कोऊ नाही ।
जो इम जानै तिह गति होइ । तिह की पदवी लहै न कोई ।१३।२०९।

दोहरा—सिख आसरो ताहि को सासि सासि दिन रैनि ।
एक घरी संगति बिना परत नाहि तिह चैन ।१४।२१०।

चौपई—प्रथमे जाति खत्री एक । तापरि संगति कीओ ब्बेक ।
बाह पकरि कै देहु उठाइ । कहो इसे अपने घरि जाइ ।१५।२११।
सिरगुंम नाव ताहि ठहरायो । प्रिथमे सिखन उसहि उठायो ।
क्रोधवंत मन मै अति भयो । ऊच नीच मुख ते कछु कहियो ।१६।२१२।
तब वहु एक और के आयो । उसहि आनकै भेद बतायो ।
अब लउ ऐसी कबै न देखी । नई बाति इनकी इम पेखी ।१७।२१३।

दोहरा—इन मोसो ऐसी करी कर गहि दीउ उठाइ ।
सुनि प्रीतम किआ कीजीए अब मोहि दहु बताइ ।१८।२१४।

चौपई—तब दूसर चिंता चित करी । अब तो बात कठन बिधि परी ।
सुनि भाई कछु कहन न जाई । महा प्रबल बिधि धूम उठाई ।१९।२१५।
बुरा भला सब को वे कहिते । हम बी सुनिके चुप हो रहिते ।
द्रिड करि राखो आपनो चीत । जै है दोइ चारि दिन बीत ।२०।२१६।
तब उन कछु इक भोजन कीआ । करकै तास मित्र को दीआ ।
भोजन करि कै अधिक अघायो । तब संतोख ताहि मनि आयो ।२१।२१७।

दोहरा—चित चिंता काहे करो कवन उठावन हार ।
सोभ तिहारी नगर मै जानत सब संसार ।२२।२१८।

चौपई—जब वाके उन भोजन कीआ । भोजन खाइ नीर कछु पीआ ।
तब वाके मनि धीरज आयो । प्रीतम ने कछु भला सुनायो ।२३।२१९।

अब तो बाहि दूसरी भई । तन मन की सब चिंता गई ।
दीपत प्रीत भाति इह होई । जलै पतंग दीप पर सोई ।२४।२२०।
इह बिधि जीव दुहन मिलि कीना । जैसे प्रीत होत जल मीना ।
जिउ कामी कामनि बसि आवै । लोग लाज मन ते बिसरावै ।२५।२२१।

दोहरा—जैसे कामी काम सै रैनि दिवस मनि होइ ।
लोग लाज मन ते तजै होनी होइ सु होइ ।२६।२२२।

चौपई—तब दूसर सिखु सिखन मै आयो । सिखन भेदु कही सुन पायो ।
तब वाको उन पूछन कीना । काहे भोजन तै उन दीना ।२७।२२३।
वह तो सिरगुंम हमन उठायो । ते किह बिध छरि मै बठलायो ।
हाथ जोरि कै ऐसे कहियो । बखस लेहु औगन यह भइयो ।२८।२२४।
सब सिखन मिलि इक मन कीना । तब वाको मिलाइ करि लीना ।
अब उहि सो प्रीत न करिहो । जो कछु कहो सोई मनि धरिहो ।२९।२२५।

दोहरा—सतिगुर संगति एक है जउ जानै नर कोइ ।
मारै बखसै आप ही तिह बिन नाही कोइ ।३०।२२६।

चौपई—कतिक दिन जब भए बितीता । अधक तास ताही संगि प्रीता ।
प्रगटि बात सिखन जब सुनी । केतक सुनिकै मूडी धुनी ।३१।२२७।
एक सिख के अउसर भइउ । तब दूसर सिखन मै गइउ ।
तब सब सिखन सीख बताई । बाह पकरि कै दीओ उठाई ।३२।२२८।
केतक संगी अवर उठाए । क्रोधवंत अपने घरि आए ।
कोप कीओ मन मै अति भारा । सभा जोर कै कीओ बिचारा ।३३।२२९।

दोहरा—कपट बैन कहितो गयो करी नई इक राहि ।
समझि बाति करते नही करि गहि देहि उठाइ ।३४।२३०।

चौलोटन छंद—तब ग्रहि मै आयो नर सोई, उपजिउ क्रोध तपतु तन होई ।
केतक सिखन लीओ बुलाई, होइ इकंत सब बैठे जाई ।
बैठे सब जाई बात चलाई, सुनिहो भाई किआ कीजै ।
रैहण जग माही इन मधाई किउ करि तिआग सु कर दीजै ।

मरने अर परने कुल बिउहारा इनो बिचारा दूर करो ।
मिलीए सब संगे हो रंगे सतिगुर सिमरो पार परो ।३५।२३१।

दोहरा—निस दिन सिमरो तास को दिवस रैनि बीचार ।
करन हार सब स्रिसट को वही उतारे पारि ।३६।२३२।

चौपई—तब वाने इक बात बिचारी । करि इकत्र संगति सब सारी ।
अब उपाव ऐसे कछु कीजै । इन की बात दूरि करि दीजै ।३७।२३३।
सरब संगति अउर बी केते । भए इकठे थे सब जेते ।
इन मिलिकै इक मेला कीना । नाई फेर नगर मै दीना ।३८।२३४।
सब संगत तिह ठउर बुलाई । कथा जीव की सबन सुनाई ।
दारापुर मेला ठहरायो । भेद सबै संगति ते पायो ।३९।२३५।

दोहरा—दारा के बाजार मै मेला भयो अपार ।
दरबवंत दुइ खत्री ताने कहिउ पुकार ।४०।२३६।

चौपई—तुम जु हमन धरीआ ठहरायो । काढो हुकमु तुमै कछु आयो ।
हुका पीवै सीस मुंडाई । जु तुमरे मन मै आवै भाई ।४१।२३७।
हमरे बाति इही बिधि होई । भावै तुमै करो सब सोई ।
जो तुम गुनहगार ठहरावो । मिले न हमरे कोई आवो ।४२।२३८।
तब सुनिकै सब ही चुप धारी । मिलन काज यह बात बिचारी ।
धन्न धन्न कहि उठे पुकारे । जग मै बात भली इम सारे ।४३।२३९।

दोहरा—जउ लगि लिखा हजूरि का आवै संगति माहि ।
तव लगि सब सो मिलि रहो नही करो कछु नाहि ।४४।२४०।

चौपई—तब उनही जागहा इक दीनी । तहा इकठी संगति कीनी ।
खुली बाति सब ने ठहराई । सब सो मेल करो रे भाई ।४५।२४१।
गिआरस एक मेल जब कीना । यह उपदेश सबन को दीना ।
पिता पुरखी जो होइ आई । सो करीए ऐसे बतराई ।४६।२४२।
केतन के सुनि मनि चिति आई । भली बात कीनी है भाई ।
केतन कहिओ रहत नही होई । हमतो बाति न मानै कोई ।४७।२४३।

दोहरा—रहत तिआरा तिन ने करी भए खुलासे सोइ ।
खास बचन जाने नही करता करे सो होइ ।४८।२४४।

छपै छंद—करता करे सो होइ रहत तिनहू सब तिआगी ।
सति संगति सो प्रीति तोरि बिखअन सौ लागी ।
गुर के बचन बिसारि कीउ बीचारि खुलासा ।
कहत खालसा नाहि होत जम पुरि तिह बासा ।
ऐसो बिचारि मन मीत करि सकल भरम तजि दीजीए ।
बचन कीओ कारन करन सति सति सब कीजीए ।४६।२४५।

दोहरा—बचनि कीओ करतार सुनि मेरे मन प्रीत कर ।
गए बिसारि गवार तिन की करि न चीत धरि ।५०।२४६।

कबित्त—खालसा बिसारि कै उधारु कीओ चाहत है,
सो तो अब कहू नाहि ऐसे करि जानीए ।
जैसे कै मीन धीन नीर बिना तजै प्रान,
ऐसे गुर सबदि बिना मूरख बखानीए ।
चिला जो नहि कमान कैसे कै चलावै बान,
मन मै करि देखि गिआन ऐसे पहिचानीए ।
चलनी जो रहत छान मूरख है ता समान,
सतिगुर के बचन कान सुनि कै न मानीए ।५१।२४७।

दोहरा—प्रभ के बचनि बिसारिकै मीत कीओ संसार ।
मन मै अवर बिचारते भूलत भरम गवार ।५२।२४८।

सवैया—मन ते तजि लाज अकाज कीओ जिनके दुरबुधि प्रकासु कीओ है ।
क्रोध महा हिरदे तिनके जिनके ढिग पाप निवास कीओ है ।
झूठ की बातन सो लिपटे अटके सति संगति मै सु कीओ है ।
धंनि तेई जन धंन सदा जिन एक ही नामु अधारु कीओ है ।५३।२४६।

दोहरा—जिभिआ रस तिआगे सकल एक भजन सो काम ।
सुफल जनम तिह जानीए निस दिन सिमरे नाम ।५४।२५०।

चौपई—नाम निरंजन है प्रभ सोई । प्रगटिस्रो सात दीप तिहु लोई ।
नव खंडन मै जोति तिहारी । सिमरै मुनि जन वार न पारी ।५५।२५१।
अनगनि कोटि जपै तुहि केते । सगल स्रिसटि मै प्रानी जेते ।
मन बच करम सतिगुर को धिआवै । तिह प्रताप जोनि नही आवै ।५६।२५२।

त्रिभंगी—वे जोन न आवै मनि चित लावै सबदि कमावै भगति करै ।
सेवै नर सोई जिह धुरि होई बिन लेखे धुरि कउन तरै ।
किस ही कर नाही इस जग माही जो नर कोई सकति धरै ।
करता प्रभ सोई अवर न कोई जो सिमरै सो धारि परै ।५७।२५३।

दोहरा—पतित उधारन भै हरन सुमति ताहि सुख सार ।
सोई प्रभ इस रूप है जिनि सिरजिओ संसार ।५८।२५४।

त्रिभंगी—है प्रभ सोई करै सो होई अवर न कोई सो करता ।
जाको सभ गावै नौनिध पावै अपरंपर दुख को हरता ।
सब जग जानै मुनि जन मानै गण गंधर तिह सेव करे ।
ऐसा प्रभ सुआमी अंतरजामी देव कोटि तेतीस डरै ।५९।२५५।

दोहरा—सासि सासि सिमरे सदा दिवस रैन बीचार ।
उतम किरिआ करत है से गनीए संसार ।६०।२५६।

चौपई—करनहार जानत सब सोई । बाहर भेस किही बिधि होई ।
ताते गुपत कछू नही रहै । जानत सब कछु विन ही कहै ।६१।२५७।
है समरथ प्रभ अगम बखानै । तन मन की बिरथा सब जाने ।
प्रभ पूरन करता सभ सोई । ता बिनु कितहू अवर न कोई ।६२।२५८।

त्रिभंगी—अवर न कोई चहु दिस सोई प्रगट पुरख है एक धनी ।
सेवक जो गावै नउ निधि पावै दुरजन की नहीं रहत मनी ।
केते गुन गावै सो सुख पावै तिनको जसु जग माहि भनी ।
करता प्रभ वोही करे सो होई उनकी सोभा उनहि बनी ।६३।२५९।

इति स्री गुरु सोभा बचन बिचार छठमा । संपूरनम सुभमसतु ।।६।।

दोहरा—हरि प्रभ चाहे सो करे बुरा भला जिह हाथ ।
संगति बिन नही पाईए समझ देख यह बात ।१।२६०।

सवैया—सो मनमै कर देख बिचार जपे करतार तबै गति होई ।
दुख मै भुख मै सुख मै तुहको होत सहाए करता प्रभ सोई ।
दीन दइग्राल सदा प्रभ पूरन ताहि बिना कहु ग्रवर न कोई ।
ऐसी जगत मै जोत तिहारी बिचारी सु याकबि की गति जोई ।२।२६१।

दोहरा—ग्रंचर गहि सति संगि को तजि प्रपंच बिकार ।
दिवस रैनि बीचारीए पतति उधारनहार ।३।२६२।

चौपई—एक सिख निरमल जिह रीति । ग्रंतरि गति सतिगुर सो प्रीत ।
हुकमु पाइ उन देह तिग्रागी । ग्रंत समे गुर सौ लिव लागी ।४।२६३।
ता पर भदर कीग्रो न भाई । जाति लोक सब दीए उठाई ।
ता पर चरचा चली ग्रपारा । भयो इकत्र नगर सब सारा ।५।२६४।
इन सो बनजु करो मत कोई । कुल की चाल इनो सब खोई ।
तब पंचन मिलि लिखत कराए । बेद सति सति लिखवाए ।६।२६५।

दोहरा—इन सो सवदा मत करहु नहि कुटंब बिउहार ।
जो ग्रागे कुल मै भई सो बरतो संसार ।७।२६६।

चौपई—इह बिचार पंचन मिलि कीना । केतक मिल कर ग्रंत दीना ।
इनसौ बात भांति इह कीजै । इन की बाति चलन नही दीजै ।८।२६७।
इनो राह इक नई चलाई । सतिगुर इनै नही बतलाई ।
इह बिधि करिकै लिखत कराए । केतक जीव जाइ लिख ग्राए ।९।२६८।
केतन लिख कै दीग्रो बहाई । यही बात संगति बतलाई ।
कर बीचार यहै ठहरायो । पाड चीर कै लिखत बहायो ।१०।२६९।

दोहरा—जो सब संगति ने कहिग्रो वहै काज उन कीन ।
लिखिग्रो सु लिखत बहाइए, यैह बबेक तव दीन ।११।२७०।

चौपई—चली बात पंचन मै ग्राई । लिखत सकल उन दीग्रो बहाई ।
तब उन ही बिचार यह कीना । सब बजार बंद करि दीना ।१२।२७१।

फिरि गाढे करि लिखत कराए। केतन किरत बिना दुख पाए।
केतन जाइ जाइ लिखि दीना। जो उन कहिओ सोई उन कीना।१३।२७२।
केतन आस एक पर धरी। केतन ऊच नीच चित करी।
केतन दर दरसन को धाए। केतन ग्रिह हाकम के आए।१४।१७३।

दोहरा—केतन दरसन को गए केतक भए उदास।
केतक हाकम के गए नहि राखिओ बिस्वास।१५।२७४।

चौपई—केतक सिखन यहि मति धारा। हाकम आगे करी पुकारा।
पंचन नगर बंद सभ कीना। इन को हुकम कछू तुम दीना।१६।२७५।
मधम जीत रीत उन धारी। करन न पावै हम बिओहारी।
तब हाकम बिचार यैह कीना। तिनके हुकमु साथ कर दीना।१७।२७६।
जाइ मजीत कहो रे भाई। इनका हाटै देहु खुलाई।
लीने हुकमु तहा चल आए। जे सिरदार तेई बतलाए।१८।२७७।

दोहरा—देखत ही चवके सकल हुते पंच सब सोइ।
हाटन खोल न देहिगे होनी होइ सु होइ।१९।२७८।

चौपई—मिलि पंचन इम बात बनाई। सब मजीत बंद करवाई।
मिले अपार नगर मै सोई। कहत खालसा किह बिधि होई।२०।२७९।
देखहु अब कैसे बन आवै। कैसी सोभ खालसा पावै।
करीए अबि इनसो बिधि सोई। कहै न फेर खालसा कोई।२१।२८०।
मिलि हाकम के बात बनाई। इनो राह इक नई चलाई।
कुला करम के मारग तिआगे। करि है चाल अउर इम लागे।२२।२८१।

दोहरा—वाहगुरू का खालसा कहत सकल मिलि सोइ।
पूछो इनै सुचेति कै जो तुमरे मन होइ।२३।२८२।

चौपई—पातसाह दिलीपति सोई। कहत खालसा ताको होई।
तुमो खालसा किआमति धारा। सो बिधि कहीए सोच बिचारा।२४।२८३।
तब सिखन यह बात बताई। सतिगुर पुरख महा सुखदाई।
आगै जिनकै नाइब होते। नाव मसंद सगल थे जेते।२५।२८४।

दोहरा—सो सतिगुर कीए दूरि सब परम जोति निज धारि ।
सगल सिख भए खालसा सुनीए साच विचार ।२६।२८५।

चौपई—तब बिचार हाकम सुनि रहा । मिलि सिखन ऐसे कछु कहा ।
तब मिलि पंचन यह मत कीना । कछु इक परचु तास को दीना ।२७।२८६।
एक बर इनको गहि कीजै । भेट कसी हमते कछ लीजै ।
तब उन खरच हाथ करि लीना । जो उन कहिग्रो सोई उन कीना ।२८।२८७।
कतक सिख पकरि बैठाए । केतक सुनत महा डर पाए ।
ऊच नीच केतन सो करी । ऐसी बात प्रबल हुइ परी ।२९।२८८।

दोहरा—मिलि पंचन कीनो मता धरीए संगि ग्रपार ।
एक ग्रोर भयो खालसा एक ग्रोर संसार ।३०।२८९।

कवित्त—संतन के काज की सु लाज तैही भरन कही,
ग्रौर मेरे सुग्रामी बेर कौन सी कही है ।
धडीए बट पडीए ग्रौर नगर के ग्रपार लोग,
खालसे के सिखो साथ नीच ऊच भई है ।
कहते है कपट बैन सुनत ही न प्रत चैन,
कांपत सरीर सरन तेरी गही है ।
सुनीए पुकार करनहार नह विलंम धार,
तेरो ही ग्रधार बात तुझ ताई रही है ।३१।२९०।

दोहरा—सुनि दिग्राल क्रिपाल हो भयो जु ग्रान सहाइ ।
हाकम के मन मै बसी हाटै दई खुलाइ ।३२।२९१।

चौपई—सब मजीत खोल कर दीनी । तब सुला ग्रापस मो कीनी ।
हाटै खुली भयो रुजगारा । भयो ग्रनंद क्रोध जब मारा ।३३।२९२।
मिलि ग्रापस मै बहु सुख कीना । ग्रधिक हेत ग्रागे ते चीना ।
फेरि सिख संगति मै ग्राए । केतन ग्राइ गुनाह बखसाए ।३४।२९३।
तब सिखन उन लीग्रो मिलाई । फेरि चाल दरसन की ग्राई ।
दर दरसन को सिख सिधाए । भए ग्रनंद प्रभू गुन गाए ।३५।२९४।

दोहरा—तिनको लीओ मिलाइ जिनो लिखत लिख लिख दए।
सतिगुर के परताप फेर सिख दरसन गए।३६।२६५।
एतो दरसन को गए करता करे सु होइ।
कथा जुध संग्राम की बरनत हो अब सोइ।३७।२६६।

इति स्री गुर सोभा रहत प्रगास सपत धिआई। संपूरनम सुभमसतु।

दोहरा—गोबिंदसिंह अनंदपुर सुबस बास तिह थान।
परसत संगत दरस जिह पावत नाम निधान।१।२६७।
केतक सिख बिदा भए केतक रहे हजूर।
कीओ साजि सजि जुध को बाजै अनहद तूर।२।२६८।
वै जो सिख बिदा भए नगर नगर बिसथार।
तिनो जाइ संसार मै कउतक करे अपार।३।२६६।
नगर नगर मै जुध करि भए खालसा सोइ।
मान बचन सनमुख भए तिह समान नहीं कोई।४।३००।
यह लीला आगे कही दिली को बिसथार।
ऐही भांति संसार मै कउतक भए अपार।५।३०१।
बरनत कथा हजूर की करत जुध बीचार।
दीजै सिध सु बुधवर करनहार करतार।६।३०२।
कछु सुनी कछु उकत कर बरनत हो अब सोइ।
करनहार करता धनी जो कछु करै सु होइ।७।३०३।

सवैया—राजन सो रच जुध बिरुध को साज कीओ जु यहै कल धारी।
ताते बसी जीअ मै उहि राव के बाध के तेग करी असवारी।
भेज दीओ लिखकै ओहि ने अब छाडो गुरू जी भूम हमारी।
कै कछु दाम दया कर देव कै जुध करो यह बाति बिचारी।८।३०४।

दोहरा—सुनत बात सतिगुर तबै कोप भयो मन माहि।
राज तेज दोऊ बनै तिह समान कोऊ नाहि।६।३०५।

सवैया—कोप भयो जु कहिओ गुरू गोबिंदसिंह सु या बिधि दाम न दीजै।
मूड अजानन सो हित कउन है सिध यहै अब युधह कीजै।

मागत दाम सुजान यहै अब नेजे की नोक अनी संगि लीजै ।
ऐसे हू जान करी अभमान तू मारग मै पर नीर न पीजै ।१०।३०६।

दोहरा—राजा आव हजूर तू जो चाहे सो लेइ ।
कै कछू जुध बिरुध करि कर सो एक न देइ ।११।३०७।

अडिल—राव कहलूर लिखा हाढूर को ।
ए राजा तू आव मोहि हजूर को ।
तू ऊधे ते आव यहै बिधि कीजीए ।
जी ! बीच घेर कै लेहु जुध इम कीजिए ।१२।३०८।

दोहरा—तबै राव हंडूर को गयउ तासके पास ।
जो कछु कहो सु कीजीए करी यहै अरदास ।१३।३०९।

छपै छंद—तबै छडि कैहलूर पुर कीनी असवारी ।
मुहरे धरे निसान चलै पखरे तसिगारी ।
भयो राव असवार बाधि करि तेग कमर धर ।
लई सु बरछी हाथ नाभ आगे जमधर धर ।
डाली सु ढाल लटकाइकै तरकस कमान संग ही लीउ ।
लडन चड़िओ प्रभ पुरख सौ बडउ राव तेरो हीओ ।१४।३१०।

दोहरा—तब राव कैहलूर को चडिओ सकल दल साज ।
लडन चलो प्रभ पुरख सौ कीनो निपट अकाज ।१५।३११।

छपै छंद—भयो राव असवार फउज मै भयो नगारा ।
खेलन चडिओ सिकार संगि लीए लोग अपारा ।
बहु बिधि फउज बनाइ संगि राजा सभि लीने ।
आनंदपुर कै निकटि जाइ डेरा तह दीने ।
ऐसो बिचार राजा कीउ बिदा फौज सभ कर दई ।
घेरिओ सु नगर चहू ओर ते मनहि हसति सब करि लई ।१६।३१२।

दोहरा—गोबिंदसिंह ताही समै लीनो सिंह बुलाइ ।
दीओ खडग कर तासके दूतन देउ सजाइ ।१७।३१३।

कबित्त—तब ही बचन पाइ चडिओ नगारा बजाइ,
सुमार भयो जीतसिंह जुध को करन को।
सिंहन को साथि लीए मुहरे निसान दीए,
बाधिओ है खडग सीस दूत के धरन को।
बाधी जमधार और तरकस कमान संगि,
लीनी कर बरछी बल बैरी के हरन को।
बावे करि ढाल लई घोरे असवार भयो,
गोबिंदसिंह बलि संगि जात राव सौ लरन को।१८।३१४।

दोहरा—जहा राव डेरा दीउ तहा नगारा दीन।
सुनत सखन धुनि तासकी बहुत सोच मनि कीन।१९।३१५।

कवित्त—पूछ कै प्रधान सो बिचार कीओ राजा तब,
कहो बात जी वहू की कसे जुध कीजीए।
करो रतवाहि जाइ लडो सनमुख धाइ,
ऐसो है बिचार कै सु सुलाइ करि लीजीए।
तब ही रिसाइ कै सुनाइ कहिओ मंत्री ने,
कउन दबक उठ गाढिए सुलाह दीजीए।
कीजै अब हुकमु मोह मन मै आनो न कोइ,
आए हो धाइ जाइ जुध किउ न कीजीए।२०।३१६।

दोहरा—मंत्र दीओ तब राइ को करउ बीर संग्राम।
लरन भिरन साके करन ए राजन के काम।२१।३१७।

सवैया—राव सो पूछ प्रधान चडिओ न टरिओ अहिवान करी द्रुचताई।
संगि सपाह सुमार नही कहु वार न पार गनी नहीं जाई।
एक सु एक बली जु चले तब सउह ही आनि दई दिखलाई।
मोरचे बाधि के ठाढे भए भइ सूरन के मन मै जु बधाई।२२।३१८।

दोहरा—एक ठाव जब जुगनी भई इकठी आन।
बाजत रागन राग सब करत सूर संग्राम।२३।३१९।

सवैया—बाजत भेर करनाइ सुरनाइ नगारी की चोट सुनाइ दई है।
बाजत राग छहो अर तीस गई सुध काइर को न रही है।
झूमत सूर सुने धुनि मारू की मार ही मारि बिचार लई है।
दोनो अनी गडबड भई तह तीर तुफंग की मार भई है।२४।३२०।

सोरठा—प्रथम मार बंदूक को पाछे तीर कमान।
फिर पाछे समसेर लै करत सूर संग्राम।२५।३२१।

छपै—लरत एक सौ एक एक सो एक निहारै।
करत सूर संग्राम कहा कवि काबि बीचारे।
दिवतन धरिओ धिआन हेत कहु जुध सरस अति।
वे चड चले बिबान आइ रीझंत देखि गति।
जोगन सु आन ऊपर खरी आज पत्र केहु भरे।
जोधा सु जीतिओ जुध मै प्रबल खालसाइ लरै।२६।३२२।

दोहरा—सतिगुर के परताप ते लरत खालसा सोइ।
सूरा सब तिहू लोक मै तिह समान नहीं कोइ।२७।३२३।

कवित्त—वाहगुरू मनाइ जीअ धर कोप परै धाइ,
करै लोग हाइ हाइ ऐसी बिधि कर ही।
मारे समसेरन के लोथनि पै लोथि डारी,
तीरन के मारे कहू धीरज न धर ही।
मारे बंदूकन के दीने असवार डार,
नेजन के मारे नर धरनी पर धर ही।
मारे जमधारन के जीवन के नाहि भूल,
बाधे हथिआर पाच खालसा जी लर ही।२८।३२४।

दोहरा—चलत तीर बंदूक तह नेजा सरस अपार,
बगति बहुत तरवार जह चमकत है जमधार।२६।३२५।

छपै छंद—तबै गही तरवार फउज मै परत धाइ करि।
करत एक सो दोइ दोइ होत परत धरत पर।

चलत रकत दरीआउ गिरत जूझंत सूर तह ।
दिवस रैनि होइ गई पउन हुइ रही मंद जह ।
महां जुध भारी भयो खबर तीन लोकन भई ।
गोबिंदसिंह सुत इव लरत राजन की सुधि बुधि गई ।३०।३२६।

दोहरा—राजन की सुधि बुधि गई भयो जुध जब जोर ।
लरत सिंह रणजीत तह फउज दई सब मोर ।३१।३२७।

चौपई—एक लरे एक भाज लुकान । इक काइर देखि बहुत डरपाने ।
इक घाइल हुए बिहाल । इक उधरे सीस फिरे बिकराल ।३२।३२८।
इक सनमुख हुई जुध मचावै । इक भाजै फिर निकटि न आवै ।
इक पिआसे पानी बिनु मरई । इक देखे तेग धीर नहीं धर ही ।३३।३२९।
अधक अधीर ससत्र तजि डारे । गिर गिर परे परपरीआ सारे ।
एक सूर सनमुख होइ लरई । वे मरने ते बिलम न करई ।३४।३३०।

दोहरा—लरत सूर संग्राम मो महा निडर मन सोइ ।
ता समान तिहू लोक मै बिरला गनीए कोइ ।३५।३३१।

सवैया—गाजत सूर महा रन मै धन मै चमकै बिजरी घन नावै ।
तारन मै जिम चंद दिपै न छपै रणजीत महा रन पावै ।
भान प्रकास कीओ जु तबै निस भाजत है तिह नेडे न आवै ।
मानो प्रकास कीओ जु तबै सै बाज सु योहि दल राजन के बिच लावै ।
३६।३३२।

दोहरा—केतक दिन इह भांत करि भयो जुध संग्राम ।
प्रबल भयो तह खालसा राजन मानी आन ।३७।३३३।

चौपई—तब उपाव राजे इम कीना । मंत्री सो बिचार करि लीना ।
इही भांत दाव कर आवै । अउर कछू नही होत उपावै ।३८।३३४।
एक आन सतिगुर को दीजै । तवै ठाव अपनी करि लीजै ।
गऊ बाधि राव तह गयो । छाडो गाव भात इह कहियो ।३९।३३५।
स्रवन सुनत गोबिंदसिंह दाते । छाडी ठउर करी यह बाते ।
पुर निरमोह कीनो बिस्रामा । भेजी फउज हनन को ग्रामा ।४०।३३६।

इत स्री गुर सोभा संग्राम अनंदपुर का जो पहला होआ राजे साथ अठवा धिआइ संपूरनसुभमसत ।८।

दोहरा—गोबिंदसिंह निरमोह मै आन कीओ बिस्राम ।
चली फउज कहलूर को लूटि लेहु सभि ग्राम ।१।३३७।

सवैया—गोबिंदसिंह की फउज चढी अरि घेरि लीए सब गाव गुजारा ।
देखि निहार महा बिसुमार पहारीए केते ही मारे अपारा ।
लोथन पै तह लोथ परी अरु जोगनि आन कै पत्र पसारा ।
जूझत साहिब चंद तहा जह जोर परी रन माहि पुकारा ।२।३३८।

दोहरा—लीए पत्र जोगनि अरी गिध बहुत मंडलात ।
लरत सूर संग्राम महि महा निडर हुइ जात ।३।३३९।

सवैया—मार ही मारि पुकार तहै तहा जूझत सूर महा रंगि राते ।
जोधन सौ तह जोध अरे न टरे न डरे सु खरे ही लगते ।
जूझत सूर गिरै धर पै सु परै रन मै जु महा ही सूहाते ।
काइर एक भजे मुख मोरि कै छोडि चले रन ही डर पाते ।४।३४०।

दोहरा—लरत जोर संग्राम मै टारिओ नाहि टरंत ।
एक मारि दुइ दुइ करत दुइ हुइ धरत परंत ।५।३४१।

सवैया—जोर लरै तह खालसा आछै हू मदत साहिब चंद की जाई ।
एक सो एक महा बली सूर लरे रन मै जु करै हाथि आई ।
मारि लई तहा फौज किती जु रही सु अती जु दई बिच लाई ।
जीत भई तहा खालसे की अरु साहिब चंद की लोथ उठाई ।६।३४२।

दोहरा—लीए लोथ निरमोह मै आनि दीओ तिह दाग ।
प्रान दीए हुइ खालसा पूरन ताके भाग ।७।३४३।

सवैया—केते ही गाव अपार निहार के मारि लए जबै खालसा धायो ।
राजन सोच कीओ मन मै अब जोर ही खालसे धूम उठायो ।

गावन के नर भाजि गए सु बसै बन मै न रहै ठहरायो ।
ऐसो उपाव कोई करीए यह ठउर रहे नही लेत छिनायो ।८।३४४।

दोहरा——तवै राव कहलूर के कीनो एक उपाउ ।
बिदा कीओ प्रधान को अबै तुरक पै जाउ ।६।३४५।

सवैया——जाइ कही सुलतान ही सौ हम सौ इन जोरनि जोरि करी है ।
मारि लीए तिह गाव सबै जु अबै कैहलूर पै चोट धरी है ।
जानीन जाति करैगे कहा सु यहै विधि जानि के सिसटि डरी है ।
कीजै अबै उपरालो हमारा सु किउ न करो तुमहू जु सरी है ।१०।३४६।

दोहरा——आनि तुरक के करि दई राजा की अरदास ।
तुरक कहिओ इक और सौ जाहु तास क पास ।११।३४७।

सवैया——तउ सुलतान कहिओ इक ओर सौ जाहु अबै इह कै संग भाई ।
सीरंद ही वाले को संगि लीए मिलि कै सब जाहु करौ जु चढाई ।
जउ मिलि है तु मिलावहु आन जु नाह मिलै तु करो हथिआई ।
ऐसे विचारिकै फउजै दई मिल कै जु सबै सिरहंदि मै आई ।१२।३४८।

दोहरा——सीरंद मै सिरदार इक रहत तुरक को सोइ ।
संगि फउज केती लई चडिओ निडर मन सोइ ।१३।३४६।

दोहरा——ए कउतक तह मंडि रहे करत तास बीचार ।
नगर नगर की संगते आ पहुची दरबार ।१४।३५०।
राख तबै हजूर प्रभ कर चाकर दरबार ।
मुजरे लीने तिनन के पहिराए हाथिआर ।१५।३५१।

अडिल——महां कातकी जान कि दरसन को अए ।
निरमल भए शरीर कि दरसन जब भए ।
राखे सबै हजूर कि प्रभ पूरन धनी ।
जी ! जो वहु करै सु होइ करी ताकी बनी ।१६।३५२।

दोहरा—रचना सब करतार की जो वहु करे सु होइ।
रहै जु सिख हजूर मै तिह समान नही कोइ ।१७।३५३।
प्रभ पूरन सामा करी रचहु जुध महमंत।
सो समरथ कारन करन भ्रमत मूड बहु जंत ।१८।३५४।

तोटक छंद—लीए संगि समानन औ्रर पठानन कोप चडिओ सिरहंद को सूबा।
तिउ उत ते कैहलूर को राव चडिओ लीए संगि महा दल दूजा।
ऐसे ही गूजर अउर गवार आए जु किते तिह वार न पारे।
यो उमडे चहू ओर अटा मानो घेरत भान को आन घटाते ।१९।३५५।

दोहरा—चहू ओर घेरा परिओ जिउ तारन मै चंद।
तिह समानि छप तब धरी प्रभ कै परम अनंद ।२०।३५६।

सवैया—जैसा नगीना अंगूठी मै होत सु होत है चंद जु तारिअन माही।
जो घन मै बिजरी चमकै दमकै तहा खालसा फौजन माही।
सिंह इकै अरु लछ पसू सब भाजत देखत ही बन माही।
ऐसे मनो तहा खालसा सिंह है ओर नहीं समता जग माही ।२१।३५७।

दोहरा—लगे मोरचे तुकर के ऊपरि चढी कमान।
इत सनमुखि भयो खालसा होत बीर संग्राम ।२२।३५८।

सवैया—तोप छुटै गरजै घन जो लरजै हीअरा सु महांरजै भई माही।
ऐसे मनोज चलै भव चल हलै बसुधा सम तास की आही।
दामनि जियो दमकै तिह ठउर सु लागत जाम गही सु तहाही।
सेत मनो बरखै घन ते तहा गोला चलै समता सु असाही ।२३।३५९।

दोहरा—जिह जनके गोला लगे रहत जीव सोई ठउर।
मन की मन ही है रहत कहत बचन नही अउर ।२४।३६०।
घन उमडिओ चहू ओर ते महा प्रबल बिसंथार।
तिउ दल सत्रन को अयो नाहन परत सुमार ।२५।३६१।

सवैया—सिम्राम घटा उमडै चहू ओर ते यउ उमडे दल दूत के आही ।
दामन जो दमकै तरवार लीए करवार फिरावत ताही ।
सूर की सुआबी ते धार परै घन मै मानो तास कमान की निआही ।
छूटत तीर मनो रन मधि जु सावन की बरखा बरखाही ।२६।३६२।

दोहरा—चलत तीर गंभीर जह अरजन तास समान ।
जिह उर लागत जात बिधि छुटक जात तिह प्रान ।२७।३६३।

सवैया—घाइल घूमत है रन मै जु लरै करि जोर कीओ घन सारा ।
झूमत सूर गिरे धरि पै जु परिउ रन जोर महा विकरारा ।
स्रोन चलिओ तिनके तन ते जु धरी छबयो कर लोथ कनारा ।
जो घन ते बरखा बरखै जु चलिओ परवाह रकत को धारा ।२८।३६४।

सोरठा—सकल समाज बिसार झूझ सूर धर पै परत ।
चलत रकत परवाह इक घाइल रन मै फिरत ।२९।३६५।

सवैया—खेलत सूर महा रन मै बनमै मानो सिआमजी फाग मचाइओ ।
दउरत सूर लीए करमै पिचकारन जो सु बंदूक चलाइओ ।
स्रोनत धारि चली तिनके तन ते मानहु लाल गुलाल लगाइओ ।
बागे बने तिनके तन लाल मनो रंगरेज रंगे रंग लिआइओ ।३०।३६६।

दोहरा—तन भारी कर सूरमा स्रोन रंग भर लीन ।
छिरक छिरक फिर फिर लरत फागन की रुत कीन ।३१।३६७।

सवैया—जोधन जुध रचिओ रन मै बन मै मानो सिआमजी रास मचाए।
बाजे बजे रन मै जु वेई अर नाचत गिध सरोज सुनाए ।
झूमत सूर महा रन मै मानो देखत रास उनीदे से आए ।
लाल निहाली की सेज कीए धर सोवत सूर पलंग बिछाए ।३२।३६८।

दोहरा—बसुधा सम कीनो पलंग रकत निहाली डार ।
महा उनीदे रैन के सोवत पाइ पसार ।३३।३६९।

सवैया—खेलत सूर महां महमत महां बलवंत महा रन पाइओ ।
स्रोन समूह प्रवाह चलिओ तह जोगन पत्र सपूर भराइयो ।
एक सो एक महा बली सूर गिरे धर पै सु ऐहै छब छाइओ ।
पौन प्रवाह चलैं जु तहा धरते जु उरबारके रूख गिराइओ ।३४।३७०।

दोहरा—महा प्रबल रन तह परिओ सहिस्र सकति भूअ भार ।
पत्र पूर जोगनि चलत स्रोनत की तहा धारि ।३५।३७१।
साति पहर लौ रन परिओ महा प्रबल इक सार ।
हटी फौज तुरकान की सतिगुर कीओ बिचार ।३६।३७२।

सवैया—छोडि दीओ तब थान निरमोह को पार भए जब साइर तीरा ।
एक सो एक महा बली सूर परी चल चाल रहिओ नही धीरा ।
कोप चडे जु पठान बेई फिरि जुध मचिओ दरीआउ के नीरा ।
जूझत सूर महा महमत न चिंत भए तजि देह सरीरा ।३७।३७३।

दोहरा—सवा पहिर लौ रन परिओ महा प्रबल इक सार ।
बहुत सूर जूझे तहा तब यह कीओ बिचार ।३८।३७४।

सवैया—प्रभु से पुरख की सरन गहु रे मना आन औ सरब ना दाव तेरो ।
खेल कीनो धनी भरम भूली घनी नाहि राखिओ मान किउहू केरो ।
जीव अरु जंत भरमाइ दीने सकल सबै संसार निंदा सुहोरो ।
कीउ सब जानि प्रमान ऐता कहो राखीए सरनि प्रभ जीव तेरो ।३९।३७५।

दोहरा—राख लीए प्रभ जी तबै ऐसो कीओ बिचार ।
दीए फेर दल तुरक के महा प्रवल बलधार ।४०।३७६।

सवैया—गोबिंदसिंह महा बल धार बिदार दए दल तुरकन केरे ।
ऐसी भई प्रभ की रचना सभि भाजि गए फिर आए न नेरे ।
राव बिसाली को आनि मिलिउ करि जोरि कहिओ हम सेवक तेरे ।
कीनी मया तिह ठउर प्रभू सु कीए तिह ठाव तिंही पुर डेरे ।४१।३७७

इति स्री गुर सोभा जुध निरमोह का नावा धिआइ संपूरनमसतु सुभमसतु ।६।

दोहरा—सरब खालसे ठाव तिह कीओ बिसराम ।
बहुर फौज कैहलूर की भई मुहबल आन ।१।३७८।

सवैया—फेरि मचिओ अति जुध तहा सु जहा कर मै गहि वारि फिराए ।
एक सो एक महा महिमत भिरे बलवंत सु यो गज गाए ।
छूटत है चरखी जु तहा सु तुफंग चलै गढ नेजा बनाए ।
साह सोई गुरू गोबिंदसिंह है बैठि झरोखे गइंद लडाए ।२।३७९।

दोहरा—दउर दउर जोधा अरत मानहु लरत गइंद ।
चलत चाल धरनी हलत बजत सार किलकंत ।३।३८०।

सवैया—बाजत सार सो सार तहा चमकै चिनगी सम तारन जैसी ।
ऐसी बनी रुति सावन की पट बीजन जोति अनूप रतैसी ।
इउ उपजै झुनकार तहा मानो सैल पै बाजत है चमकैसी ।
मानो महा घन मै चमकै दमकै तरवार महा बिजलैसी ।४।३८१।

दोहरा—छुटत महा बंदूक तह चलत तीर किलकंत ।
मानो रब की जोति मै प्रबल मेह बरखंत ।५।३८२।

सवैया—चारिही ओरन ते उमडिओ जु लरै तह खालसे ऐसो कीओ है ।
दासन जो कर मै गहि वार सबै दल मारि बिदारि दीओ है ।
मारि धरी अरि तीरन की जु कीए चलिनी जिम धीर टरिओ है ।
भाज गए कहिलूर के पूर करूर भए सु गरूर कीओ है ।६।३८३।

दोहरा—भाजी फौज कैहलूर की हुई करि सकल अधीर ।
मानो गुन ते छुटक कै भजिओ जाति है तीर ।७।३८४।
जो जो नर गरबत भए दीने भरमि भुलाइ ।
जो जन सिमरत प्रीत करि उइ लीने लडि लाइ ।८।३८५।

कवित्त—कीओ है प्रकास जोति चमकत है चहू ओर,
दीसै रव चंद हू मै तेरी सब जोति है ।
जेते है जीव जंत करनहार तुही है,
पूरि रहिओ सरब ही मै आदि ओत पोत है ।

सेवा जाकी अनूप सुंदर सरूप रूप,
चरन कंवल निरखे ते जन की गति होत है ।
बिनसे है सबै पाप निस दिन प्रभ एक,
जाप चहू ओर आप आप आप ही दिसोत है ।९।३८७।

दोहरा—ऐसो समरथ नामु है ता सम अवर न कोइ ।
जीवन मै भरपूर है जित देखो तित सोइ ।१०।३८८।
ठाव विसाली मै कीए केतक दिन बिसराम ।
खेलन चडे सिकार को फेरि कीओ अंजामु ।११।३८९।

कवित्त—नाव को सिकार कहा कुदरत को करनहार,
जुध को भए सुआर नउबत बजाइकै ।
वे जो कलमोट मो गरूर लोग रहते थे,
घेरा था सिखन को तब मारग मै आइ कै ।
रहे थे पिछारी मै केते ही सिख तहा,
जुध भयो तिन ही सो लीए दोइ धाइकै ।
कहा था हजूर जाइ सिखाने खांवंद जी सो,
घेरी कलमोटि धाइ साहिब ने जाइ कै ।१२।३९०।

दोहरा—तबै खालसे आइ कै घेर लई कलमोटि ।
दहू ओर ते प्रबल ही भई बंदुकन चोट ।१३।३९१।

सवैया—यो उमडिओ दल गोबिंदसिंह को वार न पार सुमार न पाइओ ।
घेर लीओ कलमोट को कोट भई जब चोटि तुफंग चलाइओ ।
मारि करी तिनको अति ही जु करूर भजे प्रभ को बिसराइओ ।
सांग कही सिरवार कही करवार कही जु भए बिकलाइओ ।१४।३८३।

दोहरा—बिआकुल हो ग्रिह ते भजे सब तन भयो अधीर ।
सुध न परी कछु की थरहर करत सरीर ।१५।३९४।
तउ निसान गुरदेव के चढे कोटि परि जाइ ।
नउबति बाजी फते की दीने दूत भगाइ ।१६।३९५।

सवैया—मिलिकै कलमोटि के लोग सबै फिरि जुध को आन भए इक ठौरे ।
मानो अंधेरी चली उडिकै तिन के पग ते बसुधा पर दउरै ।
ऐसी ही साजि चडे तब ही दल देखत मूस भए निरभौरै ।
ऐसे अजान मह अगिआन सु जानत है प्रभ को कछु औरै ।१७।३६६।

दोहरा—मिलिकै सभ कलमोटीअन गहि गाढे मनि धीर ।
तल आन कलमोट के बहुत चलाए तीर ।१८।३६७।
साहिब सिउ केतक कहिओ दल आए है फेरि ।
बचन कीओ कारन करन होवन देहु सवेरि ।१९।३९८।
सगल रैन इह भांत करि चले सु तीर अपार ।
किस ही के लागिओ नही राखि लीए करतार ।२०।३९९।
निस बीती इह भात करि रवि कीनो प्रगास ।
बिदा कीओ ताही समै प्रेम खालसा खास ।२१।४००।

सवैया—दउर परिओ दल गोबिंदसिंह को बाज चलिओ चिरीआन पै धायो ।
ऐसे कुरंग पै सिंह चलिओ तहा खालसा सिंह महा प्रबलायो ।
देखत ही तिह की छबि मूड महा भै मान महा भइ खाइओ ।
भाजि गए रन मै न रहे मानो तीर चलिओ गुन ते छुटकायो ।२२।४०१।

दोहरा—छोड खेत कलमोट को भजे मूड अगिआन ।
फते भई प्रभ पुरख की राजन मानी आन ।२३।४०२।
राजा गड कैहलूर को मिले प्रभू सो आन ।
सतिगुर की सरनी गही चूकिओ मनि अभिमान ।२५।४०३।
प्रबल भयो तहा खालसा सतिगुर कै बलि जान ।
बहुर बिसाली आइओ सतिगुर पुरख सुजान ।२६।४०४।
सब कउतक आपे कीए आपे कीउ उझार ।
फिरि अनंद गड बाधिओ बहु बिधि करि बिसथार ।२७।४०५।
इति स्री गुर सोभा जुध बिसाली कलमोट की फते दसवा धिआई संपूरनम् ।१०।

दोहरा—फेर बसिओ आनंद गड राजन मानी आन ।
बैसाली ते कूच करि बसे प्रभू तिह थान ।१।४०६।

दरसन करै नित खालसा खुसी होत नित नीत ।
सेवा सतिगुर की करै मन अंतरि करि प्रीत ।२।४०७।
नगर नगर ते खालसा आवत है तिह ठउर ।
दरस करत प्रभ पुरख को भरम रहत नही अउर ।३।४०८।
निकटि गाव जेते बसै लए खालसे जीत ।
केतक दिन अर दुइ बरस इहि बिधि भए बतीत ।४।४०९।

चौपई—तबै खालसा ऐसी करै । हुई असुवार गावन पै चरै ।
जो आगे ते मिलने आवै । बसत रहै कछु भेट चडावै ।५।४१०।
करै बिलंम भेट नही देई । ताको लूट खालसा लेई ।
इह बिधि चरचा भई अपारा । तव राजन मन माहि बिचारा ।६।४११।
हमरो राज अकारथ गयो । सतिगुर राज चहू दिस भयो ।
तब बिचार राजन मन आइओ । ठउर ठउर ते लोग बुलायो ।७।४१२।

दोहरा—तब राजन यह बिधि करी सैना लई बुलाइ ।
सकल संग दल जोरि कै निकटि पहुचे आइ ।८।४१३।
फेरि लिखा राजन कीओ सुनहु गरीब निवाज ।
अब छाडो आनंदगड भली बात है आजु ।९।४१४।
प्रभू बाक ऐसो भयो बहु बिधि भए तिआर ।
ठउर ठउर धरि मोरचे होन लगी तिह मार ।१०।४१५।
मिलि राजन ऐसो कीओ वाटि लई सब ठउर ।
चहू ओर ते आवही फौजा दउरा दउर ।११।४१६।

सवैया—तोप छुटे गरजै घन जो लरजै ही अग मानो विज कडक्कै ।
ठउर रहे जिहके उर लागत होत है छाती कै पाट पडक्कै ।
या बिध सो तहि गोला चलै टिक है नही सूरमा ताही कै धक्कै ।
राजन के अवसान गए जब आनंद कोटि ते तोप छुडक्कै ।१२।४१७।

दोहरा—जिह जनके गोला लगे रहे जीव सोइ ठउर ।
मन की मन ही मै रहत कहत बचन नही अउर ।१३।४१८।

सवैया—कहि को कहि बान छुटै कहि काहक ऐसे अवाज करै रन मै ।
तहा डार सुआर पछारत घोरन मारत ठउर नही पन मै ।
तिह भांत यहै कर डारत है मनो दाधी सी चोब खरी बन मै ।
गिरहै परहै करहै इह भांति सु केतक मार लए छिन मै ।१४।४१६।

दोहरा—तोप बान गोली चलै छूटत तीर अपार ।
सावन जो भारी भरनि इव बरसै नितसार ।१५।४२०।
चडै सिंह दल साजि कै परै फउज मै धाइ ।
तहा मारि इह बिधि करी राजे दीए उठाइ ।१६।४२१।
बहुत राव मारे तहा जोधा बडे अपार ।
मिलि राजे मसलत करी किआ करीए करतार ।१७।४२२।
सिंह बहुत इह बिधि करति तिह समान कही नाहि ।
बडे सूरमा अति बली मारि लीए रन माहि ।१८।४२३।

चौपई—राजे भाजि तुरक पै आए । सब तुरकन को भेद बताए ।
अब हमरो उपरालो कीजै । आनंद गड हमको लै दीजै ।१९।४२४।
तुरक सभै मिलिकै उठि धाए । सामा करी बेग ही आए ।
बहुत मुगल अर घने पठान । चडे साज दल चाब पान ।२०।४२५।
गूजर रंघड बहुत अपार । बडे बडे जोधा असवार ।
सीरंदवाले है हमराही । गड लाहौर ते फउज मंगाई ।२१।४२६।

दोहरा—बहुत फउज करि एकठी जंमू संग मिलाइ ।
सब राजा दल जोरि कै फेर पहुचे आइ ।२२।४२७।
खबर सुनी कारन करन फेर कीओ फुरमान ।
ठउर ठउर धर मोरचे बैठि रहे तिह थान ।२३।४२८।
तीर बान गोली चली बरखै धुआ धार ।
तिह पाछे मिल सूरमे करन गही तरवार ।२४।४२९।

सवैया—भभके सिंह जब जाइ रन मै परै कीउ संग्राम इह भात पूरा ।
बजै सार सो सार तरवार चमकै घनी मिलित दोनो अनी बजत तूरा ।
छूटत है तीर तहा धीर किस ही रहै लगै जिह जाइ छाडै सरीरा ।
करै मार ही मार चहू ओर ते धाइ कै लरत तिह ठउर इह भांति सूरा ।२५।४३०।

दोहरा—एक सूर सनमुख लरै करत बीर संग्राम ।
एक भाजि पाछै भिरै तिन ते होत न काम ।२६।४३१।

चौपई—सूर सबै ऐसी बिधि करही । धाइ धाइ फउजन मै परही ।
भिरै सूरमा बहुत अपारा । करत मार केते हथिआरा ।२७।४३२।
ऐसी मार भई तिह थाने । बापहि नाहि पूत पहचाने ।
बहुत सूर जूझे धरि पर ही । इक घाइल है पाछे पर ही ।२८।४३३।
एक सूर सनमुखि उठि धावै । वे मरने ते बिलम न लावै ।
पकरै ससत्र बसत्र जो लेही । धुबीआ जो अउरन सिर देही ।२९।४३४।

दोहरा—एक भाजि पीछे फिरे एक घाइ बेहाल ।
एक जूझ रनमै परे सकली समझ बिसार ।३०।४३५।
देखि तबै राजन कहिओ किआ करीए करतार ।
सिंह बहुत इह बिधि लरत नाह न परत सुमार ।३१।४३६।

छपै—लरत सिंह इह भात फउज मै परत धाइ कर ।
काटत है तिह मूड धरत पर परत आइ धर ।
इह बिधि करि संग्राम सूर रन माहि मचावै ।
निमख बिलम नही करै लोथ पर लोथ गिरावै ।
कीने प्रहार इह भात कर देख राव पाछे फिरे ।
दीने बिडार भाजे अपार केते सुआर कर मै करे ।३२।४३७।

दोहरा—बिनो करे घघिआइकै इह बिधि करै करार ।
फेर न आवै जुध मै जो छुटै इह बार ।३३।४३८।
तजै गाव कैहलूर के बसै अउर दिस जाइ ।
छाड दए ताते तबै भाजे पंख लगाइ ।३४।४३९।
केतक दिन इह भात करि बहुत प्रबल भई मार ।
तब राजन मसलत करी सकल सभा बीचार ।३५।४४०।
तुरकन राजन सो कहिओ या ते भली न अउर ।
घेर लेह चहू ओर ते बैठि रहो तिह ठउर ।३६।४४१।

चौपई—गूजर रंघड़ अउर पठान । राजे परे चहू दिस आन ।
घेरि नगर भाति यह कीनी । मनह रसत सबही करि लीनी ।३७।४४२।
आवन जान न कोऊ पावे । तहा रसत कैसे करि आवे ।
केतक दिन बीते बिधि याही । एक रुपीस सेरु बिकाही ।३८।४४३।
चारि सिख पानी को जावै । दो जूझै दो पानी लिआवै ।
ऐसी भाति खेल प्रभ करी । पिरथी अनक देख कै डरी ।३९।४४४।

दोहरा—इह बिधि सो भारी कठन आन बनी तिह ठाइ ।
जो कछु अंदरि सो मिलै सोई सिख सब खाइ ।४०।४४५।

चौपई—एक रुपयै सेर बिकावै । सो भी ढूढत हाथ न आवै ।
मिलि जो धन इह भात निहारा । अपने मन के बीच बिचारा ।४१।४४६।
केतक सिंह यहै बिधि करही । राति समै फउजन पर परही ।
कर संग्राम अंन तहा लीना । पोट बाधि केतन सिर दीना ।४२।४४७।
केतक करत जुध तिह ठाई । केतक पोट लीए सिर जाही ।
इह बिधि अंन बहुत लै आए । केतक दिन इह भांति बिताए ।४३।४४८।

दोहरा—तब इह बिध सूरन करी केतक दिन गुजरान ।
खरच खात पूरन भए फिरि पहूचे तिह थान ।४४।४४९।
तब राजन इह बिध करी धरिओ तहा अंन घेर ।
निस बासुर जागत रहै फउज फिरै चहू फेरि ।४५।४५०।

चौपई—फिरत फउज तब सिंह निहारे । अब किह बिधि कीजै बीचारे ।
नाहन राहु कहो कित जावै । मारग कउन रसत ले आवै ।४६।४५१।
करो जुध होव सो होइ । अब मुख फेर चलौ मतु कोई ।
परै सिंह फउजन मै धाई । कीओ जुध सब दीए उठाई ।४७।४५२।
गिरी लोथ पै लोथ अपारा । तब राजन मन माहि चितारा ।
होइ इकत्र सब ही उठि धाए । चहू ओर ते सूर रिसाए ।४८।४५३।

दोहरा—लरत लरत दिन दुइ गइओ तब राजन इव कीन ।
चहू ओर दल साज कै घेरि सिंह सभ लीन ।४९।४५४।

चौपई—चहू ओर दल परा अपारा । मारि मारि कहि उठे पुकारा ।
घिर घिर चोट करै अति भारी । लरै सिंह मारै किलकारी ।५०।४५५।
बरखे तीर मेह अति भारा । गोली लागै जाहि दुसारा ।
लगै तेग तिह तन बिसरावै । परै बान कछु बिलम न लावै ।५१।४५६।
ऐसो जुध भयो तिह भारा । परी लोथ पै लोथ अपारा ।
जपै खालसा सुरति न और । जूझे सिंह सबै इक ठउर ।५२।४५७।

दोहरा—तब सिखन मिलकै करी सतिगुर पै अरदास ।
सिंह गए थे रसत को सबन तजे मिल सास ।५३।४५८।
बिना हुकम वे किउ गए सतिगुर कही सुनाइ ।
मुकति कीओ तिन सबन को जो जूझे रन पाइ ।५४।४५९।
सदा कमर बाधे रहै दरसन देख अघाइ ।
जो कछु मिलै हजूर ते तबै सिख कछु खाइ ।५५।४६०।
निस बासुर जागत रहै फिरत रहै चहू ओर ।
इहि बिधि चउकी देत है मति चडि आवै चोर ।५६।४६१।

चौपई—इस ही भाति कई दिन गए । नगर लोग ठाढे सभि भए ।
दरकै आगै करी पुकारा । अंनि बिन जीऊ जाइ हमारा ।५७।४६२।
देखहु यह हवाल अब भयो । रहे हाड चामि उडि गइयो ।
बिना भोजन जीवन अब नाही । सो बी जैहै साझ सुबाही ।५८।४६३।
इह बिधि नगर सबै हठि रहिओ । ताहि समै प्रभ ने इम कहिओ ।
केतक दिन तुम और बितावो । फिर मन इछे भोजन खावौ ।५९।४६४।

सोरठा—छाडे ते आनंद गड होत बीर संग्राम ।
बडे सिंह जोधा बली जूझे तिह थान ।६०।४६५।

दोहरा—सब सिखन ऐसे कहिओ बुरा होत नही कोइ ।
छाडि चलो आनंदगड भली बात है सोइ ।६१।४६६।

चौपई—सतिगुर कही सुनो बिधि साई । बुरा होत तुमरे सिर भाई ।
यउ सबसो तउ हद लिखवाए । होहु तयार तबै फुरमाए ।६२।४६७।
नगर भयो इह भांति तयार । बाधे बोझ लीयै सिर भार ।
सामा सबहू कूच का कीनो । आपन बोझ आप सिर लीनो ।६३।४६८।

सामां सबै कूच का कीना[1] । सिखन बाट खजाना दीना ।
सबन पांच हथिग्रार बधाए । सिंह सूर बनि बनि सभि ग्राए ।६४।४६६।

दोहरा—ग्रौर वसतु जेती हुती दीनी सबै जलाइ ।
छोडि चले ग्रानंदगड निमख बिलम नही लाइ ।६५।४७०।

इत स्री गुरसोभा ग्रानंदगड का जुध दूसरा यारखां धिग्राइ संपूरनमसतसुभमसतु ।
।११।

दोहरा—सतिगुर किरपा ते कहो धिग्राव बीर संग्राम ।
जथा सकति उपमा कहो जोधन के परकाम ।१।४७१।
साही टिबी ग्रानिकै खडे भए तिह थान ।
राजा ग्ररु तुरकान सब निकटि पहूच ग्रान ।२।४७२।
उदेसिंह ललकार कै खसी करी करतार ।
सफल जनमु इह भात कहि दूतन करो संहार ।३।४७३।
उदेसिंह को छोर कै चलि ग्राए तिह ठउर ।
बाग देखि बैठे तहा निकटि गाव चमकौर ।४।४७४।
खबर सुनि जिमीदार ने मध बसे चमकौर ।
सुनत बचन ततकाल ही वहु ग्रायो उठि दउर ।५।४७५।
हाथ जोरि ऐसे कहिग्रो बिनती सुनो करतार ।
बसो मधि चमकौर कै ग्रापनी क्रिपा धारि ।६।४७६।
तब सुग्रार साहिब भए छाडि बाग की ठउर ।
सिंह साथ सबही लीए ग्राइ बसे चमकउर ।७।४७७।
तब दूतन कीने लिखे तुम चलि ग्रायो दउर ।
सिंह रहैं हैं ग्रान कै निकटि गाव चमकउर ।८।४७८।
ठउर ठउर कीने लिखे ऐसे दूत गावार ।
उदेसिंह पीछे रहा सुनहु ताहि बीचार ।९।४७९।
राजा ग्ररु तुरकान सब निकटि पहूंचे ग्राइ ।
उदेसिंह तिन मै परिग्रो निमख बिलम नहीं लाइ ।१०।४८०।

---

1. साहिब न कीना (पाठान्तर)

झूलना सवैया—दउर कै धाइ जब जाइ रनि मै परिश्रो भले ग्रसवार रन मै पधारे ।
गिरी है लोथ छवि यौ धरी ताहिकी बसत्र सूके धरे सर किनारे ।
स्रोन के रंग मै लाल हुइ भुइ परे मनो रंगरेज रंग रंग डारे ।
पउन परवाह इह भाति भारी बहिश्रो गिरे है रुख ऐसे ग्रपारे ।११।४८१

दोहरा—पहर एक लौ रन परिश्रो यहां प्रबल इस सार ।
उदैसिह जूझै तबै सतिगुर सरन बिचार ।१२।४८२।

सवैया—केते सिख साथ लै लै हथिश्रार हाथ
परे जाइ फउजन मै भारी रन करही ।
किनहूं तरवार किनही लीनी ब्रछी संभारि
मुख ते कहि मारि मारि धाइ धाइ परही ।
कोऊ चलावै बान किस ही कर मै कमान
मारत है तीर धीर लगे तेन धरही ।
ऐसी करी है मारि नाहन कछु वारि पारि
लोथ के कीए पहार ऐसे सिंह लर ही ।१३।४८३।

दोहरा—पहर एक लौ ए लरे सिंह सबै इक सार ।
लरत लरत जूझै सबै सतिगुर सरन बिचार ।१४।४८४।
ताहि समै दल देखिकै होइ रहै हैरान ।
ग्राप करन कारन कहा देखि रहे सब थान ।१५।४८५।
लिखे बहुत चमकौर ते तबै पहूचे ग्रान ।
करि सामा फिरि जुध की सब पहूचे तिह थान ।१६।४८६।
ठउर ठउर धरि मोरचे तबै पहुचे ग्राइ ।
रचौ जुध ताही समै दई पलीती लाइ ।१७।४८७।
चहू ग्रोर सब दल खरे बीच सिंह गोबिंद ।
ताहि समे छबि यौ कहो जिउ तारन मै चंद ।१८।४८८।
गिरद ग्राइ सब दल खरे खेत बार जिउ होइ ।
तिह समान घेरा परे चहु दिस राह न कोइ ।१९।४८९।

सवैया—मानो घटा उमडी चहू ग्रोर ते यौ उमडे दल दूत के ग्राई ।
घेरि लई चमकउर सबै सु रहिश्रो नही राह कहो कित जाही ।

चारो दिसा दल ग्रान परे तह देखत सिंह उठे भभकाही ।
साहिब सिम्रो तब लेत खुसी मनमै करि ग्रानंद जूझन जाही ।२०।४६०।
ग्राज मनजूर परे दर गोबिंदसिंह ही कै जु कहै सब ही ।
करि मै गहि वार जुझार बड़े रन माहि परे न रहे तब ही ।
सब ग्रापस मो मिलि लेत खुसी ऐसो ग्रबदाव भयो न कबही ।
सब ग्रंत की बार संभारि प्रभू कर है इव सार लरै जबही ।२१।४६१।
गरज कै सिंह जो जाइ रण मै परे कीउ है लोह ऐसे बताए ।
किसी तरवार जमधार नेजा किसी किसी बंदूक तीरो चलाए ।
सूर संभारि हथिग्रार पाचो करे मारि ही मारि जोधा गिराए ।
भए भै मान पैजानि ऐसी समै काल के रूप इम सिंह ग्राए ।२२।४६२।

चौपई--दउर दउर फउजन मै पर ही । सिंह सबै ऐसी बिधि करही ।
बजे सार सो सार ग्रपारा । झड झडाक बाजै झुनकारा ।२३।४६३।
पड पडाक धरती पर परही । जूझे सूर बहुत तह मरही ।
इक घाइल है गिरे बिहाला । एकन ग्राप तजे ततकाला ।२४।४६४।
इकि भाजे फिरि निकटि न ग्रावै । इक सनमुखि है जुध मचावै ।
लरै सिंह इह भांति ग्रपारे । चड़ी खमार भए मतवारे ।२५।४६५।
गोली लागै जाहि गिरीने । बसत्र लाल ग्रंग सब कीने ।
चहू ग्रोर चमकै तरवारी । छुटै तीर कछु वार न पारी ।२६।४६६।
गोली लागै जाहि दुसारा । बरसै सेत महि ग्रति भारा ।
जूझै सिंह सबै इक सारा । जपै खालसा बारंबारा ।२७।४६७।

दोहरा--ताहि समै कारन करन लीनो सिंह बुलाइ ।
कही सिंह रणजीत सो दूतन देहु सजाइ ।२८।४६८।
बिनउ करी करि जोरि कै खुसी करउ करतार ।
करउ बीर संग्राम मै देखउ ग्रापि निहारि ।२९।४६९।

सवैया--भई ग्रस वाज ग्रब जाह रण जीतसिंह तुम करहु संग्राम दूतन संघारो ।
खुसी ताही समै लई गुरदेव सौ ग्रान रन माहि दलको निहारो ।
करी ग्रावाज ग्रब ग्राउ ग्रर मान जिह सकल दल देख दउरे ग्रपारो ।
घेरि चहू दिस लीउ ग्राइ तुरकान ने करत संग्राम रणजीत भारो ।३०।५००।

छपै—ता दिन गडहु रण खंड सिंह रणजीत धरत पर ।
धरत लरज उठी धूर भान छिप गयो आप घर ।
पवन मंद हुइ रही रैनि भई दिवस छपानो ।
लरजे सकल अकास तोप छूटी परमानो ।
बजिओ निसान तिहु लोक मै सुनि देवन मन यउ भयो ।
चडि चडि बिबान देखन चले सु संकर समेति नही को रहिओ ।३१।५०१।

दोहरा—तहां आन जोगनि खरी नारद वावै तूर ।
जीतसिंह रण मै मडिओ होत पत्र भरपूरि ।३२।५०२।
चहू ओर दल देखिकै कर मै गहि कमान ।
इह बिधि चलत अपार सर सावन मेह समान ।३३।५०३।
जिह सर लागत जाइ कै रहत नाहि अरुमान ।
मानहु मंडप खोखरो गिर गिर परत पठान ।३४।५०४।

छपै छंद—कर मै गहै कमान जुध कीनो असरासर ।
जिह उर मारत तीर फोर बखत्र सुजात सर ।
लगै ताहि को आन मान कर रहत सोइ कर ।
भूलत है घर बार सबै सुध जात बिसर कर ।
मारे पठान इह भाति कर जीत सिंह तिन मै परो ।
कर सो कमान तजि सांग गहि सु केते हथिआरन लरो ।३५।५०५।

दोहरा—दोरिओ दल मै धाइ कै लै कर सांग बनाइ ।
मारत जिह असवार के छिन मै देत गिराइ ।३६।५०६।

सवैया—चलो रणजीत जब जाइ रण मै परो कीओ संग्राम एसे अपारे ।
लोथ पर लोथ तह डारि केती दई भभक करि रकत हुइ चले नारे ।
लीए करि सांग तिह आंग पर धरति है तवै ततकाल तिह ठउर मारे ।
भुजन पै जोर करि लेत उठाइकै सबन दिखलाइ भुइ माहि
डारे ।३७।५०७।

दोहरा—लेत परोइ पठान को सबहन सांग दिखलाइ ।
देखत ही सब करत है अरे आई खुदाइ ।३८।५०८।

सवैया––भांत इह जुध रणजीत भारी कीओ सभै दल वाहि वाहि कहि पुकारे।
तहा मार सागन धरी सिंह ऐसी करी लोथ पर लोथ कीने किनारे।
रकत दरीआउ हुइ चलौ तिह मधि ते बहिओ परवाहि नही वार पारे।
अस्व पैरत फिरै सूर ऐसी करै आपने हाथ दल यउ संहारे।३६।५०६।

दोहरा––करत मार चारो दिसा जीतसिंह असवार।
सांग तजी करते तबै गह लीनी तरवार।४०।५१०।

सवैया––टूट कै सांग दुइ टूक हुइ भुइ परी गही तरवार दल बहुत मारे।
एक के सीस धरि दुइ टुकरे करे दुइ के सीस धरि करत चारे।
भांत इह पूर परवार दीने कई रकत दरीआउ मै परे सारे।
गिरे बिकराल बेहाल सुध कछु नही परे रण माहि सब कछु
बिसारे।४१।५११।

दोहरा––बहुत जुध भारी भयो निकटि गाव चमकउर।
जिहके मारत वार गहि तिह राखत है ठउर।४३।५१२।
कीउ जुध इह भांत करि बली सिंह रणजीत।
बडे सूरमा जे हुते चुन मारे इह रीत।४४।५१३।

सवैया––लरत रणजीत तिह ठौर ऐसा कीओ कई दल मथन कै मारि डारे।
लई तरवार अर वार ऐसे करे करै दुइ टूक भुइ मारि डारे।
स्रोन भारी बहियो उमग दरीआउ जो परी है लोथ मानो किनारे।
अस्व पै रत फिरै सूर ऐसी करै कीउ संग्राम ऐसे अपारे।४४।५१४।

दोहरा––लरत सूर संग्राम मै करि लीनै तरवार।
बडे सूर मारे तहा फउजन के सिरदार।४५।५१५।

दोहरा––तब सब कटक इकत्र हुइ परे चहू दिस धाइ।
करमै गहि करवार सब निकटि पहूचे आए।४६।५१६।

सवैया––देख तबै बिधि ऐसी भई रुति फागन जो मानो खेलन आयो।
लागति सांगन्न तेगनि तीर तुफंगन स्रोन चलिओ भभकायो।

ताहि समै छवि ऐसी भई मानो लाल गुलाल को रंग बनायो ।
बागो बनो जिहके गल लाल मानो रंगरेज अबै रंग लिआयो ।४७।५१७।

दोहरा--तन भारी कर सूरमा स्रोन रंग भरि लीन ।
छिरक छिरक तन रंगिओ फागन की रुत कीन ।४८।५१८।

सवैया--आन जोगन खरी लीए पत्र अरी करो भरपूर रणजीत पिआरे ।
तुम बिना कौन यह पत्र पूरा भरे कउन संग्राम यउ करे भारे ।
गिध मंडलात अर नाच नारद करै सूर अनगिनत तहा ठउर मारे ।
जुध भारी भयो मधि चमकउर के कीउ संग्राम ऐसे अपारे ।४९।५१९।

दोहरा--लगी कार असवार कै कीनो काम अपार ।
पीओ पिआला प्रेम का मगन भयो असवार ।५०।५२०।
ताहि समै ऐसे कहिओ गोबिंद सरन बीचार ।
आज खास भए खालसा सतिगुर के दरबार ।५१।५२१।

सवैया--रास रचै बन मै हरि जी छबि ता दिन ताही कीयौ रण पायौ ।
बाजत सार सो सार अपार करै छुनकार सु यौ धुन लायौ ।
सूर सबै मिलि खेलत फागन देखत रास उनीदे ही आयो ।
लाल निहाली की सेज कीए धर सोवत सूर पलंघ बिछायो ।५२।५२२।

दोहरा--हित चित कै ताही समै चरन कवल सो धिआन ।
वाहगुरू मुखते कहिओ समै अंत की तान ।५३।५२३।

सवैया--देखन को बिध यो ही भई प्रभ की गति की कोऊ का मिति जाने ।
जूझ परे कि गए कितहूं दिस देखि रहै किनहू न पछाने ।
लोथन मै नही लोथ परी निकसे कितहू किनहू नहीं माने ।
एक बिचार बिचार कीओ कोऊ ताको बिचार बिचार न आने ।५४।५२४।

दोहरा--जब देखिओ जुझारसिंह समा पहुचिओ आन ।
दौरिओ दल मै धाइ कै करमै गही कमान ।५५।५२५।

सवैया--दल मै जु धसिओ बलवंत बली इह भांत सो तीर चलावत है ।
जिह के उर मारत देत गिराइ परे रन मे विललावत है ।
गिरी लोथ पै लोथ अपार तहा खरी जोगन पत्र पूरावत है ।
इह भांति जुझार करै रन मार सु यों रण मै रण पावत है ।५६।५२६।

छपै छंद--करमै गहे कमान तीर इह भांत चलावै ।
जिह उर मारत धाइ जाति विध बिलम न लावै ।
निकसै जाइ दुसार गिरै असवार अंत तहि ।
छिन मै तजे परान तीर लागंत जाइ जिह ।
मारे पठान इह भांत कहि चहु ओर लोटै परै ।
नाहन सुमार ऐते अपार ऐसे जुझार तिन मै लरै ।५७।५२७।

दोहरा--चहू ओर दल देख कै निकटि पहूचे आइ ।
तब नेजा कर मै लीओ निमख बिलम नही लाइ ।५८।५२८।

कवित्त--ऐसे ही चलिओ जब बरछी फिरावै हाथ,
लेत है परोइ मानो फूल पोइअत है ।
गूंदने को हार झार झार डारी घन सार,
पउन परवाह बहिओ ऐसो जोइअति है ।
बरछा लगावै जाइ लेत है परोइ ताहि,
सबन दिखलाइ डारयउ बिरोइअत है ।
स्रोन को अगम नीर देखि कै रहै न धीर,
ताही मै लोथ डार यौ डबोईअत है ।५९।५२९।

सवैया--या बिधि सो लर है तह सूरमा केतक मारि लए छिन माही ।
डार सुआर बिथार घने तह देखत भाजि परे हट जाही ।
मार ही मार पुकारत है सब तीर तुफंगन चोट चलाही ।
या बिधि देखि गही करि तेग सु सिंह परो रण मै भभकाही ।६०।५३०।
करत संग्राम जो जाइ रण मै परो अरो इह भांत नहि टरत सूरा ।
लीए तरवार अर वार ऐसे करे एक दे दोइ करि करत पूरा ।

लोथ पर लोथ तह डार कती दई पउन परवाह चल परंत कूरा ।
मार तेगन धरी सिंह ऐसी करी लरत जुझार बाजंत तूरा ।६१।५३१

सवैया--दल मै जु धसिओ कर मे गहि तेग करी विधि यौ मिलि सूरन संगे ।
हाथ सो वार गहे जिनके तिनके सिर देत है तेगन संगे ।
या बिध सौ रन डारत है मिल कै सब सूर गए तिह संगे ।
देख जुझार रहिओ तब ही अब कउन उपाव करौ प्रभ संगे ।६२।५३२।

जोर जुरावर सिंह चडौ रन मे जु परो तिह ऐसे करो है ।
एक सो एक को दोइ करे दुइ चार करै दल ऐसो दरो है ।
इत ते उत जाइ फिरै उत ते फिरि मधि परै नह नैक डरो है ।
सांगन नेजन तीरन तेगन सूरन के संग ऐसो लरो है ।६३।५३३।

कवित्त--खैंचत खडग जद मारत सडक,
गिर परत तडक असवार आगे ताही के ।
गिरत बिहाल बिकराल सुध नाही कछु,
लोटत धरत जो कपोत सुत ताही के ।
ऐसे मारे असवार एक एक झार झार,
मानो के बग बिआर पति बिरथा ही के ।
कौन है कहै बिचार नाही कछ पारावार,
जुरावर सिंह दल मारे राई राई के ।६४।५३४।

दोहरा--पटक पुटक कै कटक को झटक निकसि गयो पार ।
जोरावर प्रभ जोरि करि राख लीओ करतार ।६५।५३५।
संतसिंह ताही समै गहि लीनी तरवार ।
दौरिओ दल मै धाइ के फेरन ऐसी बार ।६६।५३६।

कवित्त--ऐसो ललकारत है पास ते पचारत है,
सूरन को मारत है डारत है रन मो ।
तीखी तरवार सिंह ताही सौ करै जु वार,
चमकै या भांति मानो दामनि जो घन मो ।

तीरन सो भयो मेह लगे उर मिजी देह,
लाग रहे याही बिधि रोमन जो तन मो।
ऐसी भई है मार नाहन कछू पारावार,
मानो आज फूल डोल खेल चले बन मो।६७।५३७।

सवैया—परो जो जाइ खुनसाइ ताहि समे कीओ संग्राम ऐसे अपारे।
तेग संभार के देत असवार कै करै दो टूक भुइ माहि डारे।
झारि कै स्वान ते जीन खाली कीए सूर आनेक तिह ठउर मारे।
बहुतु घाइल भयो स्रोन तनते गयो जूझ कै खेत मै यो बिचारे।६८।५३८।

दोहरा—कहै खालसा खालसा दूसर अउर न आस।
वाहगुरू मुख ते कहिओ संत सिंह तजे सास।६९।५३९।
बहुत सूर जूझे तहा जोधा बडे अपार।
गहि कमान ताही समे भए आप असवार।७०।५४०।

सवैया—तबही गहि बान कमान गही कर मै सजि कै दल को उठि धाए।
मारत तीर बिलंमु नहीं कछु चोट पै चोट करै धुनि लाए।
ताहि समै प्रभ कौतक कै इक दूत ने चोट करी खुनसाइ।
यौ प्रभ जी करनी इवही इक उंगल पोर रही तिह ठाए।७१।५४१।

दोहरा—प्रभ रचना ऐसी भई चले अवर दिस धाइ।
पै किनहू पेखिओ नही इम प्रभ भए सहाइ।७२।५४२।

सवैया—जो दल मै दल बाकी रहे मिलि के सब ही चमकौर पै धाए।
साहिब जादे लीए गहि कै मिलि कै जिन को सब सीरंद लाए।
भारी जबाब जुझार दए सुनिकै सब दूतन अंग पिराए।
यो प्रभ की करनी तब ही दोऊ जूझत ही प्रभ लोक सिधाए।७३।५४३।

दोहरा—धंनि धंनि गुरदेव सुत तन को लाभ न कीन।
धरम राख कल मो गए दादे सो जस लीन।७४।५४४।
फते सिंह जुझार सिंह इह बिधि तजे प्रान।
प्रगट भए तिह लोक मै जानत सकल जहान।७५।५४५।

इत स्री गुरसोभा संग्राम जुध चमकौर का बारवा धिआइ संपूरनमसत सुभमसत।१२।

दोहरा--निरंकार अपार गति बहु विधि करि विसथार ।
सबै छाडि छिन मै दीओ रहिओ सु एकंकार ।१।५४६।

सवैया--छोड चमकौर करतार ताही समे रूप यौ धारि दिस औंर आयो ।
छोड धन धाम सुत बंधदारा सबै एक अंकार हो यौ दिखायो ।
सरब समान छिन माहि ऐसे तजे भेखि निरबान के रूप आयो ।
सिंह गोबिंद इम फेर रचना रची धरन आकास ताते टिकाओ ।२।५४७।

दोहरा--निरंकार आकार करि मनसा मनि बीचार ।
मुकत करन करावन हार प्रभ समरथ सिंह गोबिंद ।
कला धारि प्रगट भयो चहू दिस भयो अनंद ।४।५४६।

सवैया--कलि मै कलि धारि अकारि कीओ करि आपन दूत संहारन कौ ।
चमकी दिस चार हू जोत महा जग पाप समूह बिडारन को ।
करि खालस जाप दए हरि ने हिथआर अपार जुझारन को ।
गुर गोबिंदसिंह कीओ इतना भव सागर पार उतारन को ।५।५५०।

चौपई--रूप अनेक प्रभु इम धारे । जीव कहा गति ताहि बिचारे ।
तब प्रभ बैसरन महि आए । सब सिंहन मिलि दरसन पाए ।६।५५१।
जनम जनम की मैल बिनासी । नैनन पेखिओ प्रभ अबिनासी ।
चिंता फिकर गयो दुख चूरे । दीनो दरस जबे गुर पूरे ।७।५५२।
अउगुन मेटि सबै गुन कीने । ऐसा दान दइया करि दीने ।
अधम करम तजि त्रिमंल भए । सतिगुर सरनी सिख जो गए ।८।५५३।

दोहरा--साइर एक अपार सर सुभर भरिओ तिह नीर ।
तिह था कीनी छावनी गोबिंदसिंह प्रवीन ।९।५५४।

सवैया--सिंह गोबिंद तिह ठउर कीनी मया बजै घनघोर अनाहद पूरा ।
पठै सिंह दिन रैनि तिह ठउर इह भांत बानी गुर मारू सु बाजंत तूरा ।

कथै मुखि पाठ कव छंद संग्राम क सुनत आनंद सो सबै सूरा।
भयो जैकार त्रई लोक चउदह भवन सुने ते दूत कापे स्रीरा।१०।५५५।

भनक प्रभ की तबै सुनी दूतान ने फौज सीगार के फेरि धाए।
देख ऐसे कहिओ जाहु संग्राम को फेर वे फौज लै तुरक आए।
सिंह चारो दिसा दौर दल मै परे सिंह सिंहान हूजै सहाए।
मारि ऐसी करै सूर ताही समै भए गहि गडि दल यौ गिराए।११।५५६।

खेत कैसान तिह भात ऐसा कीओ धरन ते धरत पै मूंड डारै।
तेग चौगान अर सीस बंटा करे खेलते सिंह गोबिंद पिआरे।
लोथ वीचार बिसथार केता कहौ पौन परवाह पत होत झारे।
मार अपार तिह ठौर ऐसी भई भाजि कै दूत सारे सिधारे।१२।५५७।

भाजि तुरकान मैदान छोडै तबै खेत सिंहान के हाथ आयो।
कीउ बीचार करतार मन मै इतो साह को भेद चहीयै सुनायो।
दया को सिंह तिह साजि सीगार कै खुसी करतार करकै पठायो।
करी तसलीम तिह हुकम को देख कै सीस पै बाध ताते सिधायो।१३।५५८।

कही समझाइ करतार ताही समे लिखा औरंग के हाथ दीजो।
साथ सहाइ यौ जान मेरा बचन नाहि मन माहि कछु संक कीजो।
तीन दो पाच लै खालसे पासि ते खरच दरबार बीचारू लीजै।
साहि पै जाइ दरि आइ दरबार मै बेग फुरमान तयार कीजो।१४।५५९।

दोहरा—बिदा भयो ताही समै प्रभ को सीस निआई।
अहदी भेस बनाइ कै चलिओ सिंह तब धाइ।१५।५६०।

भुजंगप्रयात छंद—कीओ अहिदीअं भेस बेंग सिधायो।
तिनै गाव गाव बिगारं बुलायो।
कीए कूच केते करी है लगारं।
किते दिउस मै आइ दिली मझारं।१६।५६१।

मिली साध संगति महा सूख पायो ।
हुकम काढिकै ताहि ताते बचायो ।
लीए दास जेते लिखे ताहि नामं ।
चले कूच कै कै कीओ एह कामं ।१७।५६२।

आए आगरे काम कै कै सिधाए ।
लखी चंबलं छोडि गुलएर धाए ।
आए नरवरं काल बागं सिर जैनं ।
दई छोडि के सोइ आए उजैनं ।१८।५६३।

लखी नरबदा पार पै ले सिधारे ।
गए मालवे के महा को सभारे ।
गडं देखि आसेर ताते पधारं ।
आए नगर बुरहान पूरं मझारं ।१६।५६४।

कीउ बाहने असब ताते सिधायो ।
कीए कूच अउरंगाबाद आयो ।
कीउ काम ताते तहा ते सिधायं ।
तबै लसकरं अहिमदा नगर आयं ।२०।५६५।

सभे सोदरं बेदरं सिंह आयो ।
किनी गंज मै जेठ सिंह बताओ ।
रहे धाम ताके सुरैनं बितायो ।
भई भोर ते धरम सालं सिधायो ।२१।५६६।

सवैया—सिंह ताही समै आन दछन दिसा मेल सतिसंग बीचार कीना ।
कहो जिह भाति तिह भांति अरजी करो सार को लिखा सिंह गोबिंद दीना ।
बाक बीचार बिसथार केता भयो भरम भूले जिवे बेदि रीना ।
हुकमु करतार का मान के खालसे प्रीत सो आपके सीस लीना ।२२।५६७।

दोहरा—मन बच क्रम कर भावनी अति तिह चिति मन लाइ ।
निस दिन सेवा सिंह की करे खालसा जाइ ।२३।५६८।

चौपई—माइआ के मद जोजन फूले । ऐडे फिरै हुकम ते भूले ।
फीके बैन कहै अति भारी । प्रभ की क्रिआ न नैक बिचारी ।२४।५६९।

जिह दिस घात सिंह कछु धरै । इही अपाव अरजको करै ।
ताकी भनक मूड सुनि पावै । तिह ढिग जाइ मनै करि आवै ।२५।५७०।
अनिक अपाव सिंह ने करे । छंद बंद कछु नेक न सरे ।
लिखी कथा प्रभ पास पठाई । दया करो इम होहु सहाई ।२६।५७१।

सोरठा—दया सिंह अरदास लिखि भेजी प्रभ को तबै ।
आपन काज सुधार, हुई सहाइ अब प्रभु जी ।२७।५७२।

दोहरा—जोरी एक बुलाइ कै कासद करा तयार ।
सो पठाए प्रभ पै तबै आ पहुचे दरबार ।२८।५७३।
प्रभू बाच अरदास को पाच हुकम लिख दीन ।
आपन काज सुधारने आप सहाइ इम कीन ।२९।५७४।
कासद फिरि इत ते चले ते मारग मंझार ।
अब लीला उत की कहो जो कीनी करतार ।३०।५७५।

चौपई—काबू एक सिंह करि आयो । सिंह साथ उन भेद बनायो ।
ताहि बिचार अरज इम करी । वरकी हाथ साह के परी ।३१।५७६।
तामै लीला लिखी अपारा । भांत भांत सो साह बिचारा ।
ताकी तनक भनक इम कही । सरब कथा की मिति नहीं लही ।३२।५७७।

सवैया—साहि औरंग को लिखा इह भात सौ चाहता आप तुहि पास आयो ।
कौल बिकौल सब लोग तेरे भए जंग को भेद ऐसे बतायो ।
राव राजे घने आन रन मै तने भए है अन मने तितन धायो ।
देखि कै चेत बीचार एता यही सिंह तुहि पासि याते पठायो ।३३।५७८।

भुजंगप्रयात छंद--महा बोझ है सीस पै जान तेरे।
भए कउल बेकउल सो लोग तेरे।
लिखा है तुझे जान ईमान सगे।
करोगे कहा जीव करतार मंगे।३४।५७६।

सुखन मरद को जान मै जान राखे।
सुखन बेसुखन अउर की अउर भाखे।
दिलो जान से काम को जान कीजै।
करोगे जरुरी नही ढील दीजै।३५।५८०।

कि असवार हजार सो साथ आवै।
भली फौज सौ सिंह डंका बजावै।
किलेदार औ फौज दारं अपारं।
सूबे जात है राह कै बीच सारे।३६।५८१।

बा फरमान को तयार कै भेजि दीजै।
लिखा ठउर ही ठउर को आप कीजै।
हुकम साह का जो कबी हाथ आवै।
चलै कूच कै कै इही मोहि भावै।३७।५८२।

सवैया--देखि बीचार मन माहि ऐता कहिओ कउन संजोग करतार आवै।
लिखा कै देहु ताकीद दराबार मै सिंह ततकाल या ते सिधावै।
गुरज दरबार फुरमान भेजा तबै सिंह गोबिंद के पास जावै।
जोर कर बेनती जाइ ऐसे कहो रहो तिह ठउर जहा जीव आवै।
३८।५८३।

दोहरा--गुरजदार फुरमान लै दया सिंह कै संगि।
विदा कीए ताही समै बादसाह औरंग।३९।५८४।

भुजंगप्रयात छंद--गुरजदार अर सिंह ताते सिघाए।
लिखे पांच दरबार ते हुकमु आए।

भयो धीरजं जीव मै साति आई ।
हुकम वार बीचार कै कै सुनाई ।४०।५८५।

पउडी—बिरद बाणे दी पैज रखदा आइआ ।
हुकमा दे बिचि लिख सतिगुरां पठाइआ ।
कछु न करो बिसवास इउ फुरमाइआ ।
सुणिआं मन संतोख बहुत सुख पाइआ ।
जी ! निंदक मुठे रोइ जिनी जनमु गवाइआ ।४१।५८६।

पउडी—खास कलम करतार लिखिआ न डरो ।
दया सिंह के नाल कंम सामल करो ।
निमख बिलम नही होइ कार ऐसी करो ।
सतिगुर सौ कर प्रीत दुरमत मन ते हरो ।
जी ! जुगु जुगु होइ सहाइ धिआन तिनका धरौ ।४२।५८७।

सुणिआ सुख समूह दुख गवाइआ ।
बिनसे सगल कलेस भरम चुकाइआ ।
चिंता फिकर बिसार इउ फुरमाइआ ।
रहो संतसंग निसंगि दुख लगे न काइआ ।
जी ! कर संतन को प्रीत मेल सवाइआ ।४३।५८८।

जो जन करसी कार हुकमु इओ लिखिआ ।
तिसदी पूरन घाल पूरी दीखिआ ।
तिस नूं सोभा अपार सतिगुर आखिआ ।
जरा मरन नहीं होइ जम पंथ न पेखिआ ।
जी ! सो जन सदा हजूरि जुगो जुगु रखिआ ।४४।५८९।

जो कहिआ करतार किओ बिरथा जावए ।
जो मंनै सो प्रवान इउं ही भावए ।
सिरसाहां दे साह हुकम मनावए ।
मंने सो जिण जाइ पदवी पावए ।
जी ! गोबिंदसिंह धिआइ ता बण आवए ।४५।५९०।

बचन सुणे करतार का जो रिदै बसावै।
मन इछे फल पावए जो कार कमावै।
मूरख कबै न चेतई मन मै गरबावै।
काग कपूर तिग्राग कै दुरगंध लुभावै।
जी ! जो भावी ग्रंकूर होइ सो प्रगट ग्रावै ।४६।५६१।

इक निंदक इक खालसा करतें इउ भाइग्रा।
जुग जुग खेल वरतदा एवे हुंदा ग्राइग्रा।
जिसनूं रखे रहै सो जिनि धुरो लिखाइग्रा।
मूरख एक न जाननी दूजे भरमाइग्रा।
जी ! जम पुर बधे मारीग्रनि फिरि पछोताइग्रा ।४७।५६२।

सति संगति बिच बैठि कै बोलै हंकारो।
भै साइर किग्रो लंघसी किउ उतरे पारो।
किउ करि दरगहि सिवसी करि देखि बिचारो।
लोहा कंचन किउ थीए भावै जिउ जारो।
जी ! सतिगुर पारस जे मिलै छिन मै बिसतारो ।४८।५६३।

ग्रति ग्रपराधी जे थीए कुल की घात करे।
खोटो खोट कमावई इत मंदे ग्रमल करे।
पर निंदा चोरी करे हरि जसु नहि उचरे।
बचन करे हित लाइ पर धनु नित हरे।
जी ! सतिगुर चाहे बकस क तिह को साधु करे ।४६।५६४।

सभ तेरी तू सभा सिदा को किधर जावै।
पुत कपुती जे करे पिग्रो मुखहु न पावै।
भावै केता भरमणा जे सरणी ग्रावै।
ग्रउगण मेटे गुण करे भी माहि समावै।
जी ! गोबिंदसिंह दइग्राल है सतसंग मिलावै ।५०।५६५।

जो कहिग्रा करतार सो रिदै बसावण।
तजि प्रपंच बिकार नहीं ललचावण ।
दूजा भाव मिटाइ इकै धिग्रावणा ।
चरन कवल सो प्रीत भरम चुकावणा ।
जी ! बाधि पाच हथिग्रार दरसन ग्रावणा ।५१।५६६।

इती स्री गुर सोभा कला प्रगास धिग्राइ तेरवा ।१३।

दोहरा—बहुत दिवस बीतिउ तहा प्रगट कहो बीचार ।
दयासिंह इत ते चलिग्रो उत ते सिरजन हार ।१।५६७।
दया सिंह दछन दिसा लागी बहुत ग्रवार ।
सिंहन को साहिब कहिग्रो सबै होहु तईयार ।२।५६८।

सोरठा—मारवार के राह दिस दछन को कूच है।
सबै होहु तईयार प्रभ इम कही सुनाइकै ।३।५६६।

सवैया—भए तयार हिथिग्रार पांचो कसे सिंह तिह ठउर बन बेग ग्राए ।
एक सो एक बलबंत सूरा सरस टांक दुइ तीन ग्राफू हडाए ।
देखि करतार तिह ग्रोर ऐसे कहिग्रो ग्रनीके जुग्रान है दिसट ग्राए ।
ग्रसुव बानी सरस साजि सीगार के बेग ले ग्राव ऐसे बताए ।४।६००।

तुरकी ग्रसु ग्रछ सुपछि बडो तिह ऊपर पाखर ग्रान धरी ।
छव सोहत जीन जरा इनकी सब साजि समेत ग्रनूप खरी ।
गजमोतन के गुल बंदन के कलगी सिर सोभ जराव जरी ।
बरनो छबि यो चल चाल चलै छिप है तिह देखत हूर परी ।५।६०१।

दोहरा—चंचल चपल चलाक है ग्ररु गति ग्रनक ग्रपार।
बरन चेहन सुंद्र सरस रूप दीग्रो करतार ।६।६०२।
ग्ररदास कीनी ग्ररदासीए ग्ररज सुनीए क्रिपा धारि ।
ग्रति सुंदर बाणी सरस भयो ग्रसुव सईयार ।७।६०३।

सवैया—ताहि समै प्रभने इसनान कीउ करकै हथिम्रार संभारे ।
लै तिनको इसनान दीउ कर ग्राप अगोछन पोछ सुधारे ।
काठि तिनै चमकाइ चहू दिस मिम्रानन मै जब ही निखारे ।
खेल अपार करे करता जन जीव कहा गति ताहि बिचारे ।८।६०४।

दोहरा—तोसकची ताही समे बसत्र सबै कर कीन ।
ग्रागे सतिगुर के धरे पहर तबै सब लीन ।९।६०५।

सवैया—सीस पै ताज लै सोन कलगी धरी लाल हीरे जरी जगमगावै ।
हीर पना खरे ग्रौर मोती जरे झलक छब सोभ ताकी सुहावै ।
झोक ऐसे लसै जोत फुंदन दिसै सोभ ग्रापार नहीं बरनि ग्रावै ।
प्रगटि प्रचंडि त्रईलोक सोभा करै पेखे तिह संत सुख सब पावै ।१०।६०६।
चिलता करि कै सब साजही सों बरनो हथिम्रार कहो सब ही ।
कटि सो तरवार बनी जमधार ग्रालीबंद ढाल फबै जबही ।
दिस दाहन बान कमान सजै करमै बरछा करौ छिनमै ही ।
सब दूतन छार करो छिन मै कहि गोबिंदसिंह चडे तबही ।११।६०७।

दोहरा—वाहगुरू जी की फते कहिकै भए सुम्रार ।
भयो डंक त्रिह लोक मै चडत करी करतार ।१२।६०८।

सवैया—डंकन घोर सुघोर भई सुनि कै पुरीम्रा सबही लरजी ।
लरजे ससि भान भिम्रान भए किह कारन काजि चडिम्रो हरिजी ।
त्रई लोक ग्रलोक सबै लरजे सिवजी कैलास पति यो डरजी ।
सुन सेस महेस सुरेस बडे लरजे सिंह गोबिंद के डरजी ।१३।६०९।
भए भैमान पातार ग्राकास कहिम्रो करतारि दिस दछि ग्रानो ।
कौन कारन प्रभू फेर दछन दिसा भए सुम्रार कैसे कि मानो ।
सिध साधक सभौ भए भैमान ग्रबे कौन की कान गुर की नसानो ।
डंक की घोर सुनि लंक कंपी चडत सिंह गोविंद ऐसे बखानो ।१४।६१०।

दोहरा—करत कूच ग्राए तहा राजपूतन के देस ।
ग्रान ग्रान राजा मिले जोधा बडे नरेस ।१५।६११।

चौपई––सिंहन सिख न मनमै आनी । उन उचरी प्रभ सो इम बानी ।
होहु दइआल बिआह प्रभ करो । तउइ मग पग आगै धरो ।१६।६१२।

रुआमलछंद––सुनत बचन बिगास सो प्रभ सब सामा कीन ।
हुकमु सिंहन को कीओ मंगवाइ सबै कछु लीन ।
साज सामानो सबै आनंद तूर बजाइ ।
बिआह करि कै आपना प्रभ चले ताते धाइ ।१७।६१३।

दोहरा––दया सिंह ताही दिसा मिला प्रभू सो जाइ ।
गुरजदार दिली गयो वहि उस गहि न जाइ ।१८।६१४।
जिह गावन खालसा परे लूट कूट तिह लेत ।
गाव बचे राजा मिले भेट प्रभू सो देत ।१६।६१५।
जो राजा करि जोर कै मिलत प्रभू सो धाइ ।
बसहै देस अनंद सो तों ढिग कोइ न जाइ ।२०।६१६।
जो मन मै गरबत रहै मिलना उंन नही कीन ।
लूट कूट कै खालसे भुंच ताहि कउ लीन ।२१।६१७।
कूच करत मारग चलत इही भांत सो जात ।
आगे को मारगि नहीं सुनी प्रभू इम बात ।२२।६१८।

चौपई––वहु दिस छोड अवर दिस धाए । कूच करत केतक इव आए ।
चडि घाटी के पार सिधाने । प्रभ सो बात कही इक आने ।२३।६१६।
औरंगसाह गउन करि गयो । जगते बिदा भांति इह भयो ।
छोडि गयो सब मुलक खजाना । काल ग्रसिओ बल कछु न बसाना ।२४।६२०।

दोहरा––कूच कीउ प्रभ न तबै लै धोरन को तंग ।
भांत अनेकन देखीए जा सुलतानी जंग ।२५।६२१।

चौपई––केतकि दिन प्रभ और बिताए । कूच मुकाम करत चलि आए ।
बिरछ एक दीरघ अति घना । सुंदर सर सरूप तिह बना ।२६।६२२।

दोहरा—अधिक ठउर देखी तहा हुइ है तहा न घाम ।
उतर रहे ताही तले कीने तहा मुकाम ।२७।६२३।
कीचक भूम देखन नमित गए प्रभ तिह ठउर ।
आन पहूचे ताहि दिस निकटि सहर बाधौर ।२८।६२४।

चौपई—सहर बाघौर आप जे आए । लोग तहा के अति डर पाए ।
तिनहू करी जुध की सामा । कबहु लूटि लेह ए धामा ।२९।६२५।
अति अपार जिन फौज निहारी । सूरबीर जोधा हितकारी ।
करि सामान देस इह आए । इनके भेद जात नही पाए ।३०।६२६।
गहि गहि ससत्र बसत्र गहि गाढे । करि समान जुध को ठाढे ।
पूछन को इक पठिओ बारी । पूछो इनो जाइ बिधि सारी ।३१।६२७।
चलि आयो वहु प्रभ के धामा । दोइ करि जोरि कीउ परनामा ।
पूछी बात प्रभू पहि जाइ । कवन भूम ते या दिस आए ।३२।६२८।
नगर लोग मनमै अति डर ही । इह बिधि अरज प्रभु सो करही ।
डेरा निकटि सहर के दए । लूटन काज आन ठहरए ।३३।६२९।
धरम सिंह प्रभ तहा पठायो । बारी सिंह ताहि लै आयो ।
गुरू बीर ताके घरि जाई । सरब कथा इह भांत बताई ।३४।६३०।
कीच जुध ठउर तिह भयो । देखन ताहि आप प्रभ अयो ।
तुम मन मै कछु संक ना आनो । हमरी बात सति करि जानो ।३५।६३१।
ताते तिन न सांहि मनि आई । इन की बाति उनन मनि भाई ।
धरम सिंह प्रभ पै तब आए । और ठौर डेरा फुरमाए ।३६।६३२।
लकरी घास नीर तहा घना । बाग अजाइब अतभुत बना ।
तिह ढिग उतर कीओ बिसरामा । गोबिंदसिंह गुरू तिह नामा ।३७।६३३।
ताको लोग मिलन जे आए । तिनन इनाम प्रभू फुरमाए ।
तिनके संगि ताहि जे गए । कीचक जुध भीम सो भए ।३८।६३४।
बरकनदाज संगि प्रभ लए । और सिंह प्रभ संगि न गए ।
जिनके नाम प्रभू फरमाए । तेई सिंह साथ को धाए ।३९।६३५।
कोस एक ऊचे चडि आए । देखी ठाव तबै फरमाए ।
वे जो सिंह साथि लै आने । ठउर ठउर कीने प्रभ थाने ।४०।६३६।

सिंहन ठउर बाटि इम दई । आपि बाटि डेरन की लई ।
केतक दिन तिह ठउर बिहाने । ऊंठि रूख बागन के खाने ।४१।६३७।
माली भाजि राव पै आए । सगरे रूख बाग के खाए ।
भोजन हेत ऊठ जे आए । तोरि तोरि सब ही उन खाए ।४२।६३८।
सुनत बचन मन माहि रिसाए । कोप भरे अति ही गरबाए ।
तब प्रभ सो कछु नाह बसानी । मन मै राखि बात इम ठानी ।४३।६३९।
सिंह एक किही काज सिधायो । तन के दस माहि वहु आयो ।
तनक भनक तिन सो भई रारा । जुध भयो तिन के संगि भारा ।४४।६४०।
कोप सिंह भगवती निकारी । केतक दूत हने बलकारी ।
जुध होत सभ सिंह निहारे । गहि गहि ससत्र उठे ललकारे ।४५।६४१।

दोहरा—बैठे सिंह पहार पै देखिओ जुध निहार ।
दई पलीती तिनो ने हुइ गए लोग सथार ।४६।६४२।
कोप भयो मन मै तबै निकसे सूर रिसाइ ।
रण मंडण जोधा चले निमख बिलम नहीं लाइ ।४७।६४३।

सवैया—कोप कै सूर जो जाइ बुरजो चडे कीउ संग्राम घमसान भारी ।
चले तीर गंभीर बंदूक छुटै घनी आनि लागी अनी यौ बिचारी ।
गरज घन जो करी लरज ऐसी परी कोप कै तोप छोरी सुमारी ।
पत्र पूरन भरन आन जोगनि अरी डाकनी चावडी चीतकारी ।४८।६४४।

चौपई—सूर सूर की ओर निहारै । पकरै ससत्र ताहि चुन मारै ।
जिउ भुअंग अंग कोऊ ग्रसै । तैसे ससत्र सूर को ग्रसै ।४९।६४५।
तनक मनक तन मै नही रहै । जिह तन वार सूर का बहै ।
लागै वार सूर तिह कारी । भूले देह ग्रेह सुध सारी ।५०।६४६।
परे भूम कपरा जिम डारे । रंग रंग रंगरेज सुधारे ।
ऐसी भांति सूर तहा परे । दोइ रात अरु दुइ दिन लरे ।५१।६४७।

दोहरा—जब तीसर दिन आइओ तब प्रभ कही सुनाइ ।
धरम सिंह तुम यौ करो देहु दरेरा जाइ ।५२।६४८।

धरम सिह धायो तबै लए सिंह ललकार ।
दरवाजे ढूके सबै कहत मार ही मार ।५३।६४६।

सवैया—ससत्र संभार ललकार सिंहान की राजन कै सूर ऐसे सिधाए ।
आन देवार तिन लंग गड की लई कीओ घमसान केतान धाए ।
मार अपार हथिआर भारी भए सूर पै सूर गिरकाम आए ।
छोडि कै पौर की ठउर ऐसे गए सिंह चल पउर की ठौर आए ।५४।६५०।

दोहरा—दरवाजे आए तबै सिंह सबै खुनसाइ ।
मसलित कै ऐसे कीउ दीनी आग लगाइ ।५५।६५१।

सोरठा—जल बल भयो अंगार दरवाजा टूटो तबै ।
सिंह सबै इक सार अंदरि को धाए जबै ।५६।६५२।

सवैया—तोरि कै पउर जबै सिंह आगे गए सामुहे सूर ललकार आए ।
गहे तरवार ललकार ऐसे परे जान दरीआउ जे उमडि आए ।
सूर अर सिंह मिलि जुधु ऐसो भइओ लोह लुहार जैसे बनाए ।
चोट पै चोट अर ओट करतार की सार की बार मै सिंह धाए ।५७।६५३।

चौपई—मिलन सूरन सूं रन इम कीना । तन मन अरप प्रान करि दीना ।
मन अपने को लोभन जाना । भिरे सूर योधा बलवाना ।५८।६५४।
गहि गहि भुजा भुजन ते लेही । सीस फिराइ डारि कै देही ।
जो धुबीआ पट पै पट डारे । तैसे सूर सूर को मार ।५९।६५५।
परी लोथ पै लोथ अपारा । गिरे परवरीआ वार न पारा ।
लै लै सूर प्रेम के पिआले । पी पी मगन भए मतवाले ।६०।६५६।

दोहरा—बहुत सूर मारे तहा भाजे अनक अपार ।
दूजे दरवाजे गए सिंह सबै इक सार ।६१।६५७।
धाइ परे ता मैं सबै दीने दूत भगाइ ।
तीजे दरवाजे अरे सिंह सूर खुनसाइ ।६२।६५८।

चौपई—तामे घमंड रहे बलवाना । एक न मानत तिनकी आना ।
एक सिंह प्रभ पै चल आयो । आनि ताहि तह भेद बतायो ।६३।६५९।

दोहरा—एक सिंह प्रभ सो कहिओ वह जो अधक पहार ।
तोप जाइ तापै चडे भाज भरम गवार ।६४।६६०।
जबर जंग प्रभ ने लई ता असथान चडाइ ।
केतक चोटन के चले दीने दूत भगाइ ।६५।६६१।

चौपई—पीछे पउर पर सिंह जो धाए । जो कछु हाथ लगा सो लिआए ।
प्रभु सो आनि कही इम बाता । गड देखउ चलि पुरख बिधाता ।६६।६६२।
सुनत बचन प्रभ अधिक रिसायो । ताहि समे मन मै इम आइओ ।
अवर बिचार कछू नही कीना । भए सुआर कूच करि दीना ।६७।६६३।
कूच कीए साहिब चलि आए । परी बहीर सिंह सभि धाए ।
खबर कूच की उन सुन पाई । दउरी फौज फेरि चलि आई ।६८।६६४।

दोहरा—सिंह पछारी मै रहे आई फौज अपार ।
जुध भयो जूझे कित घाइल भए अपार ।६९।६६५।
जुध करत जोधा सबै चलि आए तिह थान ।
आप प्रभू ठाढे तहा जहा पहूचे आन ।७०।६६६।
दुइ राजा जोधा बली भए मुहबल आन ।
गहि कमान सर साधिओ सतिगुर पुरख सुजान ।७१।६६७।
ताहि समै ऐसे कहिओ धरम सिंह चलि आव ।
एक राव हनि हो अबै दूसर पै तुम जाव ।७२।६६८।

सवैया—सिंह जो भभक कै लपक ऐसी करी बेगही राव के पास धायो ।
राव कछु वार कीने न कीनो गही सिंह तरवार इक बार लायो ।
घाव कारी भयो स्रोन तन ते गयो होस भूली तबै भूम आयो ।
काटि कै सीसु तिह बेगही लै लीओ दूसरो राव मन मै रिसायो ।७३।६६९।
पकर कै ससत्र संभारि तापै परो चाहतो वारि तिह ओर पायो ।
आप संभार सरि साध ताही समे ऐच कै तीर ऐसे चलायो ।
तोर हीअरो पार पैले भयो जूझ के रावि सुरगै सिधायो ।
भाजि कै फौज बाधौर दउरी गई सिंह गोबिंद डंका बजायो ।७४।६७०।

दोहरा—भजी फौज बाघउर को मारि लए सिरदार ।
कूच जहानाबाद को करि दीनो करतार ।७५।६७१।
साह जहाना बाद को कीनो कूच अपार ।
कथा साहि के गउन की करत तास बीचार ।७६।६७२।

इत स्री गुर सोभा कीचक मार धिआइ चउधवा ।१४।

दोहरा—दिस दछन अहमदनगर अजब अजाइब थान ।
करम काम ता दिस रहिउ नउरंग साह सुजान ।१।६७३।

चौपई—अहमद नगर अजव इक थाना । नउरंग साह तहा ठहराना ।
तेरह मास तहि भूम रहिओ । पायो काल काल बसि भयो ।२।६७४।
सहरन सहर धूम परि गई । भारी बात अनिक बिध भई ।
अनिक ठउर इह भांति लुटानी । राज बिराजी सबहन जानी ।३।६७५।
सुनी खबर आजम चलि आयो । जब लसकर उन आन बचायो ।
सीस अपने छत्र झुलाना । फेरी दिस दछन मै आना ।४।६७६।

दोहरा—तब आजम बैठे तखत मन मै हरख बठाइ ।
कर सामा संग्राम की चलियो बिलम नहीं लाइ ।५।६७७।

चौपई—जब ते नउरंग साह सिधाना । आजम राज आपने जाना ।
छत्र आपने सीस झुलायो । डंका देत हिंद को धायो ।६।६७८।
ताकी खबर साहि सुनि पाई । कूच कीउ कछु बिलम न लाई ।
दिली निकटि आप जब आयो । लिखा कीउ प्रभ पास पठाइओ ।७।६७९।

दोहरा—करि जोरे ऐसे कहिओ निमख बिलम नही लाइ ।
इह सुलतानी जंग मै तुम प्रभ होहु सहाइ ।८।६८०।

चौपई—वई बात प्रभ ने सुनि पाई । लिखिओ दिलासा ताहि पठाई ।
संका नेक जीव नहीं आनो । निहचे राज आपनां जानो ।९।६८१।
ताते सांति साह मन आई । करि निहचे प्रभ सो लिव लाई ।
आन जा जऊ जुध मचायो । आजम मारग जात न पायो ।१०।६८२।
बजे सार पै सार अपारा । कीनो प्रबल सबल रण भारा ।
प्रबल कथा करि अलप सुनाई । आजम मीच भाइ इह पाई ।११।६८३।

सवैया—चडे दल साजि पै लाज नैना भरे साह आजम अरे जोर कीनो ।
भिरे महमंत बलवंत सूरा सरस एक ते एक कोऊ नहीं हीनो ।
परी है मार सिरदार जूझै घने गिरो सुलतान जब डग सगीनो ।
राज पै काज संग्राम भारथ कीउ लोह की लाज पै जीव दीनो ।१२।६८४।

दोहरा—सानी आजम साह की अवर नहीं सुलतान ।
लोह लाज जिन रण बिखै ऐसी करी निदान ।१३।६८५।
जूझ परै रण मो तबै सु तन सहित इम जान ।
ऐसी किनहू न करी जानत सकल जहान ।१४।६८६।

सवैया—सुनी जो साहि बिगसाइ ऐसे कहिओ सुकर दरगाह तेरी इलाही ।
कीउ है फैजु मुहि आपनो जानि कै रहम की नजर ते फतेह पाई ।
बीर जोधा बली धांक जाकी भली संग थे खूब जाके सिपाही ।
जीव ताका लीओ ताज हमको दीउ अजब है खेल तेरे खुदाई ।१५।६८७।

दोहरा—सुकर कीउ दरगाहा मै जुध फते जब कीन ।
छत्र सीस अपने तबै सहि बहादर लीन ।१६।६८८।

चौपई—साह बहादर छत्र झुलाना । फेरी देस देस मै आना ।
कीए मुकाम आगरे माही । चार मास बरसात बिताई ।१७।६८९।

दोहरा—बादसाह ढिग आगरे कहत ताहि बीचार ।
साह जहानाबाद मै आ पहुचिओ करतार ।१८।६९०।
इत स्री गुर सोभा मजकूर बादशाही का पंदरवा धिआव सपूरेन सुभमसत ।१५।

चौपई—दिली निकटि प्रभू जब आए । संगत खबर सुनि सुख पाए ।
अनिक हुलास जीव मै आयो । सरव खालसा लैनि सिधायो ।१।६९१।
गाडी रथ केतक मंगवाए । थोरन पै चडि अनिक सिधाए ।
पाइ पिआदन केतन चाले । पी पी नैन पान के पिआले ।२।६९२।

मधभार छंद—करिकै बिचार । सिखं अपार ।
सबदं उचार । एको निहार ।३।६९३।

भव भै उतार । भरमं विदार ।
हुइ हरख वंत । पेखिस्रो बिग्रंत ।४।६६४।
चिंता बिसार । डिड़ जीव धारि ।
मन मै ग्रनंद । सब तोर फंद ।५।६६६।

दोहरा—मन बच क्रम कर भावनी सतिगुर सो लिव लाइ ।
ग्रनंद भयो प्रभ पेखियो सिखन सतिगुर ग्राइ ।७।६६७।

ग्रडिल—साह जहाना बादि प्रभू जब ग्राइ कै ।
कौतकि करे ग्रपार प्रभू बिगसाइकै ।
जमना केतक पार जहा डेरा कीउ ।
जी ! कीनो सिसटि उधार दरस ऐसे दीउ ।८।६६८।

चौपई—केतक दिन तिह ठउर बिताए । फर कूच प्रभ ने फुरमाए ।
चलत चलत ग्राए तिह थाना । मथरा नगर प्रभू मनि भाना ।९।६९९।
देखी ठवरि प्रभू बिगसाए । सूरज कुंड धाम फुरमाए ।
तब बिचरात दिसट हरग्राना । केतक दीउ दिजन को दाना ।१०।७००।
मथरा देस प्रभू जब ग्राए । पुनि बिंद्राबन ग्राप सिधाए ।
देखी कुंज गली सब ठउरा । देखी छाव ग्रधिक इक ग्रौरा ।११।७०१।

दोहरा—ग्राप ग्रान बैठे तहा ग्ररु मिसटान मंगाइ ।
राख दीउ मैदान मै बंचर भुंचत खाइ ।१२।७०२।
ग्रापस मै लर लर मरत किलकत ग्रति खुनसाइ ।
कउतक तिनके ग्रनिक बिधि देखि प्रभू बिगसाइ ।१३।७०३।
ग्रनिक भांत लीला करी विंद्रावन मै ग्राइ ।
गउन कीउ प्रभ ने तबै चले ग्रागरे धाइ ।१४।७०४।

चौपई—कूच कीउ ताते उठि धाए । पंथ चलत केतक दिन लाए ।
कोस चार ग्रागर जब रहा । करो मुकाम प्रभू इमकहा ।१५।७०५।

दोहरा—बाग एक देखियो तह उतर कीउ बिसराम ।
कोस दोइ ताते रह बादशाह के धाम ।१६।७०६।

खान खाना सुनकै तबै दीने लोग पठाए ।
बिनो करी करि जोरि कै दरस दिखावो श्राइ ।१७।७०७।

चौपई—ग्रनिक भांत प्रभ फौज सुधारी । सूर बीर जोधा हितकारी ।
लैके संगि ग्रापि प्रभ धायो । लसकर बादशाह के ग्रायो ।१८।७०८।
डहरा बाग ग्रजब इक थाना । बसि है तहा खान ही खाना ।
क्रिपा धार तहां घरि ग्राए । तिसहि ग्रान कै दरस दिखाए ।१९।७०९।

दोहरा—दरस देख ऐसे कहिग्रो बहुत किरपा तुम कीन ।
ग्रपनो ही मुहि जान कै दरस ग्रापनो दीन ।२०।७१०।

चौपई—चरन कवल को हाथ चलाए । थापी दइ प्रभू बिगसाए ।
तब तिन ग्रपनो हाल दिखायो । रछा करी प्रभू फुरमायो ।२१।७११।
ग्रादर बहुत प्रभू का कीना । ताही समें बिदा कर दीना ।
हाथ जोड इह भांति बताए । उतरो धाम प्रभू तुम जाए ।२२।७१२।

दोहरा—बिदा भए ताही समै चलि ग्राए तिहथान ।
ठउर एक देखी तहां रात करी गुजरान ।२३।७१३।
मेह कहै बरखौं ग्रबै बहुर न ऐसो दाव ।
ग्राप प्रभू ग्राए ईदा ग्रान करो छिरकाउ ।२४।७१४।
रैनि गई बासर भयो भए ग्राप ग्रसवार ।
बाग एक निरखियो जबै डेरा कीउ बिचार ।२५।७१५।
ग्राप प्रभू ताही समे कीउ बाग मै धाम ।
ठउर बांट सब को दई कीउ ताह बिसराम ।२६।७१६।
केतक दिन बीतत भए यादि साहि इम कीन ।
प्रभ ग्राए कारन कवन हम को दरस न दीन ।२७।७१७।
कहि भेजी प्रभ सो तबै दया करो करतार ।
दरस दिखायो ग्रापना ग्रपनी क्रिपा धारि ।२८।७१८।

चौपई—सूर सिह प्रभ निकट बुलाए । होहु तिग्रार तबै फुरमाए ।
चडत करी ऐसे प्रभ धाए । डेरन बादसाह के ग्राए ।२९।७१९।

दोहरा—आन साह कै धाम पै सूर खरे तहा कीन ।
आप धाइ अंदरि गए सिंह संगि इक लीन ।३०।७२०।
खास डेवढी आन कै तहा सिंह खलवाइ ।
आप प्रभू अंदर गए अपनो रूप बनाइ ।३१।७२१।

चौपई—चडी कमान ससत्र सब सारे । कलगी छब है अपर अपारे ।
लटकत चलत तरा चलि आए । साह पास बैठे इम जाइ ।३२।७२२।
साह आप तिह ओर निहारा । दरसन देख भयो मतवारा ।
तन मन धन ते अधिक बिकाना । कवल देखि जो भवर लुभाना ।३३।७२३।
धंन धंन प्रभू अलख अपारा । निहचल कीनो राज हमारा ।
दया धारि हमरे घरि आए । तखत बखत तुम ते प्रभ पाए ।३४।७२४।
कलगी अउर धुग धुगी आनी । खिलअत एक साह मनमानी ।
साह प्रभू को भेट चडाई । खुसी करो तुम सो बन आई ।३५।७२५।
ताहिं समै प्रभ ने फ़ुरमायो । अंदरि साहि पै सिंह बुलायो ।
बसत्र ताहि पास उठवाए । बिदा भए प्रभ डेरे आए ।३६।७२६।
करत अनंद केल प्रभ घनी । प्रभ की उपमा प्रभ को बनी ।
एक दिवस की कथा बखानो । उमडी सिआम घटा अति मानो ।३७।७२७।

सवैया—मानो घटा उमडी चुहू ओरन ते रंग सिआम बने गज आए ।
माते मतंग भिरे इह भांतन जेती कहो सब तेती सराए ।
पेल दीओ गजने गज को इत ते उत को इह भांत उठाए ।
साहन साह प्रभू हमरो तिह बैठ झरोखे गइंद लराए ।३८।७२८।
थानन ते छुटकै दोऊ कुंचर तोर जंजीरन सामुहे आए ।
सूढ सो सूढ मिलाइ दई पग सो पग जोर करे खुनसाए ।
रीझ परी बिगसिओ करता तिनके सिरदारन दाम दिवाए ।
साहन साह प्रभू हमरो तिह बैठ झरोखे गइंद लराए ।३९।७२९।
दउरे धाइ बरोबर जाइ मिले दोऊ आइ सुनो गज खाइ ।
आपस मो मिल टकर लेत करे इह भातन जोर सवाए ।
एक भजे इक पाछे परो अत पेलत जात महा बल लाए ।
साहनसाह प्रभु हमरो तिह बैठे झरोखे गइंद लराए ।४०।७३०।

दोहरा—लीला ग्रनक ग्रनेक बिध ग्रनदिन करत बिहात ।
सब कउतक कैसे कहो कछु कछु बरनत जाति ।४१।७३१।

चौपई—केतक मास ग्रवर दिस भए । ग्रनंद केल सो दिवस बितए ।
देस देस ते संगति ग्रावै । दरसनु ग्रगम पुरख को पावै ।४२।७३२।
कछु इक कथा साह की ग्राई । चाहत साह ग्रवर दिस जाई ।
राजपूतन पै ग्रति धुन लाइ । साह बहादर उतै सिधाए ।४३।७३३।

दोहरा—बाग फोडि प्रभ जी तबै गउन तहा ते कीन ।
सेत बाह पुर ग्रान कै धाम ताल पर दीन ।४४।७३४।

ग्रलप दिवस कछु तहां बताए । साहिब जोरावर सिंह ग्राए ।
ग्रनद भयो बिधि ग्रनिक ग्रपारा । दया करी पूरन करतारा ।४५।७३५।
ग्रनिक भांत मंगल गुण गाए । ग्रनिकभांति बाजन बजवाए ।
याचत जाचक ग्रान ग्रपारा । दीए इनाम ग्रनिक बिसथारा ।४६।७३६।
ऐसी दाति करी प्रभ दाते । ग्रलख निरंजन पुरख बिधाते ।
ग्रनिक भाति प्रभ जी बिगसाना । ग्रनिक हुलास जीव मै ग्राना ।४७।७३७।
ग्रनिक बधावा ग्रनदिन गावत । सरब ग्रनंद सिख सब पावत ।
केतक दिवसन ग्रवर बितायो । कीनो कूच साह पै धायो ।४८।७३८।

इत स्री गुर सोभा मुलाकात बादसाह की सोलवा धिग्राइ संपूरन ।१६।

भुजंगप्रयात छंद—चले कूच करि कूच कर कूच ऐसे ।
कहे ग्रापने ग्राप ही ग्राप जैसे ।
गए मजल दरि मजल ऐसे सिधाए ।
तबै साह के कटक के निकट ग्राए ।१।७३९।
चले साह के साथ ही साथ मानो ।
कीए कूच केते इसी भांति जानो ।
लई घेर ग्रजमेर कर जेर धायो ।
निकट जोधपुर जाइ डंका बजायो ।२।७४०।

तबै राजपूतान ऐसे निहारो ।
परो आनि कै साह लै कटक भारो ।
लरै कै भजै कै मरै जुध कै कै ।
कीउ राज बीचार मंतरी आन लै कै ।३।७४१।

कीए मंत्र केतो रिदे एक आनो ।
कीउ काम ऐसौ भली भांत जानो ।
मिलो साह सो जीत सिंहान राजा ।
फते का तबर साह का अंत बाजा ।४।७४२।

कीओ साहबं साह अजमेर थाना ।
गए जो उदे पुर डरा अंत राना ।
तिनै साजि कै पुत्र तापै पठायो ।
मिला साह से आन आनंद पायो ।५।७४३।

जबै साह ने जीव मै मंत्र आना ।
तबै दछनं देस कीनो पिआना ।
चलै कूच दर कूच करि कूच भारे ।
लीए संग सिपाह उमराव सारे ।६।७४४।

चले साहबं साह के सात साथं ।
करे जो चलित आप ही आप नाथं ।
तबे निकटि चीतउर के आप आयो ।
जोरावरो सिंह देखं सिधायो ।७।७४५।

चडे जाइ चीतउर करि काम ऐसे ।
नफर दोइ कै तीन थे साथ तैसे ।
नफर घास को दोइ कै तीरं पठाए ।
भली भांति सौ आप डंका बजाए ।८।७४६।

भई डंक की घोर सुनि चोर दोरे ।
मिले घास लेते भई बात औरे ।
महाकोप कोपे कीए काम भारे ।
कीआ जुध केता दोऊ अंत मारे ।९।७४७।

चले क्रोध सो कोप के अंत आए ।
तिनो आनि तिह ठौर ऐसे बताए ।
तजो हाथ ते वार हथिआर सारे ।
कहै बैत भारी सु ऐसे निहारे ।१०।७४८।

लए बाण पाणं घने वार कीने ।
किते दुसट मारे तहा डारि दीने ।
बचे जे भजे जाइ तेइ पुकारे ।
चडे दुसट केते नही वार पारे ।११।७४९।

नहीं बार लागी घने दुसट आए ।
चहू ओर ते आनि कै ससत्र वाहे ।
गडी भूम ते आप बरछी उखारी ।
लई हाथ माही कीए वार भारी ।१२।७५०।

गिरी लोथ पै लोथ ऐसे पुकारे ।
कहू तार ते तोरि कै फूल डारे ।
गुहे भांति ताकी किधौ हार कीने ।
भए अंत बासी तऊ डारि दीने ।१३।७५१।

चहू ओर ते चोर करि होर दौरे ।
महां अंत आए भई बात औरे ।
तहा आन कै ससत्र पै ससत्र झारै ।
कहा कै विखानो लगे वार भारै ।१४।७५२।

लगिओ वार ऐसे वहिओ स्रोण भारी ।
भयो लाल बागा भिजी देह सारी ।
कहू रैन जागा किधो प्रेम माता ।
चडी जो खुमारी चलै डगमगाता ।१५।७५३।

फिरै झूमता झूलता ससत्र लैकै ।
घने दुसट मारे महा जुध कै कै ।
कीउ अंत साका भली भांत सूरे ।
क्रिआ काल की के भए अंत पूरे ।१६।७५४।

नही जान जाई कहा हेलु कीना ।
गिरै जूझ कै कै कहू गोन कीना ।
लरो सिंह दूजा वहै अंत धायो ।
किधो भाजि कै साहबं पास आयो ।१७।७५५।

सुनी साहबं फउज ताते पठाई ।
तहा की निसानी तहा बेग आई ।
लखी जाई कै बैन ऐसे उचारे ।
बडो सूरमा है कीए लोह भारे ।१८।७५६।

तहा तात ही काल कालं रलायो ।
मिली जोति सो जोति नहीं अंत पायो ।
कीओ खेल करतार नह जात जानी ।
कहा कै दिखाई कहा दिसट आनी ।१९।७५७।

चले जो तहा ते घने कूच कीने ।
नहीं राह आगे सुनी साह जी न ।
गए नरबदा पै मुकामं बताए ।
किते दिउस बीते तहां ते सिधाए ।२०।७५८।

गए नरबदा पारं करे कूच केते ।
रहे सिंह पीछे लडे घास लेते ।
तहा जुध कीनो घनो लोग मारे ।
भजै छोडि कै कै घास से जा पुकारे ।२१।७५९।

तबै सिंह दरबार लै घास आए ।
चडे फउज लैकै घने तुरक धाए ।
तवै भेद सिंहान ऐसो उचारो ।
लीओ घास तिह ठउर कै जुध भारो ।२२।७६०।

चली क्रोध कै फउज तिह ठउर आई ।
करैगे महा जुध ऐसे बताई ।
कही साहिबं नेक ठाढे निहारो ।
नहीं जुध की ठउर ऐसे बिचारो ।२३।७६१।

इते मै चले धाय के अंत आए।
तहा साहिबं सिंह बाणं चलाए।
लीए मारि असवार दो तीन जैसे।
रही थकत हुइ कै भली फौज ऐसे ।२४।७६२।

तबै साहिबं बैन ऐसे उचारे।
सुलहि काज को मान सिंह निहारे।
दई सीख ताको तहा ही पठायो।
तहा ते चला सिंह तह ठौर आयो ।२५।७६३।

कही बात केती नही एक जानी।
करैंगे महा जुध यौ बात मानी।
महामंद कोपै घने वार कीने।
नहीं वार कीना तऊ सिंह जीने ।२६।७६४।

बिना हुकम कैसे करो जुध भारा।
इहै जानि कै जीव नहि वार डारा।
गिरो झूम कै वार केतान लागे।
दीओ सीस आपं प्रभू पुरख आगे ।२७।७६५।

तऊ कोप दुसटान गोली चलाई।
गिरै दोइ के तीन सिंह तहाई।
इते माहि औरे घने लोग आए।
कीआ बीचि ताका तहा ते पठाए ।२८।७६६।

दोहरा—इहै होइ बीती तहा केते दिवस बिहाइ।
बुरहानंपुर जाइ कै बसे धाम मै धाइ ।२९।७६७।

इति स्री गुर सोभा जुध साहिबजादे का अर भजकूर राह का सतारवां धिआइ सपूरनं ।१७।

भुजंग प्रयात छंद—किते दिवस बीते चला साह आगे।
प्रभु कउ किते दिवस तिह ठउर लागे।

लिखा साह फरमान नहि ढील कीजै ।
हमै आन कै आपना दरस दीजै ।१।७६८।

लिखा साह का जो तिह ठउर आइआ ।
लीआ हाथ माही हीए कंठ लाया ।
पडा था तहां अंक ऐसे उचारे ।
कीआ कूच ताही समे न संभारे ।२।७६९।

नहीं फौज लीनी तहा ते सिधाए ।
कीउ कूच तपती हूं के पार आए ।
तहा सिंह आए कीए खूब सामा ।
कीए तीन कै चार ताही मुकामा ।३।७७०।

किते सिंह राखे किते साथ लीने ।
किते देस ही देस के भेज दीने ।
किते दिवस बीते तहा ते सिधाए ।
मिले साह सो साह डंका बजाए ।४।७७१।

सिरोही सवारे प्रभु दरस दीना ।
हरखवंत हुइ कै बिदा साह कीना ।
बिदा हुइ कै आपने धाम आए ।
चले साथ ही साथ ताते सिधाए ।५।७७२।

घने कूच कीने किते दिवस लाए ।
चले बानगंगान पै अंत आए ।
सुनी ठउर नादेर है नाम ताका ।
कीआ धाम ताही गुरू नाम जाका ।६।७७३।

रहा साहु तिह ठउर कीने मुकामा ।
रहे मिसल दर मिसल करि लोग धामा ।
किते दिवस बीते तिही ठउर आए ।
कथा अंत की अंत भाखो सुनाए ।७।७७४।

सुनी साख ऐसे पठान एक आयो ।
कछू घात कै कै प्रभु पास धायो ।
घरी दोइ कै तीन कै बैन मीठे ।
नही घात लागी घने लोग डीठे ।८।७७५।

बिदा होइ कै धाम को बेग धायो ।
गए दिवस दो तीन सो फेरि आयो ।
घरी तीन कै चार कै बैठ ऐसे ।
नहीं घात लागी चला अंत तैसे ।९।७७६।

इसी भांत सो दय के तान आयो ।
नहीं घात लागी नही दाव पायो ।
घनी बार आया लीउ भद सारा ।
समा सिआम का काम को यो बिचारा ।१०।७७७।

दिनं एक सिआमं समे दुसट आयो ।
सुनी साहिबं अंत तांको बुलायो ।
ठिगं जाइ बैठा कि प्रसादि दीना ।
गही मुसटि लै दुसटि मुख माहि दीना ।११।७७८।

नही सिंह कोई तहा पास औरे ।
रहे एक ही ऊघ सोई गयो रे ।
इते मै प्रभु आपि बिसराम लीना ।
गही दुसटि जमधार उखार कीना ।१२।७७९।

कीउ वार ऐसा कि दूजा लगायो ।
लगे और के आपना वार लायो ।
कीउ वार एकै नहीं और कीना ।
लीआ मारि कै दुसटि जानै न दीना ।१३।७८०।

करी आप आवाज है अंत कोई ।
चहू ओर ते आइ देखंत सोई ।
भजे ताहि साथी घने सिंह धाए ।
लीए मारि दोनों नहीं जानि पाए ।१४।७८१।

भयो सोर ग्रपार तिह ठौर ऐसे ।
प्रलै काल की घोर सुनी ग्रंत जैसे ।
भए धीर ग्राधीर नही धीर ग्रायो ।
लए काढि कै खडग नहि जात लायो ।१५।७८२।

नही ग्रापने वारि नहि कोइ डारो ।
मूग्रा है कदी का ईहा ते उतारो ।
लीग्रा ताहि उतार ऐसे बिचारा ।
प्रभू ग्रंत बागा किधौ रंग डारा ।१६।७८३।

किनी ना निहारा प्रभू घाव लागे ।
रहे झूमकै जुग्रान दीने न ग्रागे ।
तबै ग्रान सिंहान उर हाथ लाए ।
लगे घाव कारी तबै दिसट ग्राए ।१७।७८४।

कीग्रो सोक सिंहान दुइ हाथ मारे ।
कहा खल कीनो कहो करनहारे ।
तवं साहिबं बैन इह भांत कीने ।
करी मुह रछा स्री ग्रकाल जी ने ।१८।७८५।

सुने बैन ऐसे कछू धीर ग्रायो ।
तवं जाइ सिंहान साधीग्रं बुलायो ।
तहा ताहि किरीग्रान कै घाव सीना ।
उठे जो प्रभू तोरि कै ताहि दीना ।१६।७८६।

करी ग्रौर किरीग्रान रैनं बिताई ।
भए भोर तिह ठउर मलमं लगाई ।
दिनं तीन के चार ऐसे बिताए ।
दरस कै परस काज बहु सिंह ग्राए ।२०।७८७।

उनो ग्रान दर पास ग्ररदास कीनी ।
सुनी जु प्रभू कान सो मान लीनी ।
दीउ दरस दीवान कै कै ग्रपारा ।
दयावंत हुइ कै सबो को निहारा ।२१।७८८।

दोहरा—दरस दया करि कै दीउ बहुर बिदा सब कीन।
उपमा अपर अपार है नउतन कथा नवीन ।२२।७८९।

मधभार छंद—कीनो बिचार । उपमा अपार ।
नउतन नवीन । साहिब प्रवीन ।२३।७९०।

भउ भै उतार । भरमं बिदार ।
अपरं अपार । ऐसे निहार ।२४।७९१।

निह वार पार । साहिब सुमार ।
बिअंत अंत । निहतंत मंत ।२५।७९२।

सिमरंत संत । जानंत मंत ।
है अंग संग । अन भै अनंग ।२६।७९३।

सिखं अपार । करि कै बिचार ।
सबदं उचार । इको निहार ।२७।७९४।
भउ भै उतार । भरमं बिदार ।

हुइ हरख वंत । पेखिओ बिअंत ।२८।७९५।
चिंता बिसार । डिड़ जीव धार ।
मन मै अनंद । सब तोर फंद ।२९।७९६।

हुइ कै खलास । मन पूर आस ।
चरनी निवास । कीनो बिलास ।३०।७९७।

दोहरा—मन बच क्रम करि भावनी सति गुर सिउ लिव लाइ ।
सांत भई तिह ते तबै कीनो दरसन आइ ।३१।७९८।

भुजंग प्रयात—दीउ दरस ऐसे कहा के उचारो ।
बिदा होइ लीन सबी तै निहारो ।
किते दिवस बीते समै अंत आयो ।
करो बेग प्रसादि ऐसे बतायो ।३२।७९९।

कछू भोजनं खाइ कै नीर पीना।
भरोसा सबो को भली भाांत दीना।
गई अरध रातं घरी चार अउरे।
भए सबद रूपी करी बात अउरे।३३।८००।

दोहरा—टेर करी ताहि समे जागे सिंह अपार।
वाहिगुरु जी की फते कही अंत की बार।३४।८०१।
सुनि सदेस बिसमे भए अति भइआन मन रोइ।
मन की मनही मै रही पूछी बात न कोइ।३५।८०२।

सवैया—बिसमे सभ होइ रहे मन मै कछ की कछु होइ गई अब ही।
मिलि कै सब सिंहनु ताहि समै इह भांत बिचार कीउ तब ही।
ससकार करो निसही के समे निकसे नहीं भान कहिओ सब ही।
इमकारन कारज को करही मिलि जोति सो जोति गई तब ही।३६।८०३।

दोहरा—संमत सत्रा सै भए पैंसट बरख प्रमान।
कातक सुद भई पंचमी निसकारन करि जान।३७।८०४।

सवैया—कैसे करो नही जात कही कित की कित ही सर फेर धरी।
कहियो कछु और करी कछु और सु और की और ही होइ परी।
तिह नाहन अंत बिअंत सु संत इकंत जपंत अगंत हरी।
जीअ जानत है कछु की कछु ही बिधना कछु और की और करी।३८।८०५।

दोहरा—दखन को योही भई जानत सगल जहान।
कीआ चिलित्र करतार को नहि कहि सकत बखान।३९।८०६।

चौपई—एक दिवस कारन ते आगे। मिलि कै सिंह पूछने लागे।
कवन रूप आपन प्रभ कीनो। तिन कै जुवाब भाति इह दीनो।४०।८०७।
ताह समे गुर बैन सुनायो। खालस आपनो रूप बतायो।
खालस ही सो है मम कामा। वखस कीउ खालस को जामा।४१।८०८।

दोहरा—खालस मेरो रूप है हौ खालस के पासि।
आदि अंति ही होत है खालस मै प्रगास।४२।८०९।

लोटन छंद—खालस खास कहावै सोई, जाके हिरदै भरम न होई।
भरम भेख ते रहै निआरा, सो खालस सतिगुरू हमारा।
सतिगुरू हमारा अपर अपारा, सबदि बिचारा अजर जरं।
हिरदे धरि धिआनी उचरी बानी परि निरबानी अपर परं।
गति मिति आपारं बहु बिसथारं वारन पारं किआ कथनं।
तव जोति प्रगासी स्रब निवासी सरब उदासी तब सरनं।४३।८१०।

दोहरा—ओट तिहारी धरत हो जानत अवर न कोइ।
मन बच करम कर भावनी सिम्रत हौं इम तोहि ।४४।८११।

सवैया—काहू कै मात पिता सुत है अर काहू के भ्रात महा बल कारी।
काहू के मीत सखा हित साजन काहू के ग्रिह बिराजत नारी।
काहू के धाम मह निधि राजत आपस मो करि है हित भारी।
होहु दइआल दइआ करि कै प्रभ गोबिन्द जी मुहि टेक तिहारी।४५।८१२।

तेरो ही नाम जपो नित नीत बिचारि यहो सु बिलंब न कीजै।
औसर जात बिहात सदा यह मानस देह पलै पल छीजै।
देख निहारि निवार महा बिख छाडि बिकार भला कछु कीजै।
एक ही को जसु गाव सदा सत संगति सो मिलि अंम्रित पीजै।४६।८१३।

दोहरा—अंम्रित पी ले रे मना, कर संतन की सेव।
दुरलभ मानस जनमु है कर सुफल सिमरि गुरदेव।४७।८१४।

सवैया—भूलि जिन जाहु गुन गाहु करतार क आपनो सबद बीचार लहुरे।
किन भाखी तहा कउन कीनी जहां नाहि नै मूड मन तोर भहुरे।
आन कै काल बिहाल करि है कहूं ठौर अठौर निह देखि अहुरे।
टेर है संत बिअंत महमा महा नाम गोबिन्द गोबिंद कहुरे।४८।८१५।

कूर मै पूर कै झूर ऐसे रहिओ रहै जो कीर गति होत वहुरे।
भरम मै भूल कै झूल तासउ गयो उडे है आप जो छाड जहुरे।
मोहि फासी जहा जीव फस है तहा तत बीचार नहि सूझ अहुरे।
टेर है संत बेअंत महिमा महा नाम गोबिंद गोबिन्द कहुरे।४९।८१६।

लाज कै काज उपचार केते करै लाज को काज नहि एक ग्रहुरे।
जगत की काज कछु काज ग्रावै नही होत ग्राकाज नहि काज सहुरे।
लीन जासो भयो संगि लै ना गयो जौनि हित गौन करि लेत तहुरे।
टेर है संत बेग्रंत महिमा महा नाम गोबिंद गोबिंद कहुरे।५०।८१७।

चेत ग्रचेत लै चेतन कहू होत उधार कै बात वहुरे।
लोभ की लीक मै जाइ परि है कहू डूब है नीर बिन जान जहुरे।
कूप को जीव बिचार कि उहू करो निकस है नाहि नै ताति यहुरे।
टेर है संत बेग्रंत महिमा महा नाम गोबिंद गोबिंद कहुरे।५१।८१८।

जुगति कै जोग कै भावनी भोग लै भेख ग्रलेख नहि हाथ ग्रहुरे।
जाइ करबत लै हैवरे गरत जै है मीच ग्रमीच कै लेत भहुरे।
मोनि गहि जीव मै बसत्र तजि सीव मै दिसटि ग्राकास क नाहि लहुरे।
टेर है संत बेग्रंत महिमा महा नाम गोबिंद गोबिंद कहुरे।५२।८१९।

नाहि इह रीत मन मीत तोसो कहो नाम की प्रीत इह रीत गहुरे।
भरम को भेख तजि भेख ग्रलेख सजि ततु बीचार बीचार लहुरे।
छूट हो त्रास ते ग्रोट करतार की स्रनि गहु स्रनि गहु स्रनि गहुरे।
टेर है संत बेग्रंत महिमा महा नाम गोबिंद गोबिंद कहुरे।५३।८२०।

कौन है करम पै ताहि जानिउ नही तौन की गौन तजि ग्रौन जहुरे।
सूझ रे ग्रापना ग्राप ग्रापा कहु जीवनो जगत मै ग्रलप लहुरे।
जान ग्राजान पै जान जानी नही भरम मै भूल जिनि फूल रहु रे।
टेर है संत बेग्रंत महिमा महा नाम गोबिंद गोबिंद कहु रे।५४।८२१।

छाडि दै धंध ग्रौ बंध बंधन सबै होइ निरबंध इक बंध रहुरे।
ग्रौर बिकार सुख सार बीचार यौ नाम उचार करि पार पहुरे।
एक प्रभ जापना छाडि दै थापना ग्रापना ग्राप बीचार लहुरे।
टेर है संत बेग्रंत महिमा महा नाम गोबिंद गोबिंद कहु रे।५५।८२२।

कोटि उपाव बीचार केहू करों पार जिह ते परो बात ग्रहुरे।
ग्रनिक तीरथ करो जाइ कासी मरउ चडो केदार नहि पाप पहुरे।
ग्रनिक तप साध ग्रागाध जनिग्रो नही होत है ग्रौर की ग्रौर ग्रहुरे।
टेर है संत बेग्रंत महिमा महा नाम गोबिंद गोबिंद कहुरे।५६।८२३।

लगी जो लगन तौ मगन ऐसो भयो सौन आसौन नहि जान जहुरे ।
आप आपा गयौ आप आपी भयो आप बीचार जब देख अहुरे ।
जोत सो जोत मिलि एक ही रूप है एक ही एक नही और अहुरे ।
टेर है संत बेअंत महिमा महा नाम गोबिंद गोबिंद कहुरे ।५७।८२४।

सरब आनंद गोबिंद के जाप ते जपो नित नीत कै प्रीत मीता ।
सरब के तंत यहि मंत गुरदेव को एक मन जोत कै जगत जीता ।
सरब जंजार बेकार छिन मै तजो सरन गुरदेव सुनि गिआन गीता ।
भयो जैकार त्रई लोक चौदहि भवन सतिगुरू खालसा खास कीता ।५८।८२५।

बचन गुरदेव के गिआन ऐसो कीउ मुकति की जुगति ऐसे बिचारी ।
रचन करतार जो रची आकार ते जपैगी जाप सब स्रिसटि सारी ।
तत बीचार कै जीत बोली फत मार दूतन कीओ भसम छारी ।
भयो जैकार तरई लोक चौदहि भवन अचल परताप गुरू के सधारी ।५६।८२६।

इत स्री गुर सोभा जोती जोति अठारवा धिआइ समापति सुभम सत ।१८।

दोहरा—आगम अब प्रभ को कहत उपजी मोहि तरंग ।
रचना रचि जिम इम रची सो करि है इम रंग ।१।८२७।

सवैया—सब साध उबारन के हित को जग जीवन जोति जगावहिगे ।
तुरकी अस अछि सुपछि बडो तिह ऊपर आप सुहावहिगे ।
मिलि सेवल सिंह अनेक सबै करि रंग तुरंग नचावहिगे ।
भल भाग भया तुम ताहि कहो निहचै कर कीरत गावहिगे ।२।८२८।

दोहरा—अमित जोति प्रकास के दै है दरस अपार ।
सुनि मन मीत बिचारि कै सरनि ताहि चित धारि ।३।८२९।

छपै छंद—अमित तेज प्रगास अमित बल धारी प्रबल बल ।
अमित सूर सीगार अनिक सीगार कटक दल ।
चडगु साह साहान खडग गहि अमित अपारा ।
करगु दुसट दल अमित भात खलहान बिचारा ।

उमंगत नीर सुभर सरस तिह समानिरकतर चडगु।
जैकार करगु तब जग सबै बजरा सार साहिब खडगु।४।८३०।

सवैया—पिरथी पति भूपति साह सबै छबि देख महा डर पावहिगे।
तजि देस सुरेस नरेस बडे डरि कै सब ही भज जावहिगे।
चितवै मन मै कछू अउर उपाइ बिना हरि किउ गत पावहिगे।
भल भाग भया तुम ताहि कहो गड आनंद फेरि बसावहिगे।५।८३१।

दूतन मारि बिडार अपार बिथार कई करि पावहिगे।
तजि देस नरेस गए सबही कहू आपन आप लुकावहिगे।
जग जीवन जोति प्रगास कीउ तरई लोक सबै जसु गावहिगे।
भल भाग भया तुम ताहि कहो गड आनंद फेरि बसावहिगे।६।८३२।

संतन काज करी हरि लाज कीउ यह साज सुहावहिगे।
करि मै गहि तेग दरेग नही सब दूतन मारि खपावहिगे।
भजि है इह भांत कमानन ते सर यौ तिन को बिचलावहिगे।
भल भाग भया तुम ताहि कहो गडि आनंद फेर बसावहिगे।७।८३३।

आनंद सो बसि है तब भूपति एक ही नाम धिआवहिगे।
जपि खालस सासि गिरास मनै कछु दूसरु भेद न लावहिगे।
छिन मै जग के अघनास भए कहू पाप न ढूढत पावहिगे।
भल भाग भया तुम ताहि कहो गड आनंद फेर बसावहिगे।९।८३५।

भार अठारह बनास पती तिह खालस जाप जपावहिगे।
बन मै त्रिन मै पसु पंखन मै करि एक ही जोति दिखावहिगे।
परजा जप जाप अनंद करै इह जाप ही सो गति पावहिगे।
भल भाग भया तुम ताहि कहो गड आनंद फेरि बसावहिगे।१०।८३६।

धरनी धवलार अकार सबै ससि भान भले जसु गावहिगे।
सनकादिक इंद सु रिंद सबै सन तारन यौगति पावहिगे।
गण नारद तुंबर किंनर जछ सबै हरि कीरति गावहिगे।
भल भाग भया तुम ताहि कहो गड आनंद फेरि बसावहिगे।११।८३७।

सिध साधिक संत महंत सबै मन आनंद सों गुन गावहिगे।
सुन भूत प्रेत पसाच परी इह जाप जपै गति पावहिगे।
गिरही ग्रिह मै सुख आनंद सो करि मंगल साज बजावहिगे।
भल भाग भया तुम ताहि कहो गड आनंद फेरि बसावहिगे।१२।८३८।

इत स्री गुर सोभा आगमं प्रगास उनीसवा धिआइ संपूरन ।१९।

दोहरा—निमसकार गुरदेव को करि हो हित चित लाइ।
नमो नाथ नवतन नवन कीजै मोहि सहाइ ।१।८३९।

भुजंग प्रयात—नमो नाथ नाथं अचरंज सरूपे।
नमो स्रिसिटी करता अनंतं बिभूते।
नमो सरब रंगे नमो सरब नाथे ।
नमो अंग संगी नमो सरब साथे ।२।८४०।

नमो गिआन गिआता कलायं प्रकासी।
नमो धिआन धरता सदा सरब वासी।
नमो जुगत अरु मुकत तो गिआन दाता।
नमो करम करता नमो ए विधाता ।३।८४१।

तमासा अजाइब अजब खेल तेरा।
तुमी कार करता कीआ जगतु तेरा।
तुही रिध अर सिध नवनिधि करता।
तुही बुधि दाता सबै दोख हरिता।४।८४२।

महा जोति तेरी सबी मै बिराजै।
करै जो प्रभू सो कीआ तोहि छाजै।
करै जो चलित आप आपी उपाए।
लखै जंत कैसे जु तेरे बनाए ।५।८४३।

दोहरा—नाहि न अंत बिअंत प्रभ उपमा अपर अपार ।
रम रहिओ सब सिसटि मै कहत बिचारि बिचारि ।६।८४४।

सवैया—एक ही जोति जगै सब ही जग भ्राजत है सभ ही घटि माही ।
ब्रहम हू मै अरु बिसन हू मै सिव संकर मै गण ईस समाही ।
देवीअन मै नवनाथन मै सिध साधिक संत महंत कहाही ।
बिआपक है सबही के बिखै मन ताही को नामु जपै गतिपाही ।७।८४५।

दोहरा—जो जन हरि प्रभ छोडि कै करत अवर की सेव ।
सो मूरख अगिआनि है पावत रंच न भेव ।८।८४६।

सवैया—फूलन मै जिम बास बसै बसि है हरि जी इम ही घटि माही ।
दीपक मै बतीआ जिम है तिम ही जग मै जगदीसुर आही ।
भान प्रगास अकास करै निरखो जल मै तिह ही परछाही ।
गोरस मै घ्रित जान इमै प्रितमा प्रभ की सब ही घटि माही ।९।८४७।

दोहरा—है सुबास म्रिग पास ही नहि जानत अगिआन ।
गुर बिन बास न पावई ढूढत है उदिआन ।१०।८४८।

छपै—अमित जोति प्रगास बास सबके घट माही ।
सरब निरंतर आप जाप सबके मुख माही ।
सरब रूप मै रूप सील मै सीलमही है ।
सरब गिआन मै गिआन धिआन मै धिआन बही है ।
अचल रूप अनभै सदा है प्रचंड कारन करन ।
सिमरंत संत आनंत यंत नाथान नाथ संकट हरन ।११।८४९।

दोहरा—दुख बिडारन तारन तरन कारन करन मुरार ।
अंग संगि सबकै रहै दयावंत करतार ।१२।८५०।

छपै—सुख समूह दातारु अवर दूजा नही कोई ।
सदा रहै अंग संगि अंत संगी है सोई ।
अनिक मीत सो मीत नाहन सम जाके ।
अति प्रताप जगत रूप कहि सको न ताके ।
गति मित अपार साहिब सबल बसुमार सेवत चरन ।
भउ भै उतार संकट निवार नाथान नाथ तेरी सरन ।१३।८५१।

दोहरा—मोहि आसरो ताहि को ऐसो समरथ सोइ ।
सरबधार समरथ प्रभ ता बिन अवर ना कोइ ।१४।८५२।

कवित्त—कुदरत के करनहार उपमा अपार तेरी कितहू न अंत कहू ऐसो बिअंत है ।
निहचै कै गावत हैं भावत है तोही कोऊ पूरि रहिओ सब ही मै पूरन भगवंत है ।
सेवा ते मुकति होति अंतरि प्रगास जोत दुरमति सबै खोत निरमल सोमंत है ।
एक ही बतायो गुन ताको तब गायो जन जौन मै न आयो सो सिमरत एक संत हैं ।
।१५।८५३।

दोहरा—चउरासी मै परत है बिना भगत नर सोइ ।
निस दिन एक अराधीए मन की दुबिधा खोइ ।१६।८५४।

सवैया—दुबिधा कर दूर हजूर सदा तहु एक ही नाम सदा कहु रे ।
हित सो चित सो धर धिआन रिदै संत संगति ओट तहा गहु रे ।
तजि मोहनी मोह बिचार यहै लग मोहन मूरत सो रहु रे ।
यह मंत्र महा प्रभ की उपमा निहचै करि कै एहको गहु रे ।१७।८५५।

दोहरा—करि निहचै इक नाम सो अवर ना मन मै आन ।
लाग रहै धुनि प्रेम की चरन कवल सो धिआन ।१८।८५६।

सवैया—धिआन करो धरनीधर को मन मै सुबिचार अपार यही है ।
अउर नही कहू ताह बिना करता हरता सब दूख वही है ।
जोत सबै जग मै तिह की जिह की उपमा सब सिसटि कही है ।
ऐसो बिअंतन अंत कितहूं कहू सब खोजत खोजत खोज रही है ।१९।८५७।

दोहरा—खोजत कोटि अनेक जन उपमा अपर अपार ।
रच रचना जिनि सब कीए सो जानै करतार ।२०।८५८।

त्रिभंगी छंद—जानै प्रभ सोइ अवर न कोई ताहि बिना किह को कहीए ।
सभ की गति जानै सो भगवानै पुरख सो जानै सो कहीए ।
सोई गुरदाता मुकति पठात सो प्रभ जाता संत जना ।
एको सब सुआमी अंतरि जामी सिमर ताहि सुख होइ मना ।२१।८५९।

दोहरा—सुख उपजत है नाम ते सिमरनि करि मन मीत ।
तजि बिकार करतार जपि मन अंतरि धर प्रीत ।२२।८६०।

सवैया—सो कर रीत प्रभू संग प्रीत अनीत तजै दुख आवै न नेरे ।
होत प्रगास निवास सदा सुख ऐसे है नामु जपो मन मेरे ।
ताहि बिना सुख नाहि कहू समझो चित मै मन मूड सवेरे ।
एक ही नाम बिना तन धार विकार सबै कछु काजि न तेरे ।२३।८६१।

दोहरा—सब बिकार संसार मै उपजत है नित नीत ।
तिआगत है तिह संत जन करि सतिगुर सो प्रीत ।२४।८६२।

सवैया—छाडि बिकार अधार यही करि एक ही नाम सदा कहीए ।
रहीए सत संगति संग मना उपजै सुख गिआन सदा गहीए ।
ममता तजि मोह विमोह भए नर नाम की सेव तिनो लहीए ।
कहीए अब एक बिचार मना जमदूत तो त्रास कहा सहीए ।२५।८६३।

सोरठा—किउ सहीए जम त्रास जो जपीए करतार गुन ।
मुकत भए नर सोइ जिन अंतर धुनि एक है ।२६।८६४।

सवैया—पुत्र के हेत सुचेत भयो सु कहिओ नर नाम नराइण भाई ।
सो करि धिआन रिदै भगवान जपिओ हरि नाम तबै सुधि आई ।
भाजि गए जमदूत सरूप अनूप निहार तबै गुन गाई ।
ऐसे सु पतति उधारे जगत मो ए करतार तुझै बडिआई ।२७।८६५।

दोहरा—महा कुकरमी जनम को करत बहुत अपराध ।
मुकित कीउ तिह छिनक मै बडो गरीब निवाज ।२८।८६६।

सवैया—कीर सो प्रीत करी गनका मनिका तजि मान अजान भई है ।
पूरन प्रीत कोए गति है सर बुधि निवास कुसाख गई है ।
पावनि नाम पुनीत लीउ सुनि ताही को नाम की लाज भई है ।
तारी बिचारी बिचारत है सब मोख दुआरे पठाइ दई है ।२९।८६७।

दोहरा––सूग्रटा के हित प्रीत करि लीउ रैन दिन नाम ।
केतक तप करि पचि मूए नहि पावत बिसराम ।३०।८६८।

चौपई––इंद्र दौन राजा इक होता । गिग्रानी बहुत महा ग्रति स्रोता ।
ग्रगनि ग्रहार बहुत उन दीना । पुंन दान केतक बिधि कीना ।३१।८६९।
होम जगि उन कीए ग्रपारा । बैसंत्र को भयो ग्रहारा ।
धरम ग्रंग सब जगत बखानै । करनहार को भेद न जानै ।३२।८७०।
जो हरि करै करावै सोई । ताको भेद न जानै कोई ।
ऐसो ग्रगम पुरख करतारा । ताको भेद न किनहि बिचारा ।३३।८७१।

कवित्त—पुंनि के प्रताप द्रौउन देवता दुग्रारे जाइ,
ग्रागै ग्राइ धरम राइ चरन बंदना कीग्रो ।
फूल गयो मन मै महा सकति भई मोहि,
कीउ न बिचार कछू बिगसिग्रो न तउ हीग्रो ।
करते ही ग्रहंकार दर ते दीउ बिडार,
कुंजर की जौन धार पसुन न मिलाइ लीग्रो ।
ऐसो निरलेप नाम सिमर सदा ग्राठो जाम,
बिना नाम ताहि राज कजरी बन को दीग्रो ।३४।८७२।

दोहरा––इंद्र दौन राज बडो कीनो गरब ग्रहार ।
ता कारन कुंजर कीउ करन हार करतार ।३५।८७३।

कबित्त––सो बनमै इंद्रदौन करत कलोल डोल,
खेलत ग्रभोल जैसे सखा संगि है कीउ ।
करत सुभाव जाइ पैठो जल मधि धाइ,
गज गहि चरन ताहि ऐचि नीर मै लीउ ।
ता समे सुचेत चीत ग्रंतरि सो करी प्रीत,
लीनो मुख नामि ताहि छूटो रिप ते जीग्रो ।
नाम के प्रताप ग्राप ग्राप ही सहाइ भयो,
काढि ताहि नीर मै मुकति भेज कै दीग्रो ।३७।८७४।

दोहरा—मन बच क्रम कर भावनी सिमरत है नर सोइ ।
पतित उधारन नाम तिह जानत है सभ कोइ ।३८।८७५।

सवैया—तेरो ही नाम जपो निस वासुर आसरो इह तिहारो भनी है ।
जो लउ ए सास निवास करो तब लो सभ जोति तिहारी बनी है ।
हौं जु कहो सब जानत हो हरि खोटे खरे सब तोहि जनी है ।
तेरो बिचार अधार मोहीं मन मै सब को तूही एक धनी है ।३९।८७६।

दोहरा—सब को सुआमी एक है ता बिन अवर न कोइ ।
अंतिर ही बिआपक भयो सब महि पूरन सोइ ।४०।८७७।

सवैया—जग मै सब जोति तिहारी बिचारी तिहारी बिना किह की कहीए ।
जल मै थल मै बन मै घन मै घन जोति चमकंत ही चहीए ।
घट मै तट मै बट मै बनराइ मै तो बन राइ हरी रहीए ।
करता प्रभ एक अनेक कीए जिन किउ न करै करता वहीए ।४१।८७८।

दोहरा—किउ न करै करतार जउ चाहे सोइ करै ।
नर को यही बिचार रैन दिवस गुन उचरै ।४२।८७९।

सवैया—ऐसे जपो निहचे करि कै नर नाम पुनीत महा प्रभ केरा ।
प्रीत की रीत न जात कही उपजै सुख गिआन सु जाइ अंधेरा ।
जोत प्रकास निवास सदा हरि के चरनो तल होत बसेरा ।
सोच बिचार अपार करै गुर साख भरै तब होत निबेरा ।४३।८८०।

दोहरा—सो सतिगुर की साख बिन नर नहीं होत उधार ।
गुर ते फिर दर को गयो देखो सोच विचार ।४४।८८१।

सवैया—जानत है सब ही जग रीत सु प्रीत बिना कहू पार न पय्यै ।
रे मन नाम बिना गुर के हित कैसे कै जोती जोत मिलय्यै ।
जो सिमरे सोई पार परै नर ऐसे बिचार सदा गुन गय्यै ।
नाम अधार अपार कथा सुनि छाडि बिकार सु तहि गुम गय्यै ।४५।८८२।

दोहरा—तजि बिकार संसार के सरन ताहि चित आन ।
अन दिनु उचरै अनेक गुन गति मूरति के धिआन ।४६।८८३।

सवैया—पार ब्रहम अगंम सदा करता सुख को सब ठउर तुही है ।
सो सिमरे हरि संत इकंत अनंत जपंत बिअंत सोई है ।
लालच लोभ बिकारि तजै जिनके मन मै कछु सिध हुए है ।
जाप प्रताप मिटे सब ताप वहै प्रभ जाप सु एक कुई है ।४७।८८४।

दोहरा—लालच लोभ बिकार तजि होत अनेक अनंद ।
सदा निकट ही जानीए उतरै मन की चिंद ।४८।८८५।

सवैया—नाइक लाइक है सब ही सिर नाम पुनीत महा प्रभ तेरो ।
जोत प्रगास चहू दिस ताहू की ऐसे प्रचंड धनी हरि सो मेरो ।
दूतन मारि निवारत है अरु सेवक सिख तिहू संगि नेरो ।
या जन की पति राखो प्रभू सुख देहु सदा करि चेरनि चेरो ।४६।८८६।

दोहरा—दया करौ गुरदेव मुहि होइ सरब सुख चीत ।
निस दिन सिमरो नाम को रटत रहो कर प्रीत ।५०।८८७।

सवैया—या जग मै हरि नामु पुनीत करै जन प्रीत सोई सुख पावै ।
औसर जात विहात सदा गुर गिआन बिना कहू को तिपतावै ।
मया सरूप अनूप जगत मै मूरख देख तहा ललचावै ।
गोबिंद नाम बिसार गवार परो मझदार बिचार न आवै ।५१।८८८।

दोहरा—हरि को नाम बिसार कै परत मूड मझधार ।
माया मै भूलो फिरै करत नाहि बीचार ।५२।८८६।

लोटन छंद—प्रगट गुपत सगल सिर सोई । करन हारि बिनु अवर न कोई ।
ऐसो धनी अगंम हमारा । ताकी सोभा अपर अपारा ।
अपर अपारा वहु बिसथारा । वार ना पारा सो सुआमी ।
सोई सब संगी बहु बिध रंगी । सुख दाता अंतरजामी ।

करते सब सेवा मुनि जनि देवा एक न भेवा सो सहीए ।
गहीए अब चरन सरनि सतिगुर की सिवा उपमा तिह की किआ कहीए ।५३।८६०।

दोहरा—सत संगति मै पाईए करनहार को भेव ।
पूरब जनम उदोत करि तब भेटै गुरदेव ।५४।८६१।

सवैया—ऐसो बिचार करो मन मीत गिरै भरम भीत सोई बिधि कीजै ।
संतन मै सुख हेत निवास बिलास सदा तहा नाम जपीजै ।
एक ही को गुन गाव सदा सु जहा जपु जाप बिखै तजि दीजै ।
प्रेम की ठउर तहा नहीं अउर बिना गुर गोबिद कउन कहीजै ।५५।८६२।

दोहरा—अउर कउन तिह ठउर पूरि रहिओ पूरन धनी ।
करनहार प्रभ सोइ सकल सोभ ताकी गनी ।५६।८६३।

छपै छंद—बिना ताहि के नाम अवर जन कछू न जानै ।
मन अंतरि धरि प्रीत रैन दिन नामु बखानै ।
सुरत सबदि बीचार छाड सब देत बिकारा ।
यह दुनीआ दिन चार सुपन जानत संसारा ।
ऐसो प्रकास जब प्रभ कीउ दूख दरद मै भ्रम गयो ।
उचरंत नाम अन दिन सदा आदि अंत जिन जन लयो ।५७।८६४।

दोहरा—तन मन ते दुबिधा गई कीउ सु नाम प्रकास ।
छाडि दीउ जंजार सब एक नाम प्रकास ।५८।८६५।

लोटन छंद—बिना भगति नर मुकति न पावै, मरि मरि जनमै जग मै आवै ।
भोगत दूख सूख बहुतेरा, नाम बिना नहीं होत नबेरा ।
होत नबेरा नर नही तोरा, बिना भगति किउ पार परै ।
हरि का जस कीजै बिख तजि दीजै अंम्रित पीजै धिआन धरै ।
तउ जोति समावै नउ निधि पावै मनि करि धिआवै सो सेवा ।
गुरदेव बताई तउ नर पाई अपर अपार सो इह भेवा ।५९।८६६।

दोहरा—तजि परपंच बिकार सतिगुर की सेवा करो।
मिटै सु आवन जान एक नाम मन मै धरो।६०।८६७।

अडिल—निस दिन सिमरो नाम कि मूरख बावरे।
तेरो अउसर जाति बिहात चूकत किउ दाउरे।
यह दुनीया दिन चार बिचार सु कीजीए।
जी! छाडि बिकार अपार नाम जप लीजीए।६१।८६८।

दोहरा—जस प्रभ को कर रे मना खिन मै होत उधार।
भगति बिना जानत सकल चउरासी बिसतार।६२।८६६।

सवैया—जो जगि को प्रितिपालत है करता सब को वही एक समानै।
चौरन साहन पसुअन प्रानिन जीव सबै हरि एक से जानै।
ताहि जपै सुख होत मना करि देख बिचार सु होत न हानै।
एक ही को जस गाव सदा सुरता जग मै एक भांत बखानै।६३।६००।

जैसे मसतकि मै परिओ लिखिओ सु लिखने हार।
तैसो ही प्रगास है देखउ सोच बिचार।६४।६०१।

सवैया—जे सुरता जग मै प्रभ के कीए ते सुरता ओह को जसु कीनो।
क्रोध निवारि बिपारि सदा दुख एक ही नाम रिदे जप लीनो।
छाडि दए प्रपंच सबै गहि संतन सेव सुधा रस पीनो।
प्रीत भली हरि के हित की बिनसे तन ते सब काम कमीनो।६५।६०२।

सोरठा—कीए सरब सुख मान प्री भली ओह नाम की।
मिटि है आवन जान ऐसो सिमर सार है।६६।६०३।

सवैया—गाव सद मन रे प्रभ के गुन ऐसो समो फिरि हाथ न ऐहै।
ऐसे मै चेत सुचेत भय्या सुनि राम के नाम बिना पछतै है।
जा बिखिआ मै रच रुच सो सुनि सो बिखिआ तुहि काजि न एहै।
छाडि बिकार अधार कीओ इक एक ही सेव सदा सुख पैहै।६७।६०४।

दोहरा—सरब सुख उपजत मना करि सतिगुर की सेव।
सत संगत मै पाईए प्रभ पूरन गुरदेव।६८।६०५।

अडिल—प्रभ पूरन गुरदेव मिलै सत संगि मैं ।
हरि पूरि रहिओ स्रबत्र एक ही रंग मैं ।
सुनि ताको उपदेस रिदे जो आवई ।
जी ! बिन बिधना संजोग कवन जन पावई ।६६।६०६।

सोरठा—बिन बिधना सुन मीत कवन सुनै कासो कहै ।
भरमत जुग गए बीत एक दरस गुरदेव बिन ।७०।६०७।

अडिल—भरम भरम कई बार फेरि अब आइओ ।
पूरन पुन प्रताप दरस गुर पाइओ ।
बिनसै सगल कलेस भरम भव सब गइओ ।
जी ! एक ही एक अराध एको है रहिओ ।७१।६०८।

दोहरा—अंम्रित पी कर त्रिपतिओ तहा करि संतन सो प्रीत ।
दुरलभ मानस जनम है लीओ छिनक मै जीत ।७२।६०९।

सवैया—जीत लीओ जिह ऐसो जनम अगंम की जोति रिदै तिह आई ।
दूतन मारि बिचार यहै करि हो इक रंग बिखै बिसराई ।
प्रीत करी हरि के चरनो संगि नाम अधार नबै निधि पाई ।
जोति प्रकास भई चहू ओर मै ऐसी प्रभु तिह नाम बडाई ।७३।६१०।

दोहरा—घरि आइयो गुर के बचन फते भई झुनकार ।
लीला तुमरी किआ कहो उपमा अपर अपार ।७४।६११।

तेरी सोभा सरस सरूप अनूप सुहावती ।
तेरी महिमा अपर अपार संतन मन भावती ।
कहि न सकउ वीचार पारु नहीं पाईए ।
जी ! निमुख निमख गुन तोहि उचर तहि गाईए ।७५।६१२।

दोहरा––उपमा प्रभ की अनदिना करत रहो मन मीत।
अनिगिन तोसे ताहिदर गावत प्रभ के गीत।७६।६१३।

चउपई––अति अगाधि गत अपर अपारा। कहि न सकउ तुमरा बिसथारा।
अपरंपुर पूरन सुखदाई। भगति वछल सभि तोहि बडाई।७७।६१४।

मधभार छंद––मन मै बिचार। ऐसे निहार।
जैसे जुआर। कर जात झार।७८।६१५।
ऐसे निहार। कैसो मुरार।
किह अंग संग। किआ रूप रंग।७६।६१६।
कछु कीन भेख। कै है अलेख।
करि है अहार। कै निराधार।८०।६१७।
खेलंत खेल। कै है अखेल।
कीनो पसार। कै निरंकार।८१।६१८।
उपमा अपार। कीनो बिचार।
नउ तन नवीन। साहिब प्रबीन।८२।६१६।
भव भै उतार। भरमं बिदार।
अपरं अपार। ऐसो निहार।८३।६२०।
नहि वार पार। साहिब शमार।
बेअंत अंत। नह तंत मंत।८४।६२१।
सिमरंत संति। जानंत कंत।
है अंग संग। अनभै अनंग।८५।६२२।
सतगुर दिआल। भेटंत काल।
तोडंत जाल। दरसन बिसाल।८६।६२३।
सोभा अपार। संकट निबार।
गुर गुन अनंत। सिमरंत संत।८७।६२४।
एको सरूप। सुंद्र अनूप।
दिसटंत एक। लीला अनेक।८८।६२५।

बरनी न जात । आगाध गात ।
महिमा बिअंत । किआ कथहि जंत ।८९।९२६।

सिखं अपार । करि कै बिचार ।
सबदं उचार । एको निहार ।९०।९२७।

भव भै उतार । भरमं बिदार ।
हुइ हरखवंत । पेखिओ बिअंत ।९१।९२८।

चिंता बिसार । ड़िड जीव धार ।
मन मै अनंद । सब तोरि फंद ।९२।९२९।

हुइ कै खलास । मन पूरि आस ।
चरनं निवास । कीनो बिलास ।९३।९३०।

दोहरा—अति अगाध अचरज कथा तिहका कवन सुमार ।
जुग कितंक गनपत लिखहि तऊ न पावत पार ।९४।९३१।

भुजंगप्रयात छंद—मुखं चत्र ब्रहमे कथे बेद चारं ।
थकिओ अंत वहि बी सु महिमा अपारं ।
गणायं पंत कोटि होवै हजारं ।
नहीं पार पावै गतायं अपारं ।९५।९३२।

कई कोटि सारसुती अंकं बिचारं ।
कथै ताहि उपमा न पावै सुमारं ।
परे तै परे है कहा को बखानै ।
उसी का कीआ जंत किआ अंत जानै ।९६।९३३।

कई कोटि अनंत कर अंत हारे ।
नहीं कंत के अंत का वाहि पारे ।
मुखं ताहि रसना हजारं सुहावै ।
कहै नाउ नउतन नही पार पावै ।९७।९३४।

मुखं एक रसना कहा लउ बखानो।
भरे नीर सुभर लई बूंद मानो।
महा कीट पततं कहा बुधि मेरी।
जथा सकति है सोभ करतार तेरी।९८।६३५।

दोहरा—–जथा सकति उपमा कही दरस परस के काज।
जो चितवो सो देह मोहि तू समरथ तुहि लाज।९९।६३६।

इत स्री गुर सोभा सरब उसतति बीसवा धिआइ संपूरनम सत सुभमसत।२०।१।